बालसखा

विषय-सूची

कहानी

कविता

लेख

जीवन-चरित्र

फुटकर

सम्पादक { श्रीनाथसिंह
अनन्तप्रसाद विद्यार्थी

वर्ष २८] फ़रवरी १९४४—फागुन २००० [संख्या २

नहीं पास क्यों मेरे आते?

लेखक, श्रीयुत जयन्त

चढ़ जाती हैं जब पेड़ों पर,
सूरज की किरणें चमकीली;
आने लगती रात अँधेली,
ओस-बूँद से गीली-गीली।
चिड़ियाँ उड़ना छोड़, लौटकर
अपने कोटर को आ जातीं;
चीं-चीं करते बच्चे को हैं
अपने पङ्खों बीच छिपातीं।
खिल जाता है चाँद उसी क्षण,
तारे टिम टिम करने लगते;
देखा करता हूँ मैं उनको
कितने हैं वे अच्छे लगते।
तभी जहाँ भी मैं जाता हूँ,
तारे मेरे सँग-सँग जाते;
घेर-घेर चन्दा को चुपके-
चुपके उससे करते बातें।
क्यों मेरे वे सँग-सँग रहते,
समझ नहीं यह मुझको आता;
नहीं पास क्यों मेरे आते,
जब मैं इनको पास बुलाता।

———

कुत्ते भूँकते और पूँछ हिलाते क्यों हैं?

लेखक, श्रीयुत आनन्दविहारी पाठक

आज से बहुत पहले कुत्ते पालतू जानवर नहीं थे। ये भी जङ्गली जानवरों में से थे। इनकी सूरत भी भेड़ियों से मिलती-जुलती है। आज भी दुनिया के कुछ जङ्गली स्थानों में ये भेड़ियों के साथ रहकर ख़ूँख़ार जङ्गली जानवर के रूप में पाये जाते हैं और वहाँ ये भेड़ियों के साथ-साथ ही रहकर शिकार की टोह में चक्कर लगाया करते हैं। ये दल बनाकर घूमते हैं और दल का अगुआ ही इनका सरदार होता है। इन्हीं कुत्तों को मनुष्यों ने पाला और धीरे-धीरे पालतू जानवर के रूप में बना लिया।

शिकार की टोह में

उस समय की बात है जब ये पालतू जानवर नहीं बनाये गये थे। ये ख़ूँख़ार जानवरों की तरह ही झुण्ड बाँधकर शिकार की टोह में घूमते थे और शिकार करके ही अपना बसर करते थे। अन्य जानवरों को—जैसे गाय, हिरन, भेड़, बकरी इत्यादि—जहाँ देख लेते तो फिर उनकी ख़ैर नहीं रहती। भूँक-भूँककर अपने अन्य साथियों को सूचना देने लग जाते। आवाज़ की सूचना पाकर अन्य कुत्ते—चाहे वे कहीं भी क्यों न हों—उस ओर दौड़कर शिकार पर टूट पड़ते थे।

आप पूछेंगे कि जङ्गलों में—जहाँ लम्बी-लम्बी घासें भरी रहती थीं—इन्हें कैसे पता मिलता था कि उनका शिकार किस ओर है। कुत्तों में घ्राण-शक्ति बड़ी तेज़ होती है। ये ज़मीन को सूँघ-कर ही अपने इष्ट स्थान का पता सहज में पा ला सकते हैं। इसी लिए यदि किसी कुत्ते की आँखों में पट्टी बाँधकर दूर स्थान को छोड़ दिया जाता है तो वह फिर अपने स्थान पर शीघ्र ही आ धमकता है। अतः भूँकना ही कुत्तों की बातचीत का असली रूप था। आज भी कुछ भाव प्रकट करने
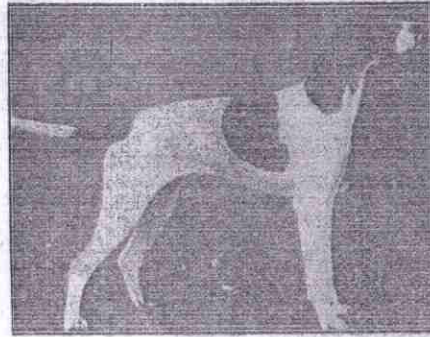
एक अच्छी जाति का कुत्ता

के लिए ही ये भूँकते हैं और एक के भूँकने प सभी कुत्ते भूँकने लग जाते हैं।

कभी-कभी कुत्ते शिकार की टोह में गुप्त रू से ही निकला करते थे। उस समय बोलना य भूँकना ठीक नहीं होता था। ऐसी दशा में भूँक से या तो शिकार के निकल जाने की आशङ्क रहती थी अथवा ख़तरा उठाने या असफल हो की। कभी-कभी इस मौक़े पर शिकार की टोह ऐसा भी होता कि दल के तेज़ दौड़नेवाले कु बहुत आगे निकल जाते और कुछ एकदम पीछे छूट जाते थे। उनकी घ्राण-शक्ति भी कभी-कभ घासों से भरे जङ्गलों में काम नहीं करती थी ऐसी हालत में पिछड़ जानेवाला कुत्ता सिर्फ़ इधर उधर देखकर ही अपने साथी का पता पाने

…या करता कि उसके अन्य साथी लोग किस ओर हैं। पर जङ्गल की लम्बी घासों में आसानी से दूर निकल गये हुए साथी का पता सिर्फ़ इधर उधर देखकर ही पा लेना कठिन-सा होता था। अतः उन्होंने एक तरकीब सोच निकाली। इन मौक़ों पर जब भूँकना ठीक नहीं होता था वे अपनी पूँछों को ऊपर की ओर उठाये रख-कर हिलाते रहते थे। ऐसा करने से एक दूसरे से दूर रहने पर भी अपने साथी का पता आसानी से देखकर पा जाते थे और भूँकना भी नहीं होता था। पूँछ ऊपर की ओर उठाकर हिलाते रहना ही एक दूसरे की जानकारी के लिए अच्छा उपाय था। आज भी शिकारी कुत्ते शिकार के समय अथवा यों भी अपनी पूँछ सदा ऊपर की ओर उठाये ही रखते हैं। अतः इनका पूँछ उठाये रखना भी भेद-भरा था।

इस कुत्ते की गर्दन और पूँछ के बाल कैसे बड़े-बड़े हैं

कुत्ते शिकार पाकर उसकी प्रसन्नता प्रकट करने के लिए अपनी पूँछ हिलाने का उपक्रम करते थे और आफ़त के समय अपनी पूँछ को पिछले दोनों पैरों के बीच डालकर छिपा लिया करते थे। हमें आज भी कुत्तों में ये स्वाभाविक आदतें देखने को मिलती हैं। ये ख़ुश होने पर पूँछ हिलाते, किसी बात को ज़ाहिर करने के लिए भूँकते तथा डर जाने पर पूँछ पैरों के बीच छिपा लेते हैं। इस प्रकार कुत्तों की ख़ास-ख़ास आदतों पर हम लोग विचार करें तो उनके कारणों का पता हम पा सकते हैं।

सच्चे प्रेम की परीक्षा

लेखक, श्रीयुत मथुराप्रसाद श्रीवास्तव

गड़बड़झाला नाम का एक राज्य था। वहाँ का राजा लालबहादुर था। वह अपनी प्रजा को पुत्र के समान मानता था। जब वह बूढ़ा हो चला तो उसने अपने मन में विचार किया कि मैं अब बूढ़ा हो चला हूँ अतः राज-पाट छोड़कर भगवान् का नाम जपने के लिए जङ्गल में चला जाऊँ। उस राजा के तीन राजकुमार थे। तीनों राजकुमार बड़े चतुर और योग्य थे। एक दिन राजा ने अपने तीनों राजकुमारों को अपने पास बुलाया और पूछा—तुम लोग मुझे कितना प्यार करते हो?

सबसे बड़ा राजकुमार बोला—मुझे जितना प्यारे आप हैं उतनी प्यारी दूसरी वस्तु इस संसार में नहीं है।

दूसरे राजकुमार ने कहा—मुझे जितना प्रेम आपसे है उसको मैं शब्दों में नहीं बतला सकता। परीक्षा होने पर ही उसका अन्दाज़ा भली भाँति हो सकता है।

तीसरे राजकुमार ने उत्तर दिया—"मैं बहुत कुछ नहीं कहना चाहता, इस कारण केवल इतना ही कहूँगा कि मेरे हृदय में भी आपके लिए प्रेम है।" राजकुमारों की बातों को सुनकर राजा ने सोचा कि किसी प्रकार से इन सभी राजकुमारों की परीक्षा होनी चाहिए। कुछ समय बाद उसने एक बड़ी सभा की और कहा कि मैं अकेले ही तीर्थ करने जाना चाहता हूँ। यदि मैं एक वर्ष के अन्दर न लौट आऊँ तो सब लोग यह निश्चय कर लें कि मैं मर गया। तब मेरे राजकुमार राज-काज का भार उठावें। राजा जब तीर्थ-यात्रा को चला गया तो राज-काज को राजकुमारों ने बड़ी योग्यता से सँभाला। जब राजा एक वर्ष के अन्दर तीर्थयात्रा से लौटकर वापस न आया तो सब लोग बड़े दुखी हुए। राज्य में चारों तरफ़ बड़ा कुहराम मच गया। दो-चार दिनों तक कुछ आशा बँधी रही कि शायद राजा आ ही जावे पर जब राजा न आया तो स[ब] निराश हो गये। सबसे बड़ा राजकुमार रात-दि[न] रोने-पीटने में ही रहने लगा। लोगों ने बहुतेरा सम[झ]ाया किन्तु उसने राज-काज की ओर तनिक [भी] ध्यान न दिया। दूसरे ने भी कुछ दिनों तक शो[क] प्रकट किया, परन्तु थोड़े ही दिनों बाद उसका ध्या[न] शिकार खेलने की ओर अधिक रहने लगा औ[र] वह अपना दुःख भूल गया। इन दोनों के सि[वा] तीसरे ने भी शोक किया किन्तु कुछ दिनों के बा[द] जब उसने देखा कि सबसे बड़ा भाई दिन-रा[त] शोक में ही घुला जा रहा है और दूसरा भी राज की ओर ध्यान नहीं देता, बराबर शिकार के पी[छे] ही दीवाना रहता है तो उसने राज-कार्यों की ओ[र] ध्यान दिया। राज्य की सारी गड़बड़ियों को ठी[क] किया और बड़ी चतुराई और सावधानी के सा[थ] राज्य का काम करने लगा। कई वर्षों के ब[ाद] बूढ़ा राजा एक फ़क़ीर का रूप धारण करके आ[या] और महल के फाटक के पास खड़ा हो गया। उसके बाल बहुत बढ़ गये थे, नाख़ून भी न कटे [थे]। वह नङ्गे पाँव गेरुआ कपड़े पहने, हाथ में कमण्ड[ल] लिये हुए था। उसकी दशा ऐसी बदली हुई थी [कि] पुराने नौकर-चाकर भी न पहचान सके। थो[ड़ी] देर बाद राजमहल से सबसे बड़ा राजकुमार निकल[ा]। वह शोक में रो-पीट रहा था। उसको देख[कर] फ़क़ीर ने उसका हाल पूछा—उसने अपना और अ[पने] दोनों भाइयों का सारा हाल कह सुनाया [और] फकीर से पूछा कि क्या करें? फ़क़ीर ने उ[त्तर] दिया कि यदि तुम मुझे अपने भाई के राजसिं[हा]सन के पास ले चलो तो मैं कुछ राय दे सकता [हूँ]।

[व]ापस का समय था। सबसे छोटा राजकुमार राजा [ब]ना हुआ सिंहासन पर बैठा राज का काम कर [र]हा था। फ़क़ीर को लेकर सबसे बड़ा राजकुमार सिंहासन के पास पहुँचा। सब लोग सम्मान के लिए खड़े हो गये परन्तु किसी ने भी बूढ़े बादशाह को न पहचाना। फिर फ़क़ीर ने लोगों को सम्बोधन [करके] कहा—"मैं तुम्हारा राजा हूँ जिसको कि आज तुम लोग फ़क़ीर के भेस में देख रहे हो। मेरे भेस के कारण ही तुम लोगों में से किसी ने मुझे नहीं पहचाना, किन्तु मेरी बोली से तुमने अवश्य मुझे पहचान लिया होगा। मैंने तुम लोगों से कहा था कि मैं एक वर्ष के अन्दर वापस न आ जाऊँ तो तुम लोग मुझे मर गया समझना। मैं मरा नहीं बल्कि जान-बूझकर एक वर्ष के अन्दर नहीं आया और आज कई वर्षों के बाद आया हूँ। कारण यह है कि मैं अपने राजकुमारों के प्रेम की परीक्षा करना चाहता था। मेरे प्रति सबसे अधिक प्रेम सबसे छोटे राजकुमार को है, जिसने मेरे बाद राज्य को भली भाँति सँभाला है और जिस कार्य से मैं स्नेह रखता था उसी के साथ इसने भी स्नेह किया, इसलिए मेरे प्रति सच्चा प्रेम इसी के हृदय में है। मैं इससे बहुत प्रसन्न हुआ हूँ और जिन्होंने रोने-पीटने को मेरे लिए सच्चा प्रेम समझा है वे वास्तव में मेरे ऊपर प्रेम नहीं रखते। ऐसा कहकर बूढ़ा बादशाह चल खड़ा हुआ।

वसन्त

लेखिका, कुमारी प्रमीला श्रीवास्तव

बीत गया दुखदायी जाड़ा,
आया सुन्दर काल वसन्त।
ठण्डी हवा नहीं अब बहती,
हुआ शीत का है अब अन्त।

खिले फूल हैं पीले-पीले,
हरे खेत फैले भू पर।
चम्पा जुही गुलाब खिल रहे,
भौंरे गूँज रहे जिन पर।

सुबह टहलने हम जाते हैं,
तब है सुख मिलता।
नहीं धूप अच्छी लगती है,
नहीं शीत से तन हिलता।

पेड़ों पर निकली नव कोंपल,
बाग़ हरे हैं दिखलाते।
चिड़ियाँ चहक रही हैं उन पर
लख यह सब हम सुख पाते।

क्यों

लेखक, श्रीयुत लालाराम जायसवाल

मेरी बगिया के फूलों पर
तितली खेल मचाती हैं;
पर जब मैं हूँ उन्हें बुलाता
पास नहीं वे आती हैं।

फूल-फूल पर बैठा करतीं
पेड़-पेड़ पर जाती हैं,
किन्तु पकड़ने जब मैं जाता,
तुरत दूर उड़ जाती हैं।

क्यों मुझसे वे इतना डरतीं
उन्हें न क्या मैं करता प्यार,
यदि मिल जायें एक बार वे
कर लूँ जी भर उनको प्यार।

लाकर उनके आगे रख दूँ
रङ्ग - बिरङ्गे ताज़े फूल,
नहीं भटकना उन्हें पड़ेगा
पेड़-पेड़ पर जाकर भूल।

आटे की भुजिया

लेखिका, कुमारी भारती जोशी

बकबक नगर में एक लाला रहते थे। कञ्जूस एक नम्बर के थे। लालाजी से अगर कोई कुछ माँगता तो कुछ न कुछ बहाना कर देते। दूकान पर जाते और जो कुछ मिलता उसमें से दो आने अपनी बीबी को और दो आने ख़ुद लेकर खाने का सामान ले आते। उनकी बीबी उनके और अपने लिए भोजन बना देती और लाला बाक़ी पैसे अपनी तिजोरी में रख देते। एक दिन की बात है कि लाला साहब की बीबी बीमार हो गई। लालाजी ने पैसे बचाने के लिए दवा न की। दवा न पिलाने से आख़िर वह मर गई। लालाजी मन में बड़े ख़ुश हुए, क्योंकि एक आदमी का ख़र्च कम हो गया था, लेकिन अगर वे बाहर अपनी ख़ुशी प्रकट करते तो दूसरे लोग उनकी हँसी उड़ाते, इसलिए अपने दिखाने के लिए रञ्ज पैदा किया पर मन में ख़ुश थे।

एक दिन लाला ने सोचा कि बीबी तो मर ही गई, एक जने का ख़रचा भी कई दिन से कम हो गया है, इसलिए आज आटे की भुजिया बनाई जाय। यह सोच लाला ने गेहूँ निकाले और चक्की में पीसने लगे। जब सब गेहूँ पिस गये तो आपने आटा अच्छी तरह घोल लिया और फिर नमक मसाला डालकर चूल्हा जलाया, कड़ाही चढ़ाई और तेल डाला। अब लालाजी भुजिया बनाने लगे। जब लालाजी ने अन्तिम भुजिया डाली तो मन में सोचने लगे कि हाथ में जितना आटा लगा है वह निकल नहीं सकता। इसलिए यही ठीक है कि अपना हाथ ही इसमें डाल देना चाहिए। इससे जितना भी आटा हाथ में लगा है वह पककर हाथ में ही लगा रह जायगा फिर खा लेंगे। यह सोच लालाजी ने अपना हाथ कड़ाही में डाल दिया। हाथ जलने लगा तो आपने घबड़ाकर झटके से हाथ बाहर निकाला और तेल के छींटे सारे बदन में आ लगे जिससे सारे बदन में फफोले पड़ गये। लालाजी कूदते-हाँफते डाक्टर के पास पहुँचे और दवा लगवाई। कुछ ही दिन में सारा बदन अच्छा हो गया। तब से लाला ने कञ्जूसी करना छोड़ दी।

वसन्त

लेखक, श्रीयुत रामखिलावन त्रिपाठी 'रुक्म'

देखो, फिर वसन्त ऋतु आई।
वन, उपवन, बाग़ों में छाई॥
फूल खिले सुन्दर चमकीले।
नीले-पीले रङ्ग रँगीले।
शोभा हैं ये अजब दिखाते।
हमें साफ़ रहना सिखलाते॥
फूल खिले हैं क्यारी-क्यारी।
हरी हो गई धरती सारी॥
शीत नहीं अब हमें सताती;
आग नहीं अब हमको भाती॥
धीमी हवा लगी अब बहने;
जाड़ा गया, लगी क्यों कहने।
है वसन्त का साज निराला;
ऋतु का यह सिरताज निराला॥

इमरसन

लेखक, श्रीयुत गौरीशङ्कर कुरारिया

राल्फ़ वाल्डो इमरसन का जीवन बालकों और नवयुवकों के लिए आदर्श है। उसकी प्रतिभा ने सारे संसार को आश्चर्य में डाल दिया है।

इमरसन का जन्म २५ मई, सन् १८०३ को अमेरिका के बोस्टन शहर में हुआ था। उसके पिता ईसाई पादरी थे। इमरसन के बचपन में ही, जब कि वह केवल आठ वर्ष का था, पिता का स्वर्गवास हो गया। माता ने बड़ी मेहनत से कुटुम्ब का पालन किया और बच्चों को पढ़ाया-लिखाया। बड़ी मेहनत के साथ इमरसन ने बोस्टन और हारवर्ड में शिक्षा प्राप्त की। पहले उसका उद्देश्य अपने पिता के समान पादरी होने का था, पर अन्त में उसे अपना इरादा बदलना पड़ा। उसने लेखक होने का निश्चय किया और लेखों द्वारा अपने विचार जनता के सामने प्रकट किये। चूँकि वह प्रकृति का उपासक और होनहार कवि था, उसने बोस्टन के निकट कन्कोर्ड नामक गाँव में अपना घर बनाया और मरने तक वहीं रहा। वहाँ उसने खेती के लिए कुछ ज़मीन भी मोल ली।

वह प्रकृति की शोभा पर मुग्ध हो जाया करता था; प्रकृति ही मानों उसकी शिक्षा देनेवाली थी। वह अपने पड़ोसियों से मिलता-जुलता; उनकी कठिनाइयों और समस्याओं में दिलचस्पी रखता और किसानों के साथ मनोविनोद भी करता। गाँव के बालक तक उसे प्यार करते और वह उन्हें प्यार करता। सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक सुधारों के लिए वह लेख और कवितायें भी लिखता पर ऐसे ढङ्ग से कि हर एक पर उनका असर पड़ता था।

धीरे-धीरे इमरसन का नाम फैलता गया। अच्छे से अच्छे कवि और विद्वान् कन्कोर्ड आते और उसके साथ से लाभ उठाते। सरलता, सादगी और सत्यता के व्यवहार से हर एक उसकी ओर खिंच जाता और जीवन भर इमरसन का प्रेमी बन जाता। अभिमान उसे छू तक नहीं गया था।

दोपहर के पहले का समय वह पढ़ने में बिताया करता था और बाद में अकेले या किसी के साथ खेत, जङ्गल और नदी के किनारे जाकर घूमता, कभी हरी घास पर लेटता। प्रकृति की लीलाओं और परिवर्तनों को देखता। ठण्ड के ३-४ महीने वह व्याख्यान देता और शेष दिन अध्ययन, चिन्तन और लेख लिखने में लगाता।

इमरसन के विचार भावपूर्ण और गम्भीर होते इस कारण पहले जनता को सहज ही में समझ में न आये। धीरे-धीरे जनता ने उनका मूल्य समझा और अपनाया।

इमरसन अमेरिकन साहित्य में नये युग का चलानेवाला माना जाता है। उसने साहित्य को पुरानी रूढ़ियों से दूर कर आज़ाद कर दिया है और नये रास्ते पर बढ़ना सिखलाया है। कई लेखकों और कवियों ने उसके आदेशों को मानकर

नई रचनाओं को जन्म दिया है, जो कि पहिले पुरानी लकीर के फ़क़ीर बने रहना ही अच्छा समझते थे। इमरसन ने समझाया कि "यह बन्धन है। इन बन्धनों को तोड़ना चाहिए। नक़ल करने का अर्थ है कमज़ोरी। हमें बालक बने रहने में ही सन्तोष न करना चाहिए। ख़ुद अपनी आँखों से देखो और जो देखो वह लिखो। ख़ुद सोचो और जो सोचा है, वही लिखो।" ऐसी बातें इमरसन की रचनाओं में जहाँ-तहाँ मिलेंगी।

"हर एक में व्यक्तित्व होता है—एक स्वाभाविक प्रतिभा होती है जो अवसर पाकर चमकती है। उसका आदर करना हर एक आदमी का कर्त्तव्य है। हर एक व्यक्ति एक विशेष कार्य के लिए जन्म लेता है। इमरसन की सभी रचनाओं में आपको उत्साहपूर्ण आदेश मिलेंगे।

इमरसन की मृत्यु सन् १८८२ में कन्कोर्ड गाँव में ७९ वर्ष की उम्र में हुई। पर उसका आदर्श चरित्र आज भी सारे संसार के लिए उदाहरण है बालको! उसके चरित्र से प्रभावित हो लाखों अपने जीवन को सुन्दर और सफल बनाया और बना रहे हैं। तुम्हें भी इमरसन के विचारों का अध्ययन—उसकी लिखी पुस्तकें पढ़कर करना चाहिए और इस तरह अपनी मौलिक और स्वतन्त्र विचारों को बढ़ाना चाहिए।

गुड़ियों का गीत

लेखक, श्रीयुत निरङ्कारदेव सेवक, एम० ए०

हम गुड़ियों का देश निराला।
हम गुड़ियों का वेष निराला॥
नीले-पीले लाल गुलाबी।
हरे बसन्ती औ' उन्नाबी॥
पहन-पहनकर वस्त्र रँगीले।
सादा कभी, कभी चटकीले॥
हम सबके मन को हरती हैं।
खेल नये निशि-दिन करती हैं॥
हमें देख यदि पाती मुन्नी।
दौड़ी-दौड़ी आती मुन्नी॥
कैसी ख़ुश हो जाती मुन्नी।
फूली नहीं समाती मुन्नी॥
हमको गले लगाती मुन्नी।
हिलराती दुलराती मुन्नी॥
गोदी में ले हमें घूमती।
कभी हमारे गाल चूमती॥
पढ़ना-लिखना बिसराती है।
[illegible]

हमें सुलाकर सोने जाती।
सपनों में भी नहीं भुलाती॥
कभी हमारा ब्याह रचाती।
हमें नवेली बहू बनाती॥
घूँघट में रहना सिखलाती।
सजधज से बारातें लाती॥
मधुर-मधुर पकवान खिलाकर।
देती है बारात बिदा कर॥
छा जाता घर में सूनापन।
नहीं किसी का भी लगता मन॥
कैसे खेल खिलाती मुन्नी।
कैसे स्वाँग रचाती मुन्नी॥
कैसी अच्छी मुन्नी प्यारी।
हम सब हैं इस पर बलिहारी॥
हम मुन्नी की सखी सहेली।
[illegible]

गुड्डा

लेखक, श्रीयुत राय ज्योतिषचन्द्रप्रसाद वर्मा

स्नेहलता अभी सोकर ही उठी थी कि माया [illegible]और रवि पहुँच गये। अम्माँ ओसारे पर बैठी हुई [illegible] धो रही थीं, इसलिए स्नेह ने इशारे से उन्हें [illegible]आगे चलने को कह दिया। गुड्डा लेकर चुपके-से [illegible] स्वयं भी जब बाहर जाने को हुई कि अम्माँ [illegible] उसे देख लिया। वे बेतरह झुँझला उठीं—"[illegible]काकाजी, गुड्डा नहीं लाये, आफ़त ले आये। [illegible] तो उनकी लाड़ली पढ़ने में पहले से ही ख़ूब [illegible] लगाती थी और अब तो हो गई है पूरी [illegible]दास। सुबह से शाम तक बस गुड्डे से खेल—[illegible] खाने की सुधि न पीने की। अभी सोकर उठी [illegible], कि फिर खेलने की धुन सवार हो गई।"

स्नेह अम्माँ की बातों से डरकर काकाजी के [illegible] खिसक आई। "क्या करोगी भाभी, मेरी [illegible] अभी बच्ची है न। बचपन में तो सभी ऐसा [illegible] करते हैं।" कहते हुए स्नेह को गोद में लेकर [illegible] बाहर बैठक में चले गये। माया, कुमार, [illegible], प्रेम सब के सब पिछवाड़े में पाकर के पेड़ के [illegible] स्नेह की बाट जोह रहे थे। उसके आते ही [illegible] आरम्भ हो गया।

माया खाना बनाने के लिए मिट्टी सानने [illegible]

से अपने गुड्डे को सजाने लगी। रवि बाग़ीचे से फूल लाने चला गया।

माया मिट्टी सानती हुई बोली—"मालकिन, देखो तो आटा ठीक से सन गया न।"

स्नेह ने तिनककर जवाब दिया—"नहीं, अभी नहीं हुआ, ठीक से सानो। काम करने में मन नहीं लगता, केवल बैठी रहती हो।"

प्रेम बैठा हुआ गप लड़ा रहा था। स्नेह चट से बोल उठी—"क्यों जी, केवल तुम गप ही लड़ाओगे या काम भी करोगे? हमें ऐसा नौकर नहीं चाहिए। इस तरह काम करने में मुँह चुराने से विदेश में काम कैसे चलेगा। कितनी देरी हो गई और अभी तक तुमने मालिक को स्नान भी नहीं कराया। जाओ, पहले लल्ला (गुड्डे) को बुला लाओ। देखो तो, कहाँ बैठा हुआ खेल रहा है।"

प्रेम धूप में से गुड्डे को उठा लाया—"मालकिन देखो लल्ला धूप में खेल रहा था, कहीं कुछ हो जाता तब?"

स्नेह का ग़ुस्सा बढ़ गया। उसने पकवान बनाना छोड़कर गुड्डे को तड़ातड़ दो-चार तमाचे रसीद कर दिये। धूप में रहने के कारण गुड्डा तप

"इसी से न मैं बराबर मना करती रहती हूँ कि धूप में मत जा। पर यह तो मेरी बात मानता ही नहीं, तो मैं क्या करूँ?" फिर आजिज़ आकर अम्माँ की सीखी हुई बोली में अपने माथे को ठोंकती हुई बोली—"हे भगवान्, मैं क्या करूँ? मैं तो इस पाजी से तङ्ग आ गई हूँ। पढ़ना-लिखना छोड़कर बराबर धूप में ही खेलता रहता है।"

गुड्डे को घूरती हुई फिर प्रेम से बोली—"प्रेम, डाक्टर साहब कहाँ हैं? जाओ बुला लाओ।"

रवि डाक्टर और कुमार कम्पाउंडर बनकर आ धमके। रवि ने अपनी पेंसिल को झाड़कर गुड्डे की काँख में लगा दिया। फिर कुछ देर तक अपनी कमीज़ की बाँही को ऊपर उठाकर खाली कलाई देखता रहा, जैसे घड़ी से टाइम देख रहा हो। फिर उस पेंसिलवाले थर्मामीटर को देखते हुए डाक्टर साहब की सुनी हुई बोली में बोला—"बुखार अभी बढ़ रहा है, इस समय एक सौ एक है। इसे मलेरिया हो गया है। मालूम होता है यह धूप में खेल रहा था। ऐसे लड़कों को तो बेंत से पीटना चाहिए और घर से निकालकर बाग़ीचे में फेंक देना चाहिए कि भूत उठाकर ले जायँ।"

फिर चिन्तित होकर तागे का बना हुआ डाक्टरी यन्त्र लगाया। छाती और नाड़ी की धड़कन को गिना। फिर गम्भीर स्वर में बोला—"घबड़ाने की बात नहीं, हम इसको अच्छा कर देगा। ऐ कम्पाउंडर साहब, इसको चार ख़ुराक मलेरिया-मिक्सचर तो पिला देना।"

फिर ईंट और पत्थर के टुकड़ों के रुपयों से डाक्टर साहब की फ़ीस चुका दी गई। वे बड़ी प्रसन्नता से रुपयों को जेबों में रखकर, ईश्वर को आज की आमदनी के लिए धन्यवाद देते हुए चले गये।

इसी समय काकाजी आकर स्नेह को बुला

में गुड्डे को सूटकेस में रखकर काकाजी के स खेत की ओर घूमने चली गई।

आज पाठशाला में स्नेह का मन नहीं लग रह-रहकर वह छुट्टी होने की राह देख रही मन ही मन आज के लिए सुन्दर-सुन्दर प्रोग्राम बना रही थी! गुड्डे की शादी होगी, वह वर माँ बनेगी, रवि और माया वधू की, फिर अच्छा खेल होगा। और न जाने क्या-क्या गुनगुना रही थी।

छुट्टी होते ही स्नेह गुड्डे को सजाने की धुन घर दौड़ पड़ी। स्लेट-पेंसिल को फेंक, स्टूल पर कर, जब नित की नाईं वह आलमारी से गुड्डा नि लने गई तो देखा गुड्डा वहाँ नहीं है। हृदय धक करने लगा। आलमारी में से गुड्डा क्या हो गय वह कुछ सोच नहीं सकी। तीन-चार बार फि आलमारी देख डाला, घर का कोना-कोना डाला, कूड़े के ढेर को भी नहीं छोड़ा, पर कहीं मिला नहीं। स्नेह ग़ुस्से से दाँत पीसने ल आज गुड्डे की जान की ख़ैरियत नहीं, मिलेगा वह उसे ख़ूब पीटेगी। न मिलने पर अम्माँ से आई, काकाजी के कमरे की भी खाना-तलाशी ली; पर सब व्यर्थ! हारकर वह रोने लगी, ज़ोरों से कि अम्माँ आजिज़ हो गईं। का समझाने लगे, खो ही गया तो क्या होगा, गुड्डा उससे भी अच्छा शहर से ख़रीदकर दिया जायगा। और जब इतना सब कहने पर स्नेह चुप नहीं हुई तो अम्माँ को क्रोध आ ग ऊपर से दो चार तमाचे भी लगे, "पगली कहीं वह खो ही गया तो क्या, उसके पीछे अब ही दे देगी?"

स्नेह सिसकती हुई कुमार, प्रेम आदि से गई। रवि वहाँ नहीं था। उसने माया से पूछ

...तो मैंने बाग़ीचे में जाते देखा है।" स्नेह ...में शङ्का के बादल उठे। शायद उसी ने ...गुड्डा चुरा लिया है। उसी ने तो एक रोज़ ...था कि गुड्डा दे दो, नहीं तो चुरा लूँगा। ...उसके सिवा दूसरे का देखा ही कहाँ हुआ है ...गुड्डा कहाँ रक्खा रहता है। उसे विश्वास हो ...कि रवि ने ही उसके गुड्डे को चुराकर ...में कहीं छिपा दिया है। क्रोध से उसकी ...लाल हो गईं।

रवि को देखते ही क्रोधित स्वर में पूछ उठी—...गुड्डा कहाँ छिपा आये हो लाला? ला दो, ...तो अच्छी बात नहीं होगी।"

रवि स्नेह से ऐसे स्वर में बात सुनने का ...नहीं था। "मैं?" वह हक्का-बक्का-सा स्नेह ...मुँह देखने लगा। "हाँ, हाँ, तुम" स्नेह ग़ुस्सा ...नीली-पीली होती हुई बोली—"ला दो, नहीं तो ...रखती हूँ। ख़बरदार, चोर कहीं का।"

"मैं क़सम...."

"सो सब कहने से काम नहीं चलेगा। चलो, ...चाची से मार खिलवाती हूँ तो पता लगेगा।" ...उसे खींचकर चाची के पास ले गई। रवि ...कहा नहीं, उसकी आँखों से आँसू ढुलक पड़े।

और जब चाची की मार से रवि चीखने-...लगा, तो स्नेहलता को भी दुःख होने ...कि उसने यह अच्छा काम नहीं किया।

...पिछवाड़े में शाम को खेलना बन्द रहा, कोई ...नहीं आया और रवि भी स्नेह से मुँह ...अलग बैठा रहा।

दीपक जल जाने के बाद अम्माँ ने धुले हुए ...को रखने के लिए जब सूटकेस खोला कि ...के एक कोने से वह हँसता हुआ छोटा-सा ...निकल आया। स्नेह के ताज्जुब का तो

आ गई जब वह सूटकेस को खुले देखकर, गुड्डे को आलमारी में रखने के बदले सूटकेस में ही रखकर, काकाजी के साथ खेत की ओर घूमने गई थी और आकर थोड़ी देर के बाद खा-पीकर फिर पाठशाला चली गई थी।

स्नेह को रवि का निर्दोष चेहरा याद आ गया। पछतावे की ज्वाला में वह जल उठी।

रवि दरवाज़े पर बैठा हुआ था, स्नेह को देखते ही डर से सहमकर खड़ा हो गया।

"गुड्डा मुझसे ही खो गया था लाला, मैंने बेकार तुम्हारा नाम लगा दिया" और उसकी आँखों से आँसू ढुलक पड़े—"अब मेरे साथ नहीं खेलोगे न? अच्छा, मत खेलना, मैं बड़ी बुरी हूँ।"

"धत्त, इसी लिए तुम रोती हो दीदी! मैंने कब कहा है कि तेरे साथ नहीं खेलूँगा।" रवि स्नेह का आँसू पोंछते हुए बोला—"चुप रहो, नहीं तो मुझे भी रुलाई आने लगेगी।"

और रोकने पर भी रवि की आँखों में आँसू आ ही गये। स्नेह ने आँचल से उसके आँसुओं को पोंछ दिया—"लो, अब तुम्हीं इस पाजी से खेलना।" उसने रवि के हाथ में अपना गुड्डा रख दिया।

"और तुम?" रवि आश्चर्य से पूछ उठा।

"मैंने दूसरा गुड्डा पा लिया है।"

"कहाँ?"

"यह" स्नेह ने रवि को गोद में उठा लिया। फिर मुसकाती हुई बोली—"जानते नहीं हो क्या; गुड्डे से तो केवल बच्चे ही खेलते हैं न! अम्माँ कहती हैं मैं तो अब बहुत बड़ी हो गई हूँ।"

सुबह में फिर माया और रवि गुड्डा लेकर आ पहुँचे। स्नेह ने खिड़की से देखा और सब बच्चे भी पेड़ के नीचे ठण्ड से थरथराते हुए उसी की राह देख रहे थे। खेलने का लोभ वह रोक न सकी

घमण्डी बन्दर

लेखक, श्रीयुत 'शरद्'

एक दिन एक बन्दर उछलता-कूदता एक धोबी के यहाँ पहुँचा। धोबी ने एक साहब का कोट-पतलून साफ़ कर धूप में सूखने को डाल रक्खा था। बन्दर ने कोट-पतलून देखा तो उसका मन कोट-पतलून पहनकर साहब बनने के लिए मचल उठा। उस समय धोबी वहाँ नहीं था। अच्छा मौक़ा पाकर बन्दर कोट-पतलून लेकर जङ्गल में भाग गया। जङ्गल में जाकर उसने कोट-पतलून पहन लिया और साहब बन गया।

बड़ी शान के साथ वह एक पेड़ के नीचे घूम रहा था कि बाघ ने उसे देखा। बाघ ने सोचा—
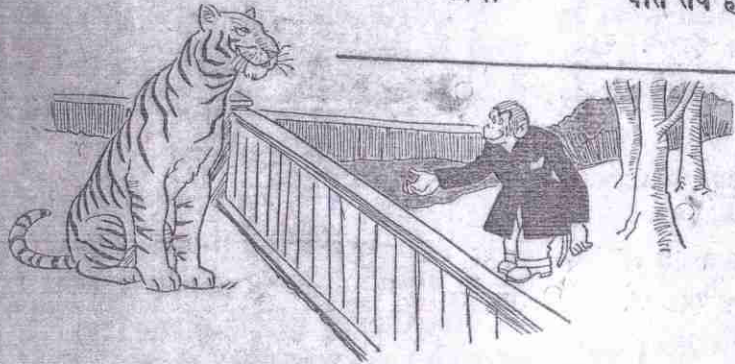
बाघ ने बन्दर को झूला ख़रीद लेने को कहा।

यह बन्दर कोट-पतलून पहने घूम रहा है। इसका तो यही मतलब है कि बन्दर अब साहब हो गया है। यह सोच बाघ ने बन्दर के सामने जा झुक-कर सलाम किया। घमण्डी बन्दर ने शान से कहा—"भाई बाघ, मैं चाहता हूँ कि दोपहर को सोने के लिए मुझे कोई ऐसी खाट या झूला दो कि नींद .खूब आवे।"

बाघ ने बड़ी दीनता से कहा—"सरकार! हमारे पास एक झूला है जिसे हम बेचना चाहते हैं। उस झूले पर आप अच्छी तरह सो सकेंगे।"

बाघ ने कहा—"आजकल हम गाना-बजाना सीख रहे हैं।"

बन्दर ने .खुश होकर कहा—"तब तो बड़ा अच्छा है। जब हम सोया करेंगे तो तुम अपनी गानेवालों की, मण्डली लाकर गाना सुनाया करना। इससे मुझे नींद जल्दी आ जाया करेगी।"

बाघ ने कहा—"साहब, हमारे पास गाने-वालों की कोई मण्डली तो है नहीं, हाँ, ज[…] कभी कहीं गाना-बजाना होने लगता है तो ह[…] भी बैठकर सुनते हैं और सीखते हैं।"

बात तय हो गई। बाघ को बन्दर ने झू[…] का दाम भी दे दिया। दोपह[…] को जब सोने का समय आ[…] तो बाघ ने झूला लाकर […] पेड़ की डालों से बाँध[…] लटका दिया। सोने के स[…] बन्दर आया तो झूला देख[…] .खुशी से फूल उठा। वह झूला पर इतने ज़ोर से कूदा […] दोनों पेड़ की डालियाँ, जि[…] यह झूला बँधा था, झुक गईं। बन्दर को […]
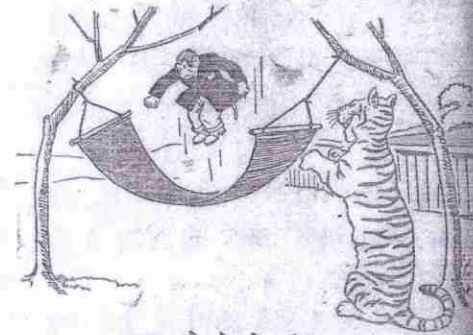
बन्दर बड़े ज़ोर से झूले पर कूदा

बहुत बुरा लगा। उसे .गुस्सा चढ़ आया।

[…]ड़ा ख़राब है। .गुस्से में आ उसने अपना [...]पया भी फेर लिया। बाघ बहुत गिड़गिड़ाया [...] कहीं जाकर वह घमण्डी बन्दर माना।

इतने में बन्दर ने देखा—दो ऊँची गर्दन के [स]ारस चले आ रहे हैं। बन्दर ने इन्हें बुलाया [...] एक सारस बोला—"हम लोग बहुत भूखे हैं।" [ब]न्दर ने कहा—"तुम दोनों अपनी लम्बी गरदन [...] यदि हमारा झूला बाँधकर हमें झुलाओ तो [...] तुम्हारे खाने का प्रबन्ध कर देंगे।"

इस पर दोनों सारस राज़ी हो गये।
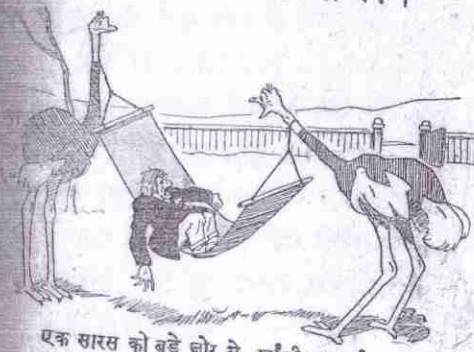
एक सारस को बड़े ज़ोर से खाँसी आ गई

दोपहर को जब बन्दर झूले पर शान से लेट[ा] तो सारसों ने अपनी गरदन हिला-हिलाकर झूले को धीरे-धीरे झुलाना शुरू किया। बन्दर को बहुत अच्छा लग रहा था। उसे नींद आ गई।

तभी उन दो सारसों में से एक को खाँसी आ गई। खाँसी आने से गर्दन हिली और झूला भी हिला जिससे बन्दर की नींद खुल गई। घमण्डी बन्दर को बहुत .गुस्सा आया। उससे यह सहा नहीं गया और उसने दोनों सारसों को डाँटकर भगा दिया।

घमण्ड में उसने सारसों को भगा तो दिया पर यह न सोचा कि उनके चले जाने पर झूला कैसे खड़ा रहेगा। पर घमण्ड के कारण तो उसका दिमाग़ ठीक था ही नहीं। सारस चले गये। जब बन्दर का .गुस्सा उतरा तो उसने झूला टाँगने की कोशिश की, पर अब वह कैसे टँग सकता था। बेचारा बन्दर परेशान होकर रह गया। दौड़-धूप में उसे अपने कपड़ों की सुध न रही। कपड़ा उतारकर उसने एक ओर रख दिया। बाघ ने जो उसको इस तरह देखा तो अपना झूला भी उठा ले गया और बेचारा बन्दर हर ओर से हाथ धोकर पछताता बैठा रहा।

जागो

लेखक, श्रीयुत आशाकान्त बी० आचार्य

जागो जागो भैया मेरे,
उषा थाल ले आई;
आसमान पर लाली छाई,
कलियाँ भी मुस्काईं।
चली जा रहीं चिड़ियाँ देखो
'चींचीं' गीत सुनाती,—

हुआ भोर अब तुम भी जागो।
तुम्हें नींद क्यों आती?
उठो चलो अब लगो काम में
आलस अपना त्यागो।
भारत-माँ के प्यारे बच्चो!
भोर हुआ अब जागो।

सोने की बाल्टी

लेखक, श्रीयुत जगतनारायणप्रसाद

रामू एक ग़रीब किसान का बेटा था। जब उसकी उम्र दो ही साल की थी, तभी उसके पिता का देहान्त हो गया। उसकी माँ पड़ोस के एक महाजन के यहाँ नौकरी करके अपना तथा अपने बच्चे का पेट पालती थी।

रामू जब पाँच बरस का हुआ तो माँ ने उसे पढ़ने के लिए भेजना चाहा। पर धनाभाव के कारण वह उसे न पढ़ा सकी। लेकिन इस बात से उसके दिल में बड़ी ठेस लगी।

रामू जब दस बरस का हो गया तो पास-पड़ोस के लोगों के जानवर चराकर अपना पेट पालने लगा। दूसरे लड़कों को पढ़ता देख उसे बड़ा रञ्ज होता था। वह सोचता कि अगर किसी तरह मैं भी पढ़ जाऊँ, तो क्या ही अच्छा हो। वह सारे दिन जानवर चराता और शाम को कुछ न कुछ पढ़ता। धीरे-धीरे उसने हिन्दी की सारी वर्ण-माला सीख ली।

अब किताबों के बग़ैर आगे का कार्य कैसे चले? यह सोच उसने एक महीने की आधी कमाई तो खाने-पीने के सामान जुटाने में ख़र्च की और आधी कमाई से पढ़ने की कुछ किताबें ख़रीद लीं। पर मास्टर के बिना कैसे पढ़े। वह किताबें लिये हुए जानवरों को चराता और जो अक्षर पहिचानता था उन्हें किताबों में ढूँढ़ा करता था।

एक दिन दोपहर को बड़े ज़ोर की लू चल रही थी। ज़मीन तवे की तरह जल रही थी। रामू एक पेड़ की छाया में बैठा हुआ किताब के पन्ने उलट-पुलट रहा था कि एकाएक उसे रोने की आवाज़ सुनाई पड़ी। वह उस ओर दौड़ा। पास जाकर देखता क्या है कि एक बुढ़िया है, जिससे चला नहीं जा रहा है फिर भी वह आगे बढ़ने की कोशिश कर रही है। रामू के सामने वह दो ही क़दम चली थी कि एकाएक गिर पड़ी। यह देख रामू को दया आई और उठाकर पेड़ की छाया में ले गया।

बुढ़िया का गला सूख रहा था। उसने रामू से पानी माँगा पर रामू का लोटा एक दोस्त लेकर कहीं चला गया था। पहले तो रामू ने आवाज़ लगाई, पर जब उसका पता न लगा तो बड़ा परेशान हुआ। वह सोचने लगा कि पानी किस तरह लाया जाय। उसे ऐसा मालूम हुआ कि अगर पानी लाने में देर हुई तो बुढ़िया मर जावेगी।

कुछ सोचने के बाद उसने पत्तों का एक दोना बनाया और अपनी धोती से एक कोने में उसे बाँधा। फिर वह उसे लेकर कुवें में उतर गया। दोने में पानी भरकर धोती को मुँह से पकड़ लिया और धीरे-धीरे ऊपर आ गया। बुढ़िया के पास जाकर उसके मुँह में ज्योंही पानी डाला कि वह एक सुन्दर परी के रूप में बदल गई। उसे देख रामू डरा। रामू को डरता देख परी ने कहा—"मैं तुम पर बहुत ख़ुश हूँ, डरो नहीं।" इसके बाद परी ने अपना हाथ ज्योंही ऊपर उठाया कि एकाएक एक बाल्टी आ गई जो देखने में सोने की मालूम होती थी।

परी ने बाल्टी रामू की ओर बढ़ाते हुए कहा कि इसे लो, सँभालकर रखना और जिस समय तुम्हें किसी चीज़ की ज़रूरत पड़े उसी समय इस पर कपड़ा डाल ज्योंही मेरा स्मरण करोगे कि उसी वक्त यह तुम्हारी मंशा पूरी करेगी। इतना कहकर परी ग़ायब हो गई।

बाल्टी पाकर रामू बहुत ख़ुश हुआ और घर जा अपनी माँ से सारा हाल कह सुनाया। माँ ने बेटे को गले लगाया और कहा—"एक दूसरे की मदद करना हमारा धर्म है।"

अब रामू ने बाल्टी आज़माना चाहा। उसने परी के बताये हुए ढंग से पहले तो अपने पढ़ने की किताबें माँगीं। मुँह से कहना ही था कि पढ़ने का सारा सामान आ गया। इसी तरह से उसे ज़रूरत के सभी सामान मिलने लगे।

उसने जानवर चराना छोड़ दिया और पास के स्कूल में मन लगाकर पढ़ने लगा।

कुछ दिनों बाद रामू काफ़ी पढ़ गया और अपनी ज़िन्दगी के दिन ख़ुशी से बिताने लगा।

वसन्त

[१]

लेखक, श्रीयुत बलवीरसेन खन्ना

देखो वसन्त ऋतु आई है,
हरियाली सँग में लाई है।
हर डाल-डाल, हर पात-पात,
खेतों में शोभा छाई है॥
सुरभित समीर अब चलता है,
फूलों के मन को छलता है।
आकाश हुआ अति निर्मल है,
गुड़ियों का अब उड़ता दल है।
सर्दी ने पूँछ दिखाई है,
गर्मी ने ली अँगड़ाई है।
पशु-पक्षी ख़ुश हो झूम रहे,
कोयल ने कूक लगाई है॥
सरसों ने पलकें खोली हैं,
पेड़ों पर चिड़ियाँ बोली हैं।
भौंरे भी तितली को पुकार,
चल दिये बनाकर टोली हैं॥
जल-थल में छाया है वसन्त,
ऋतुओं का राजा है वसन्त।
सब कोई सुख में डूब रहे,
मानों दुःखों का हुआ अन्त॥

[२]

लेखिका, कुमारी कुसुमकुमारी माथुर

अब आई वसन्त-बहार।
कूक रही कोयल मतवाली,
झूम रही है डाली-डाली।
उपवन की है छटा निराली,
फूले नहीं समाते माली॥

फूल उठी अब केसर-क्यारी,
करती स्वागत हो बलिहारी।
फूलों की है रङ्गत न्यारी,
झूम रही केसर मतवारी॥

पीले कपड़े सभी रँगाते,
आज सभी हैं ख़ुशी मनाते।
बच्चे मिलकर गाना गाते,
फूलों के हैं हार बनाते॥

जग में छाई ख़ुशी अपार,
पहनें सब गेंदों के हार।
ऋतुओं का आया सरदार,
अब आई वसन्त-बहार॥

लालची राजा

लेखक, श्रीयुत प्रेमकुमार कपूर

एक नगर में एक सौदागर रहता था। उसकी एक लड़की थी। वह उस लड़की को बहुत प्यार से रखता था। एक दिन सौदागर राजा के यहाँ गया और अपनी लड़की की बहुत बड़ाई करने लगा। उसने कहा कि मेरी लड़की इतनी होशियार है कि वह घास को सोना बना देती है।

राजा लालची था। उसने सौदागर से कहा कि कहाँ है तेरी लड़की, तू उसको बुलाकर लो।

सौदागर अपनी लड़की को लेकर राजा के पास गया। राजा ने एक कोठली में घास भरवा दी और लड़की से कहा कि अगर तूने यह घास सुबह तक सोना बनाकर नहीं दी तो मैं तुझे मरवा डालूँगा।

ऐसा कहकर राजा तो चल दिया पर लड़की बड़े सोच में पड़ गई। थोड़ी देर बाद एक बौना आया। बौने ने लड़की से पूछा—"क्यों, तुम उदास क्यों बैठी हो?"

लड़की ने अपना सब हाल बता दिया। बौने ने कहा—"अगर मैं इस सब घास को सोना बना दूँ तो तुम मुझे क्या दोगी?"

लड़की ने कहा—"मैं तुम्हें अपनी सोने की अँगूठी दे दूँगी।"

बौने ने घास को सोना बना दिया और अँगूठी लेकर ग़ायब हो गया।

सुबह राजा घास को सोना देखकर बहुत ख़ुश हुआ। उसने फिर एक कोठा पत्तों से भर दिया, लड़की अब की बार बहुत घबराई। फि
रात को बौना आया। बौने ने लड़की से पूछा
अब मुझको क्या दोगी। लड़की बोली—"अ
मेरे पास तो कुछ नहीं है। जो था वह दे चुकी
बौने ने कहा—"जो तुम्हारा पहला लड़का होग
वह मुझे दे देना।" लड़की ने हाँ कह दिया
बौने ने सारे पत्तों को सोना बना दिया। सुब
राजा आया। सोने का ढेर देखकर वह बहु
ख़ुश हुआ। उसने सौदागर से कहा कि
तुम्हारी लड़की से विवाह करना चाहता हूँ।

सौदागर तुरन्त राज़ी हो गया। वह भ
क्यों इन्कार करता। दूसरे रोज़ धूम-धाम के सा
लड़की की शादी हुई।

कुछ दिनों के बाद रानी को एक सुन्
लड़का हुआ। राजा ने ब्राह्मणों को खा
खिलाया। राजा ने अपना धन ख़ूब लुटाय
सौदागर को भी बहुत हर्ष हुआ।

कुछ दिनों के बाद बौना आया। बौने
रानी से लड़का माँगा। रानी लड़के को न
सकी और रोने लगी। रोने की आवाज़ रा
को सुनाई पड़ी तो राजा अपनी सभा का
छोड़कर तुरन्त आया। राजा ने रानी से पूछा
"तुम क्यों रोती हो?" रानी ने अपना सब ह
बता दिया।

राजा ने बौने को ख़ूब धन देकर उसे वि
किया। राजा-रानी सुख से रहने लगे।

पूसी की माला

लेखक, श्रीयुत अशोक

घूम रही थी घर में पूसी,
खाने का कुछ डौल लगाती,
किन्तु जहाँ भी वह जाती थी,
ख़ाली हाथ लौट थी आती।
पहुँची तभी एक कमरे में,
दिये घड़े कुछ वहाँ दिखाई,
होंगा उनमें कुछ खाने को,
सोच यही वह झटपट धाई।

वहाँ पहुँचकर एक घड़े में,
उसने फ़ौरन गरदन डाली;
भाग्य किन्तु उसका खोटा था,
वह बर्तन था बिलकुल ख़ाली।
खड़-खड़ सुनकर मलकिन दौड़ी,
फ़ौरन डण्डा एक जमाया,
फूटा घड़ा, किन्तु पूसी की
गरदन में उसका मुँह आया।

बर्तन का मुँह पहने पूसी,
बेचारी पहुँची जङ्गल में,
उसे देखकर एक लोमड़ी
ने झट सोचा अपने मन में।
बिल्ली की यह सुन्दर माला,
किसी तरह यदि मैं पा जाऊँ,
तो सारे जङ्गल के पशुओं
पर मैं अपना रोब जमाऊँ।

बोली वह पूसी से ऐसे,
भली बहुत यह लगती माला;
मैं भी लेना मोल चाहती,
ऐसी ही सुन्दर इक माला।
हँसकर पूसी बोली उससे,
ख़ाली बर्तन में मुँह डालो,
सर पर डण्डा पड़ते ही बस,
ऐसी माला तुम भी पा लो।

लेखक, श्रीयुत बाफ़ना भँवरलाल जैन, विशारद
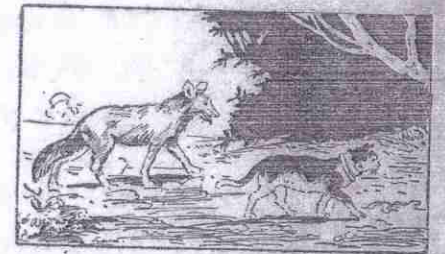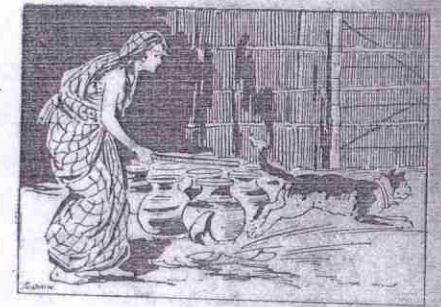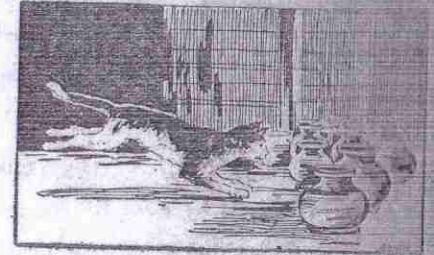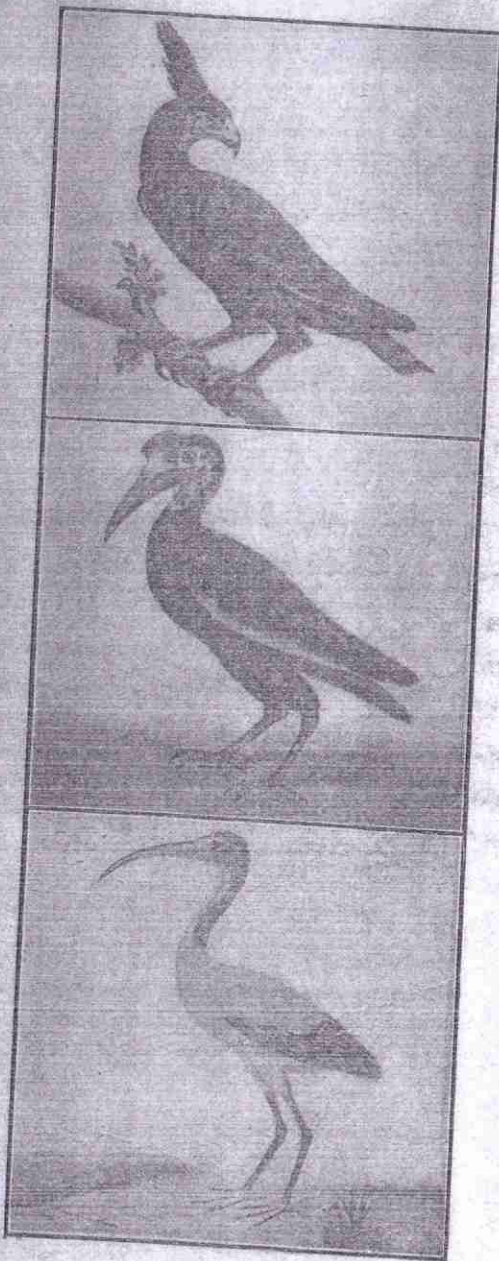
हर एक आदमी यह जानता है कि चिड़ि[illegible] किस तरह की जीव हैं, कहाँ रहती हैं, किस [illegible] अपना पेट पालती हैं, पर ऐसे मनुष्य कुछ ही [illegible] जिन्होंने तरह-तरह की चिड़ियाँ पाली हों और [illegible] जानने की कोशिश की हो कि वे किस प्रकार [illegible] अण्डों को सेती हैं, बच्चों को किस तरह उड़ना, फिर [illegible] चलना और भोजन करना सिखाती हैं। इस [illegible] की जानकारी हम पालतू चिड़ियों से नहीं [illegible] सकते। हाँ, घोंसलों में रहनेवाली चिड़ियों स[illegible] बात की जानकारी अवश्य प्राप्त की जा सकती है।

जिस तरह आदमी अपने घरों में रात [illegible] जाने पर अपने बच्चों के साथ सो जाते हैं, [illegible] तरह चिड़ियाँ भी अपने बच्चों के साथ घोंसलों [illegible] सोती हैं। कुछ रात हो जाने पर बस्ती में शा[illegible] छा जाती है। ठीक इसी प्रकार इनके घोंसलों [illegible] भी होता है। आदमी चोर के डर से पहरे[illegible] रखता है, पर इन पक्षियों में कोई पहरेदार [illegible] होता। हाँ, चोर अवश्य होते हैं। इन उड़नेव[illegible] चोरों में एक तो उल्लू है, दूसरा चमगाद[illegible] इनकी कड़कड़ाती आवाज़ को सुनकर चिड़ियों [illegible] बच्चे सिकुड़ जाते हैं और सूरज निकलने के [illegible] तक उसी तरह पड़े रहते हैं।

सूरज निकलने पर चिड़ियाँ अँगड़ाई [illegible] हुई पंख फटफटाती हैं। इनके घरों में इकट्ठा कि[illegible] हुआ भोजन नहीं रहता, इसलिए ये अपने भो[illegible] की तलाश में चली जाती हैं। चिड़ियों के भो[illegible] को देखते हुए हम उन्हें दो भागों में बाँट सकते [illegible] एक तो वे चिड़ियाँ जिनकी चोंचें कठोर नहीं ह[illegible] वे छोटे-मोटे कीड़े-मकोड़े खाकर अपना पेट भरती [illegible] दूसरी वे हैं जिनकी चोंचें सख़्त होती हैं; वे अ[illegible] और [illegible] भी कड़ी-कड़ी चीज़ें खा सकती हैं।

[illegible] चिड़ियाँ खाना लेकर घोंसलों [illegible] आती हैं, उनके बच्चे चीं-चीं करने लग जाते हैं [illegible] उन्हें खिलाती हैं। प्रायः सभी [illegible] से अधिक बच्चे होते हैं। वे उन [illegible] बारी-बारी से खिलाती हैं। यह कभी नहीं [illegible] कि एक बच्चा भूखा रह जाय और दूसरा [illegible] खा जाय। वे याद रखती हैं कि पहले [illegible] खिलाया है और अब किसे खिलाना है। [illegible] यह पहचानने की बड़ी शक्ति रहती है। अबा-[illegible] चिड़िया है जो जाड़े में ठंडे देशों से [illegible] आती है और गर्मी में फिर उसी देश में [illegible] मौसम में रहने के लिए आ जाती है।

[illegible], सारिका और लवा बड़े तड़के उठने-[illegible] चिड़ियाँ हैं। सारिका सबसे जल्दी उठती [illegible] और खाने की खोज में निकल जाती है। यह [illegible] तरह के कीड़े मारकर लाती है। सारे दिन [illegible] यही करते बीतता है। यह चिड़िया एक [illegible] में तीन सौ बार अपने बच्चों के लिए कुछ न [illegible] लाती है। यह अपने बच्चों की रक्षा के लिए [illegible] सचेत रहती है। यही कारण है कि जब कभी [illegible] शिकार फँसाने में देर लग जाती है तब बिना खाना लिये ही लौट आती है। यह अपने बच्चों को हद से ज़्यादा खाना देती है। पर जब कभी यह भोजन लेकर घोंसले में आती है तो इसके बच्चे चीं-चीं करने लग जाते हैं जैसे कि बहुत ही भूखे हों।

जब चिड़ियों के बच्चे बहुत छोटे होते हैं तब उनके माता-पिता हज़म किया हुआ खाना या उसी से निकला हुआ एक प्रकार का दूध पिलाते हैं। कबूतर अपने खाने से एक प्रकार का दूध बनाते हैं और जब बच्चों को दूध पिलाना होता है तो अपना मुँह खोल देते हैं और बच्चे अपनी चोंच भीतर कर देते हैं। ऐसा करने पर कबूतर मुँह से दूध उगलते हैं और बच्चे पीने लग जाते हैं। जब बच्चे कुछ और बड़े हो जाते हैं तब कबूतर उन्हें आधा हज़म हुआ भोजन खिलाते हैं।

कीड़े खानेवाली चिड़ियाँ पेड़ों के साथ बहुत उपकार करती हैं। पिद्दी एक बार में छः या सात बच्चे देती है। नर और मादा खेतों से इनके लिए ऐसे कीड़े लाती हैं जो खेती के लिए हानिकारक होती हैं। ये एक दिन में क़रीब ८०० कीड़े लाती हैं। इस तरह ये पेड़ और पत्तियों को बहुत लाभ पहुँचाती हैं।

याद

लेखिका, कुमारी शारदा गर्ग

यह प्यारा-प्यारा मुखड़ा,
क्यों उसकी याद सताती?
वे प्यारी-प्यारी आँखें
क्यों हैं सन्देश सुनातीं?

मैं कहती बिज्जू 'आ जा',
झट मुसका भग जाता था;
मैं कहती मुनुआ 'आ जा',
घुटनों के बल आता था।

जब भूख उसे लगती थी,
बीबी को अपनी सूरत
रो-रोकर दिखलाता था,
अपनी रोनी-सी सूरत।

सबको लगता था प्यारा,
छीना क्यों विधि ने उसको?
अब उसकी याद रुलाया
करती रहती हम सबको।

टर्रखट्टू

लेखक, श्रीयुत गङ्गाप्रसाद जैन, एम० ए०

एक रोज़ बोली यों नानी, आओ बच्चो, सुनो कहानी।
जङ्गल में इक नाला बहता, उसमें था टर्रखट्टू रहता।
उछल-कूद बढ़-बढ़कर करता, गाल फुलाकर हर-हर करता।
टर्रखट्टू हुशियार न कम था, गुरु होने का भरता दम था।
इक दिन उसके जी में आया, देखे दुनिया यह मन भाया।
पर उसके थे जितने स्याने, कैसे उसको देते जाने?
उसको हर दम घेरे रहते, जल बाहर नहिं रहने कहते।
टर्रखट्टू ने पर यह ठानी, आज करेगा वह मनमानी।
छिपकर निकल पड़ा वह चुपके, चला मगर वह दुबके-दुबके।
झपटा इतने में इक कागा, उसे चोंच में धर ले भागा।
टर्रखट्टू अति ही घबराया, सारा भेद समझ में आया।
ग़लती उसने अपनी माना, किन्तु व्यर्थ था अब पछताना।
देख पेड़ की सुन्दर छाया, कौआ उड़कर नीचे आया।
पहिले टर्रखट्टू को पटका, फिर ख़ुद उतरा, देकर झटका।
बोला अब तुमको खाता हूँ, दम भर में निगले जाता हूँ।
टर्रखट्टू मन में घबराया, मरने का भय दिल में लाया।
टर्रखट्टू ने हँस मुँह खोला, औ' कौए से झट यों बोला।
सुन रे कौए, सुन रे कौए, अभी बुलाता हूँ मैं हौए।
तू ख़ुराक है उनकी कौए, मुझे चाहते हैं वे हौए।
तब तो कौआ भी घबराया, तुरत चोंच में उसे उठाया।
उसे लिये आकर वह ठहरा, जहाँ गढ़ा था अतिशय गहरा।
रख गड्ढे में बोला कौआ, यहाँ न आ सकता है हौआ।
किन्तु न उसने हिम्मत हारी, हँस करके किलकारी मारी।
बोला झटपट सुन रे कौआ, अब तुझको मारेगा नौआ।
लिये उस्तरा आता होगा, या उसको पैनाता होगा।
नहीं चाहता जो तू मरना, उड़ जल्दी, जल्दी उड़ वरना।
उसके आते तू न बचेगा, पछतायेगा, हाथ मलेगा।
कौआ भी था बड़ा सयाना, उठा चोंच में हुआ रवाना।
उड़ा सोचता मन में कौआ, कौन बला यह हौआ-नौआ।
टर्रखट्टू ने इक किलकारी, ख़ूब अकड़कर फिर से मारी।
कौआ बोला क्यों हँसता है, टर्र टर्र तू क्यों करता है?
खोला ज्यों मुख उसने अपना, मार्ग लिया टर्रख ने अपना।
नाला इक बहता था नीचे, गिरा उसी में आँखें मींचे।

बेचारा बनिया

लेखक, श्रीयुत श्यामनारायण वर्मा

एक गाँव में एक बनिया रहता था। वह [illegible] फेरी करके चीज़ें बेचा करता था। एक दिन वह अपनी गठरी लिये हुए एक जङ्गल से गुज़र रहा था। उस जङ्गल में एक बिगड़ा हुआ [illegible] ऊँट आकर रहने लगा था। जो कोई भी [illegible] में होकर निकलता था, ऊँट उसका पीछा करता और लपककर अपने मुँह से उसका [illegible] पकड़कर लटका लेता था। इस प्रकार न जाने कितने आदमियों के सर वह, कटोरदान के [illegible] की तरह, धड़ से अलग कर उन्हें मौत के घाट [illegible] चुका था।

आज बहुत दिनों बाद उसे यह बनिया [illegible]ई पड़ा। बनिया अपने पीछे 'बल-बल' करते [illegible] बिना नकेल के ऊँट को दौड़ते हुए आते देख [illegible]राया और अपनी जान लेकर भागना शुरू [illegible]। भला ऊँट की लम्बी टाँगों की दौड़ में [illegible] ऊँट से कब बच सकता था। बनिया अपने [illegible]ने का कोई उपाय न देखकर एक कच्चे, फूटे [illegible] में कूद पड़ा और छिपकर दीवार के सहारे [illegible] रहा। मगर ऊँट तो उसकी जान लेने के [illegible] मानों क़सम ही खा चुका था, उसी कुयें के [illegible]नारे बैठकर अपनी गरदन नीचे डाली। ऊँट [illegible]र-बार कोशिश करता कि उसकी खोपड़ी पकड़-[illegible] लोटे-डोर की तरह बाहर खींच ले। लेकिन [illegible] बार उसके होठ और बनिये के सिर के बीच [illegible] ही इंचों का अन्तर रह जाता।

बेचारा बनिया दबका हुआ बैठा था। इतने [illegible] उसने देखा कि एक काला, पुराना साँप उसके [illegible]पने के एक बिल से निकला। दोनों तरफ़ मौत देखकर वह डरा पर पत्थर की मूर्ति की भाँति वह टस से मस न हो सका।

साँप रेंगता हुआ बनिये के घुटने और कन्धे पर से चढ़कर उसके सिर पर बैठ गया। फिर ज्योंही ऊँट ने गरदन लपकाई, साँप ने ऊँट के मुँह में काट लिया। फिर उतरकर अपने बिल में घुस गया।

कुछ ही मिनट बाद बनिये ने देखा कि ऊँट की निर्जीव गरदन कुँए के अन्दर लटकी ही रह गई। बनिया ऊँट की गरदन का सहारा लेकर ऊपर आ गया और अपने घर की राह ली।

कुछ ही दिन बाद उस गाँव में एक सँपेरा आया। उसकी उस बनिये से भेंट हो गई।

सँपेरे ने बनिये से कहा— लालाजी, कहीं आपने कोई साँप देखा हो तो बताइए। मैं उसे पकड़ूँगा, फिर आप मेरा हुनर देखिए।

बनिया—हाँ-हाँ, मैं तुम्हें बताऊँगा। लेकिन.........।

सँपेरा—लेकिन क्या? क्या मैं उसे पकड़ नहीं सकता?

बनिया—तुम्हारी क्या हिम्मत जो उसे पकड़ सको। वह बहुत पुराना नाग है। उसके शरीर पर बाल हैं। उसे देखते ही तुम्हारे होश उड़ जायँगे।

सँपेरा—अगर मैंने पकड़कर न दिखाया तो आज से यह काम ही छोड़ दूँगा।

बनिये ने ख़ुश होकर कहा कि अच्छा, चलो मेरे साथ; मैं तुम्हें बताऊँ। आगे-आगे बनिया चला पीछे-पीछे सँपेरा। रास्ते में बनिया सोचता जा रहा था कि अच्छा होगा कि वह साँप पकड़ा

ही जाय। क्योंकि रात-बिरात, अँधेरे-उजेले में निकलते समय उसका भय लगा रहता है।

शीघ्र ही वह स्थान आ गया और बनिया ने हाथ के इशारे से बताया कि इसी फूटे कुएँ के अन्दर वह साँप रहता है। सँपेरे ने बीन बजाना और मन्त्र पढ़कर कंकड़ी कुएँ के अन्दर फेंकना शुरू किया। एक घण्टे बाद सँपेरे ने कहा—यह तो बड़ा ज़बरदस्त साँप है। क़ाबू में आना बड़ा कठिन है।

बनिया ने कहा—बस, इसी पर इतनी शेख़ी मार रहे थे ? कहाँ गया वह तुम्हारा हुनर ?

इस बार सँपेरे ने हथेली पर जान रखकर कोशिश की। थोड़ी देर बाद कुयें के अन्दर से आवाज़ आई कि 'बनिया, तू कोढ़ी हो' और साँप फुंफकारता हुआ बाहर निकल आया।

बनिया उसी समय कोढ़ी हो गया, पर सँपेरे ने साँप को पकड़ लिया।
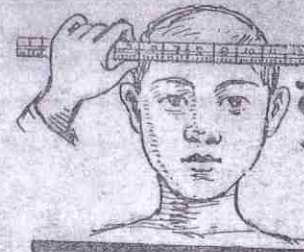
वीर सिपाही हम हम हम

लेखक, श्रीयुत निरङ्कारदेव सेवक, एम० ए०

वीर सिपाही हम हम हम
तुम राजा हो तुम सरदार
तुम वज़ीर तुम राजकुमार,
वीर सिपाही हम हम हम
वीर सिपाही हम हम हम।
बढ़ते पाँव हमारे साथ,
हिलते साथ हमारे हाथ,
एक नियम हैं एक क़दम
वीर सिपाही हम हम हम।
कन्धों पर रखकर हथियार,
चलते हम डरता संसार,
चलते हैं हम धम धम धम,
वीर सिपाही हम हम हम।
पढ़ते वीरों के आख्यान*,
चलते लेकर तीर कमान,
खाते रसगुल्ला चम चम
वीर सिपाही हम हम हम।

वसन्ती गीत

लेखिका, कुमारी उर्मिला सिनहा

यह वसन्त की उषा रँगीली,
फैला नव-नव कलियाँ सुन्दर,
रङ्ग गुलाबों के नव अन्तर
छिड़का दी है केसर पीली।

फूलों में मकरन्द बसाकर
भौंरे घूमें झुण्ड बनाकर,
जगा-जगा फूलों से कहती—
आई छवि वसन्त की पीली।

हैं किसान सब ख़ुश हो-होकर
सरसों के खेतों में जाकर
पाते प्राण वर्ष नव में सब
देख - देखकर शोभा पीली।

क्यों न आज फिर हम भी हँसकर
सब भाई औ' बहनें मिलकर,
क्रोध क्लेश सब दूर भगाकर—
देखें यह छवि जग की पीली।

नीचे लिखे हुए प्रश्नों के उत्तर सोचकर निकालो और फिर उनको अलग पेज पर दिये गये उत्तरों से मिलाकर अपनी बुद्धि की परीक्षा करो।

१—इँग्लैंड के नहरों के केन्द्र पर कौन-सा नगर बसा हुआ है ?

२—चिड़ियों के पैर एक-दूसरे से क्यों नहीं मिलते-जुलते ?

३—वसन्त के शुरू की अपेक्षा अन्त में चिड़ियाँ क्यों कम गाती हैं ?

४—कौन-सी चिड़िया अपने अण्डे दूसरे पक्षी के घोंसले में देती है ?

५—वह कौन-सा पक्षी है जो पानी में रहने पर भी गरम और सूखा रहता है और क्यों ?

६—शहर में कुहरा अधिक घना क्यों पड़ता है ?

७—तीन मातायें हैं, हर एक के दो लड़कियाँ हैं। वे सभी एक मकान में रहती हैं, जिसमें सात कमरे हैं और हर माँ या लड़की एक कमरे में सोती है। यह कैसे सम्भव है ?

८—वह कौन-सी चीज़ है जो अपनी जगह से एक इञ्च भी नहीं खिसकती पर बिना चले एक शहर से दूसरे शहर को भी जाती है ?

९—एक आदमी हवाई जहाज़ से उत्तरी ध्रुव की ओर रवाना हुआ। पहले वह एक हज़ार मील दक्षिण की ओर उड़ा फिर एक हज़ार पूरब की ओर। बताओ उत्तरी ध्रुव की ओर सीधा जाने के लिए वह किस दिशा की ओर उड़े।

—अशोककुमार

१०—मनुष्य के शरीर का ऐसा कौन-सा भाग है जिसकी लम्बाई पूरे शरीर की लम्बाई से भी अधिक है ?

११—मनुष्य के शरीर में ऐसा कौन-सा स्थान है जहाँ बचपन में कोई हड्डी नहीं होती पर बड़े होने पर वहाँ हड्डी हो जाती है ?

१२—क्या गदहे रात्रि में ही पागुर करते हैं ?

१३—क्या पानी में भी हवा होती है ?

१४—क्या पृथ्वी के उसी ओर के समुद्रों में ज्वार-भाटा आता है जिधर कि सूरज या चाँद होते हैं ?

१५—मनुष्य जैसे-जैसे पृथ्वी से ऊँचा उठता जाता है या किसी पहाड़ की चोटी पर चढ़ता जाता है, उसकी बोझ उठाने की शक्ति क्यों घटती जाती है ?

—वंशीधर शर्मा

भेड़िया और ख़रगोश

लेखक, श्रीयुत राजेन्द्रकुमार

['बाल-सखा' के पिछले अङ्क में एक सचित्र कहानी प्रकाशित हुई थी। हमारे पास बहुत-से पाठकों ने उस मूक 'कहानी' का पता लगाकर भेजा है। आई हुई उन कहानियों में श्रीयुत राजेन्द्रकुमार की कहानी सबसे अच्छी है। उसे हम यहाँ प्रकाशित कर रहे हैं।—सं०]

किसी समय एक भेड़िया एक जङ्गल में रहता था। वह बहुत बूढ़ा हो गया था और उसमें शिकार करने की शक्ति न रह गई थी। वह भूखों मरने लगा।

आख़िर उसे एक तरकीब सूझी। कहीं से जाकर वह एक पुतला ले आया। उसको उसने एक कूँची से तारकोल से रँग दिया और उसे लाकर सड़क के किनारे रख दिया। इतना करके भेड़िया एक पेड़ की आड़ में बैठ गया।

थोड़ी देर बाद एक ख़रगोश उधर से निकला। ख़ुशी के मारे वह नाच रहा था। पास आने पर उसने पुतले को देखा तो समझा, पुतला उस पर हँस रहा है। आकर वह पुतले के पा खड़ा हो गया और उसने हँसने का कारण पूछ

पुतले ने कोई जवाब न दिया तो ख़रग ने समझा कि पुतला उसकी हँसी उड़ा रह और उसके पूछने पर उसे उत्तर भी नहीं देत ख़रगोश को बहुत क्रोध आया और वह उ लड़ने लगा।

ख़रगोश के बदन में भी तारकोल के लग गये और उसका हाथ पुतले से चिपक गय इतने में ही भेड़िया पेड़ की आड़ से निकलकर व आया और ख़रगोश का कान पकड़कर उसे अ ओर घसीट लिया और दम भर में उसे चट कर ग

अँगूठेराम

लेखक, श्रीयुत शिरीषकुमार

पुराने ज़माने में अँगूठे के बराबर एक लड़का रहता था। उसे लोग अँगूठेराम कहा करते थे। वह रोज़ सुबह उठकर नदी के किनारे सैर किया करता था। उसी नदी में एक हाथी नहाया करता था। एक दिन हाथी ने अँगूठेराम को खदेड़ा। अँगूठेराम भागे। थोड़ी दूर पर अँगूठे-राम ने मटर का एक खेत देखा। मटर की एक छीमी में छेद था। अँगूठेराम मटर के छेद में से निकलकर भाग गये। हाथी ने सारा खेत खोज डाला पर अँगूठेराम का कहीं पता न लगा। चारों तरफ़ देखा। दूर पर अँगूठेराम एक को भागे जा रहे थे। हाथी उनके पीछे दौ थोड़ी देर में अँगूठेराम एक स्टेशन पर प स्टेशन पर एक इंजन खड़ा था। अँगूठेराम इंजन चिमनी से निकलकर भाग गये। हाथी भी चि में घुसा पर वह फँस गया। इतने में ही इंजन पड़ा और हाथीराम को बहुत दूर एक श पहुँचा दिया। अब अँगूठेराम मज़े में रहने ल

पृष्ठ ५७ पर छपे प्रश्नों के उत्तर

१—इँग्लेंड की नहरों के केन्द्र पर बसे हुए हर का नाम बरमिंघम है। यह शहर इँग्लेंड के सिद्ध शहर लिवरपूल, लन्दन, हल और ब्रिस्टल नहरों तथा नदियों द्वारा मिला हुआ है।

२—जिस तरह का जीवन चिड़ियों को ताना पड़ता है उसी के अनुसार उनके पैर भी ते हैं। जिन पक्षियों को पानी पर रहना पड़ता नके पैर जालीदार होते हैं; जो पेड़ पर रहती नके पैर पंजेदार होते हैं; जो चिड़ियाँ पेड़ों पर ती हैं, जैसे तोता या कठफोड़वा, उनके दो पंजे गे और दो पीछे की ओर होते हैं।

३—वसन्त के अन्त और गर्मी के शुरू में ड़ियाँ अपने बच्चों की देख-रेख करने तथा उनकी वश्यकताओं को पूरा करने में फँसी रहती हैं। लिए वे गाकर अपने शत्रुओं का ध्यान अपनी र नहीं आकर्षित करना चाहतीं।

४—कोयल अपने अंडे दूसरी चिड़ियों के सलों में देती हैं।

५—बतख़ पानी में भी रहकर गरम और सूखी रहती है। इसका कारण यह है कि उसके शरीर से एक प्रकार का चिकना पदार्थ निकलता है जो उसके पंखों के ऊपर बैठ जाता है। उस पर पानी का प्रभाव नहीं होता।

६—हवा में रहनेवाले धूल के कणों पर भाप बैठ जाती है इससे कुहरा पड़ता है। यों शहर की हवा में धूल के कण अधिक होते हैं इसलिए शहर में कुहरा अधिक घना मालूम होता है।

७—एक स्त्री है, उसके दो लड़कियाँ हैं और उन दोनों के भी दो लड़कियाँ हैं। इस तरह कुल घर में पाँच ही प्राणी हैं।

८—सड़क।

९—उत्तर की ओर।

१०—मनुष्य की छोटी आँत की लम्बाई पूरे शरीर से कितनी ही अधिक होती है।

११—कपाल में बचपन में हड्डी नहीं होती, फिर हो जाती है।

१२—गदहे कभी पागुर नहीं करते।

१३—पानी में हवा होती है। पानी के जीव इसी में साँस लेते हैं।

१४—उसके दूसरी ओर भी ठीक उसी तरह ज्वार-भाटा होता है।

१५—ऊपर उठते जाने से हवा का दबाव घटता जायगा और बोझ क्रमशः हल्का होता जायगा। इसलिए मनुष्य ज्यों-ज्यों ऊँचाई पर पहुँचेगा, नीचे की अपेक्षा अधिक बोझा उठा सकेगा।

रात

लेखक, श्रीयुत कमलेशकुमार गुप्त

सूरज डूबा हुआ अँधेरा।
काली निशि ने जग को घेरा॥
सन्ध्या उतरी तारे निकले।
आसमान में चन्दा निकले॥

उजियाली है नभ में आई।
मधुर चाँदनी जग में छाई॥
तारे लगते हैं मणि जैसे।
आसमान हो थाली जैसे॥

नया खेल

कुमारी मनोरमा ने इस महीने में खेलने योग्य एक नया खेल खेलने का ढङ्ग लिखकर भेजा है—

यह खेल कमरे में बैठकर खेला जाता है। इसके लिए दो लड़के होते हैं। एक फोटोग्राफर बनता है और दूसरा उसका सहायक। एक काली चद्दर और डण्डों की सहायता से दोनों कैमरा खड़ा कर देते हैं। चित्र उतारने के लिए वह एक सादा पोस्टकार्ड लेता है और तब अपने सहायक को कमरे से बाहर चले जाने को कहता है। तब जो लड़का फोटोग्राफर बना हुआ है वह कमरे में बैठे हुए लड़कों में से किसी एक को चित्र खिंचाने के लिए राज़ी करता है। चित्र खींचने का बहाना करके काली चादर के भीतर से वह सफ़ेद कार्ड निकालकर कहता है—"हाँ, यह तस्वीर बहुत सुन्दर आई है, मैं अपने सहायक को दिखाता हूँ।" वह बाहर से अपने सहायक को बुलाता है और उसे वह कार्ड दिखाता है। सहायक बननेवाला लड़का तुरन्त कहता है यह तो फ़लाँ लड़के की तस्वीर है, कितनी साफ़ आई है। सब लड़के आश्चर्य करते हैं कि सहायक तो बाहर था उसे कैसे पता चल गया कि किस लड़के ने तस्वीर खिंचाई है। इसका रहस्य यह है कि फोटोग्राफर बननेवाला लड़का अपने सहायक को कार्ड देते समय उसी प्रकार खड़ा हो जाता है जिस प्रकार चित्र खिंचानेवाला उस समय खड़ा है। सहायक उसको देखकर एक बार दूसरे लड़कों की ओर देखता है और तुरन्त ही [illegible]

यदि सहायक कुशल हुआ तो आप इस खेल द्वारा अपने साथियों को आश्चर्य में डाल सकते हैं।

आँखों का भ्रम

कभी-कभी हम एक चीज़ देखते हैं। देखने से तो वह बिलकुल ठीक मालूम पड़ता है पर असल में ठीक नहीं होता। जैसा कि यहाँ के दो चित्रों में मालूम
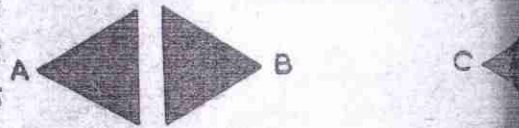
पड़ता है। चित्र में देखने से मालूम पड़ता है A और B की दूरी B और C की दूरी से कम पर वास्तव में ऐसा नहीं है। पटरी लेकर नापो A और B की दूरी B और C की दूरी के बराबर ही मिलेगी।

इस चित्र में हम एक फूल और एक भौंरा अलग-अलग देखते हैं। पर यदि बीचवाली
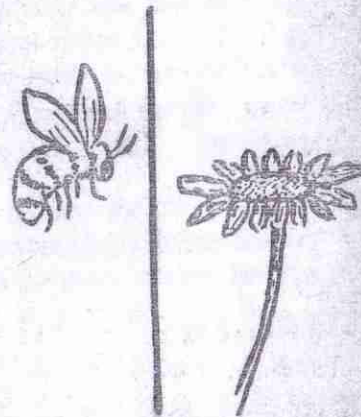
लाइन पर नाक रखकर देखो तो तुम्हें बहुत आश्[illegible]

फूल

बालिका, कुमारी शोभादेवी मिश्र (उम्र ९ वर्ष)

हरी डाल पर फूले फूल,
लाल गुलाबी नीले फूल;
[illegible] रहे हवा में झूल,
ये पीले चमकीले फूल।

ख़ूब सुगन्ध उड़ाते फूल,
हमें बहुत ही भाते फूल;
हँसते औ' मुस्काते फूल,
देखो रहे डाल पर झूल।

सवेरा

लेखक, श्रीप्रकाश, प्रयाग

रात बह गई काली-काली,
खिला कमल-सा प्रातःकाल;
सूरज निकला आसमान में,
पूरब का कोना है लाल।

दिखा रही अपने को हिल-हिल,
फूल-भरी पेड़ों की डाल;
लगा सुनाई देने भन-भन,
फूल खिल उठे पीले-लाल।

शान्त अभी जो ताल वहाँ था,
लगा सुनाने कल-कल गान;
गाने लगे किसान खेत को,
चिड़ियाँ लगीं सुनाने तान।

भारत

लेखक, श्रीयुत हजारीसिंह मिथडा

भारत देश हमारा है।
हम सबको वह प्यारा है॥
जङ्गल की कैसी क़तार है।
फूलों की कैसी बहार है॥
कैसे सुन्दर पेड़ लगे हैं।
कैसे सुन्दर फूल खिले हैं॥
चिड़ियाँ सब यह गाती हैं।
हम सबको बतलाती हैं॥
भारत देश हमारा है।
हम सबको वह प्यारा है॥

जाड़े की आग

लेखक, श्रीयुत गौरीशङ्कर पाण्डेय

साँझ-सवेरे सब कोई हैं
आग निकट आ जाते।
ख़ुश होकर के अपने मन में
ईंधन उसे खिलाते।

अच्छी लगती आग बहुत है,
बैठें सभी जलाकर।
आग तापने को कहता है
सबसे जाड़ा आकर।

प्रश्न पहेली

तीन वर्ण का नाम है मेरा।
आसमान में रखता डेरा॥
गड़-गड़कर मैं जगत जगाता।
कृषकों के सब कष्ट भगाता॥
(बादल)
—गोपालकृष्ण बाँगड़

× × ×

क्या जानूँ वह क्या है,
जैसा देखूँ वैसा है।
अर्थ तू उसका पूछेगा,
मुँह देखे तो सूझेगा।
(दर्पण)
—गोविन्दराम मिश्रा

× × ×

जीवन का एक अङ्ग कहाता।
आदि कटे तो युद्ध हो जाता।
मध्य कटे तो वजन बताता।
अन्त कटे तो मैं मर जाता।
(मरण)
—आर० बी० जोशी 'रमण'

× × ×

गोल - गोल चक्कर सी,
हूँ मैं मीठी शक्कर सी।
आदि कटे रङ्गी बन जाती,
जिससे सब के मन को भाती॥
(नारङ्गी)

दो वर्णों का मेरा नाम
आती हूँ दुनिया के काम
उलट जो मुझे पाओगे
गआ गआ चिल्लाओगे
(आग)
—गोपालदास मोर 'विद्यार्थी'

× × ×

हरी चादर ऊपर से ओढ़े,
ढेर के ढेर चली आज है,
मेरे तेरे हाथ बिकाने॥
(मकई)

ऊपर से मेरा रङ्ग हरा,
भीतर तो लाल रङ्ग भरा;
मुझको पा सब ख़ुश होते हैं,
पीस-पीसकर ख़ूब लगाते हैं।
(मेंहदी)
—गौरीशङ्कर पाण्डेय

× × ×

आदि कटे तो रत बन जाता,
मध्य कटे तो भात कहाता,
अन्त कटे तो भार कहाता,
दुनिया का जी ललचाता।
(भारत)

× × ×

तीन अक्षर का मेरा नाम,
उल्टा - सीधा एक समान।
आदि कटे तो खाना बनता,
पूरा होकर छम् छम् करता॥
(नाचना)
—राजेश्वर

× × ×

तीन अक्षर का मेरा नाम।
बतलाओ तो पाओ इनाम॥
आदि कटे तो रस बन जाता
मध्य कटे सस कहलाता।
अन्त कटे तो ताल बन जाता।
(सरस)
—सुरेन्द्र

× × ×

धीरे - धीरे बढ़ता हूँ,
जग उजियारा करता हूँ॥
(चन्द्रमा)
—रामखिलावन त्रिपा[ठी]

मनो-विनोद

पिता ने क्रोध के साथ लड़के को डाँटते हुए कहा—तीन [वर्ष] से तुम पढ़ रहे हो और अभी तक तुम्हें दस तक गिनती [न]हीं आया। आखिर तुम जिन्दगी में करोगे क्या ?
'मैं पहलवान होऊँगा पिताजी।' लड़के ने उत्तर दिया।
—जैनेन्द्रनाथ

× × × ×

[मास्]टर साहब भूगोल पढ़ा रहे थे। उन्होंने रमेश से [पूछा], रमेश, बताओ आस्ट्रेलिया का कौन-सा विचित्र [जानव]र है।
"हाथी।"
"हाथी ! आस्ट्रेलिया में हाथी तो होता ही नहीं।" [मास्टर] साहब ने कहा।
"[इ]सी लिए तो हाथी वहाँ के लिए विचित्र है।" उत्तर [मिला]।
—कुमारी उषादेवी

× × × ×

[एक] सनकी आदमी तालाब के किनारे टहल रहा था [कि] फिसला और बेचारा छप से पानी में गिर पड़ा। दो [आदमि]यों ने उसे गिरते देखा और तुरन्त उसे बाहर [निकालने] के लिए कूद पड़े। बाहर आने पर सनकी महोदय [बोले]—आह ! जब मैं गिर पड़ा तो समझा था कि मैं [पानी] में गिर पड़ा। और अब याद आया कि मैं तैरना [जानते] हुए भी डूब रहा था।
—अजयकुमार

× × × ×

[मालि]क—(नौकर से) अरे रामू इधर आ। देख, [मैं] दवाई के बदले स्याही पी गया हूँ। अब क्या करूँ ?
[नौकर]—कोई हर्ज नहीं, अब आप सोख्ता चबा लीजिए।

× × × ×

"[य]ह मकान किसका है ?"
"[लाल]ाजी का।"
"[कौ]न लालाजी ?"
"[जि]नका यह मकान है।"

× × × ×

सवाल का उत्तर ग़लत पाने पर मास्टर साहब झुँझला कर बोले—अबे, तुझे किस गधे ने पढ़ाया है !
"पढ़ाया है तो आप ही ने मास्टर साहब।" वह बोला।
—बल्लभदास बिन्नानी 'ब्रजेश'

× × × ×

एक आदमी—डाक्टर साहब, मैं एक महीना पहिले अँगूठी निगल गया था, अब मेहरबानी करके निकाल दीजिए।
डाक्टर साहब—फिर इतने दिन क्यों नहीं आये ?
वह आदमी—इतने दिन मुझे पैसों की ज़रूरत नहीं पड़ी।
एक आदमी— तुम्हारे छोटे भाई का क्या नाम है ?
दूसरा आदमी—मुझे नहीं मालूम। वह अब तक बात नहीं कर सकता।

—विश्वनाथराव चिचोलकर

अध्यापक— सोहन, तुम बहुत आलसी होते जा रहे हो। आलस्य विद्यार्थियों का शत्रु है।
सोहन—मास्टर साहब, आपने कल ही तो कहा था कि हमें अपने शत्रुओं को प्यार करना चाहिए।

× × × ×

एक बार पण्डितजी अपने विद्यार्थियों को गणित पढ़ा रहे थे।
पण्डितजी—अगर पन्द्रह आदमी एक काम को तीन घण्टे में पूरा करते हैं तो पाँच आदमी उस काम को कितने घण्टे में करेंगे ?
एक छोटा-सा लड़का—वे उस काम को नहीं करेंगे।
पण्डितजी—क्यों नहीं ?
लड़का—क्योंकि पन्द्रह आदमी उस काम को पूरा कर चुके हैं।

—रतनचन्द सावनसुखा
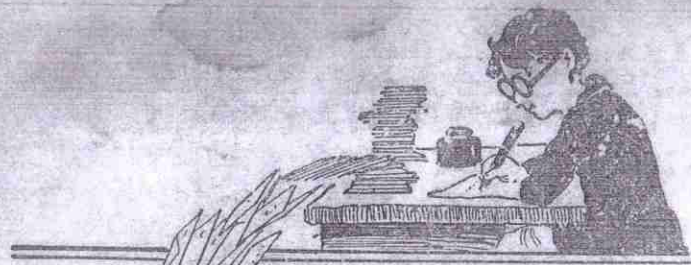
इस अङ्क में कुत्तों की आदतों के सम्बन्ध में एक लेख छपा है। इससे प्यारे बाल-सखाओं को यह मालूम होगा कि जानवरों की आदतें किस प्रकार बनती हैं। आशा है, पाठकों को यह लेख पसन्द आयेगा और वे अन्य जानवरों की आदतों के सम्बन्ध में भी इसी प्रकार लिखने की कोशिश करेंगे।

× × × ×

पिछले अङ्क में प्रकाशित मूक कहानी के उत्तर में हमारे पास बहुत-से पाठकों ने बहुत सुन्दर-सुन्दर कहानियाँ भेजी हैं। हमें खेद है कि हम उन सभी कहानियों को नहीं छाप सके। आशा है, प्रेषकगण क्षमा करेंगे।

× × × ×

'बाल-सखा' के एक पाठक ने हमारे पास यह शिकायत भेजी है कि उनकी कवितायें 'बालसखा' में नहीं प्रकाशित होतीं। क्यों? 'बाल-सखा' में यदि कोई कविता नहीं छप पाती तो इसका यह अर्थ नहीं है कि वह अच्छी नहीं है। उनकी कवितायें बहुत ही अच्छी हैं परन्तु यदि वे 'बाल-सखा' के लिए सरल तथा मनोरञ्जक कवितायें भेजें तो उन्हें निराश न होना पड़ेगा।

× × × ×

कुमारी मोहनीबाला ने 'सरसों के फूल'-शीर्षक एक कविता भेजी है। पाठकों के लिए हम उसे यहाँ छाप रहे हैं।

हमने अपने बँगले में है
की सरसों की खेती;
लहराता है खेत मनोहर,
छवि उसकी सुख देती।

पीले-पीले फूल खिल रहे,
लगते कितने प्यारे;
मानो खिले हुए धरती पर,
पीले - पीले तारे।

सुबह-शाम जब धीमी-धीमी
हवा डोलने लगती;
इन फूलों की शोभा कितनी
तब है अच्छी लगती!

× × × ×

श्रीयुत सुरेन्द्रकुमार पूछते हैं कि कोई टिकट इक[illegible] है, कोई सिक्के इकट्ठा करता है और कोई कुछ और [illegible] संग्रह करता है। वे ऐसी चीज का संग्रह करना [illegible] जिसका कोई दूसरा आदमी संग्रह न करता हो। [illegible] उन्हें कोई ऐसी चीज बता सकते हैं?

× × × ×

इस अङ्क में एक बहुत मजेदार खेल खेलने का [illegible] है। आशा है, प्यारे बाल-सखाओं को यह पसन्द [illegible] और वे इसके द्वारा अपने साथियों का मनोरञ्जन कर[illegible]

× × × ×

'बच्चों का कमरा'-शीर्षक स्तम्भ के सम्बन्ध में एक पाठक ने लिखा है कि उसमें कहानियाँ भी छपनी [illegible] इस अङ्क में हम श्रीयुत शिरीषकुमार की एक सुन्दर [illegible] छाप रहे हैं। आशा है, पाठकों को यह कहानी पसन्द आयेगी।

अप्रैल बालसखा १९४४

विषय-सूची

कहानी

कविता

लेख

फुटकर

सम्पादक { श्रीनाथसिंह
अनन्तप्रसाद विद्यार्थी

[वर्ष २८] अप्रैल १९४४—वैशाख २००० [संख्या ४

हवा

लेखक, श्रीयुत निरंकारदेव सेवक, एम॰ ए॰

यह बसन्त की मस्त हवा।
सब रोगों की एक दवा॥
निकलो कमरे से बाहर।
खेलो नाच कूद गाकर॥

रङ्ग-बिरङ्गे फूल खिले।
झूम रहे हैं हिले-मिले॥
क्या भीनी सुगन्धि भाती।
मन में मस्ती भर जाती॥

दूर कभी चिड़ियाँ गातीं।
पास कभी चिड़ियाँ आतीं॥
मेरे भी यदि होते पर।
उड़ जाता मैं फर-फर-फर॥

अलमस्त सिपाही

लेखक, श्रीयुत 'सुधीर', बी॰ ए॰

हम जग के अलमस्त सिपाही!
धूल धानि के क़िले बनाते,
अपनी-अपनी फ़ौज सजाते,
बढ़-बढ़कर फिर हाथ दिखाते,
बनकर सजग सिपाही।
लड़ना होता लड़कर रहते,
लाख कहो पर अड़कर रहते,
दुश्मन के सिर चढ़कर रहते,
हम राठौर सिपाही।
बोल बड़ा हम कभी न सहते,
ना तू सुनते, ना तू कहते,
रैयत नहीं किसी की रहते,
हम बिगड़ैल सिपाही।

माता कस्तूर बा गांधी

लेखक, श्रीयुत प्रभुदयाल विद्यार्थी

माता कस्तूर बा गांधी का देहान्त पूना के आग़ा ख़ाँ महल में हो गया। आप मङ्गलवार को शिवरात्रि व्रत के दिन ७ बजे शाम को शिवलोक पुरी पहुँचीं। माता कस्तूर बा महात्मा गांधी की पत्नी थीं। उनकी उम्र महात्माजी के बराबर ही थी। वे ९ अगस्त सन् १९४२ को बिड़ला-हाउस बम्बई में गिरफ़्तार हुई थीं और महात्मा गांधी के पास आग़ा ख़ाँ महल भेज दी गई थीं। तब से वे वहीं थीं। पर साल फ़रवरी में महात्माजी ने २१ दिनों का उपवास व्रत किया और तब उनका ज़िन्दा रहना डाक्टरों ने असम्भव बतलाया था लेकिन परमात्मा ने उन्हें जीवित रक्खा। 'बा' उन दिनों बापू की सेवा में ही थीं। 'बा' और बापू को जिन्होंने निकट से देखा है उन्हें मानों स्वर्ग-लोक के देवताओं का दर्शन मिला है।

हम लोगों का कितना दुर्भाग्य है कि हमारी माता का देहान्त बन्दीगृह में हुआ। पारसाल फ़रवरी में बापू का जीवन संकट में पड़ गया था और अबकी ४४ की फ़रवरी में 'बा' परलोक सिधार गईं।

प्रातःकाल होते ही बा जब बापू के लिए थाली में दूध और कुछ फल लिये बिस्तर के निकट खड़ी होती थीं तब की शोभा बड़ी अनुपम लगती थी। बापू की सेवा सभी करना चाहते हैं लेकिन बापू के खाने-पीने का सारा प्रबन्ध 'बा' अपने ज़िम्मे रखती थीं। वे काफ़ी वृद्ध हो गई थीं लेकिन भी वे बापू की सेवा में हमेशा तत्पर रहती थीं।

जेल में भी वे हमेशा बापू की सेवा रहती थीं। आराम करना उन्हें पसन्द न था।

'बा' बालकों की देखभाल बड़ी अच्छी करती थीं। सभी के बालक उन्हें प्रिय थे। के सभी बालक उन्हें अक्सर उनकी कुटि घेरे रहते थे। अक्सर अपनी पसन्द के त्योहा अपने हाथ से मिठाइयाँ बनाकर बच्चों को करती थीं। दिवाली के त्योहार पर हम सभ सूँगफली खाने को देती थीं।

छोटे बच्चों को दूध आदि भी अपने पिलातीं थीं। भेंट में आये हुए फलों को बच्चों को बाँट दिया करती थीं। आश्र बच्चों की देख-भाल वे बड़ी होशियारी से थीं। हरएक की बीमारी में स्वयं 'नर्स' बन करती थीं।

एक ख़ास बात उनमें यह थी कि वे अप्रसन्नचित्त नहीं रहती थीं। दूसरी बात थी कि वे हमेशा गांधीजी की आज्ञाओं को विरोध करने पर भी मानकर हा रहती थीं। चरणों पर अपना मस्तक झुका देती थीं। कहने को उन्होंने कुछ भी नहीं छोड़ा। सबसे वस्तुओं तक को त्याग दिया था। उनका [illegible] था। सिर्फ़ हाथ में कुछ शीशे की चूड़ियाँ [illegible] थीं। मोटे-से-मोटा वस्त्र पहनती थीं। बापू [illegible] सूत की साड़ियाँ अपने लिए ही [illegible] थीं।

[illegible] वस्तुओं को बटोरकर संग्रह नहीं [illegible]। ज़मीन पर ही उनका सोना, उठना, बैठना [illegible] हाथ ही पानी भरकर स्नान करती थीं। [illegible] तो उन्हें छू तक नहीं गया था, यद्यपि [illegible] के सबसे पवित्र महान् पुरुष की धर्मपत्नी [illegible] किसी की शिकायत उन्होंने नहीं की। [illegible] उन्हें बहुत निकट से देखने का सौभाग्य [illegible]। उनकी सेवा में ७-८ साल से कम नहीं [illegible] बड़े अर्से में कभी उन्हें क्रोधित होते नहीं [illegible]। हम लोगों के साथ में बैठकर गेहूँ साफ़ [illegible], रोटी बनाती थीं, फ़र्श साफ़ करती थीं, [illegible] तैयार करती थीं। इन कामों को करने [illegible] बड़प्पन मानती थीं। पश्चिमी रङ्ग-ढङ्ग [illegible] थीं।

[illegible] में बहिनों की देख-भाल वे ही करती [illegible] बहिनें अपनी शिकायत उन्हीं के ज़रिये [illegible] थीं। बहिनों का पक्ष वे बापू के सामने [illegible] थीं। बिना बापू की आज्ञा लिये हुए वे कभी कुछ हुक्म नहीं देती थीं। हर चीज़ और हर बात में वे बापू की सलाह लिया करती थीं। सभा-सोसाइटियों में जाना वे बिल्कुल पसन्द नहीं करती थीं। हाथ जोड़कर मुस्कराते हुए कहतीं—"मैं कुछ पढ़ी-लिखी तो हूँ नहीं; मुझे ले चलकर क्या करेंगे? बापू को ले जाइए; वे कुछ आप सबको बतायेंगे।"

बिना बापू की आज्ञा से वे अपना चित्र तक नहीं देती थीं। हाँ, पढ़ी-लिखी तो कम थीं, लेकिन हर बात की जानकारी रखती थीं। ये बातें वे ही जान सकते हैं जिन्होंने निकट से उन्हें देखा है।

हमसे अक्सर कहा करती थीं—"प्रभुदयाल, हमें हिन्दी नहीं आती है; पढ़ा दो। बच्चों के लायक़ हिन्दी में कोई पत्र हो तो मँगा दो।" उनकी आज्ञा पाने पर मैंने भाई श्रीनाथसिंह को पत्र लिखकर सेवाग्राम के पते से 'बाल-सखा' मँगवाने की बात लिखी थी। 'बाल-सखा' के बड़े अक्षरों को देखकर हिन्दी पढ़ती थीं।

रामायण वे हमेशा पढ़ती थीं और गुजराती दैनिक पत्र हमेशा देखती और समाचार पढ़ती थीं। ऐसी भोली-भाली माता का दर्शन अब हमें आश्रम में कहाँ से होगा?

लीना

लेखक, श्रीयुत मदनमूर्तिराय

लीना मेरी है बङ्गाली।
इक दिन घर से गई निकाली॥
रूठ के बैठी पेड़ के नीचे।
रोते-रोते कपड़े सींचे॥
गर्दन रूँधी आँखें फूलीं।
लटकी टहनी से जा झूलीं॥

तब से उतरी एक गिलहरी।
लीना धक से डरकर सिहरी॥
रोती - धोती आँसू बहते।
भागी माँ-माँ गो-गो कहते॥
माँ ने झट से गोद लगाई।
लीना ने डरकर सुख पाई॥

देवताओं में झगड़ा

लेखक, श्रीयुत मोहनलाल नेहरू

महायज्ञ हो रहा था, ऋषि और देवताओं के झुण्ड जमा थे और आते-जाते थे। शिवजी भी बैठे थे। इतने में दक्ष प्रजापति आये। सब सभासद अपने-अपने स्थानों से उठ खड़े हुए और उनका स्वागत किया परन्तु शिवजी न उठे; दक्ष की बेटी सती शिवजी की पत्नी थीं। दक्ष क्रोधवश बोले—

हे सभासदो, सुनो। इस निर्लज्ज शिव ने मेरा तिरस्कार किया है। यह मेरे आने पर अपने स्थान से टला तक नहीं, यद्यपि यह मेरा दामाद है और शिष्य भाव को प्राप्त है। यह बन्दर की-सी आँखें करके मुझे देखता रहा। मुझे दुःख है कि मैंने क्यों ब्रह्मा के कहने में आकर इसे अपनी कन्या दी। मैं यह शाप देता हूँ कि इसे किसी सभा में न बुलाया जावे।

दक्ष के चले जाने पर शिव और दक्ष के अनुचरों में कहा-सुनी होती रही। भृगु ने कहा—"जो कोई शिव का व्रत करे वह पाखण्डी है।"

शिवजी कुछ न बोले और अपने अनुचरों सहित उठकर चले गये और कैलास पर्वत पर अपना काम-काज करने लगे।

कुछ दिन बाद दक्ष प्रजापति ने अपनी राजधानी में एक बड़ा यज्ञ रचा। उस यज्ञ की घोषणा बृहस्पति ने की। दूर-दूर से देवी-देवता बुलाये गये। परन्तु न सती को बुलाया न शिव को। सती ने जब यह सुना और कुछ को विमानों पर जाते देखा, उसने बड़े प्रेम से शिवजी से कहा—"अपने पिता के यज्ञ में, जहाँ ये सब देवता जा रहे हैं, मैं भी जाऊँगी। ये सब देवियाँ अपने पतियों के सङ्ग जा रही हैं, सो आप भी मेरे साथ चलें।"

शिव—मगर तुम्हें तो बुलाया नहीं है। हमसे तुम्हारे पिता द्वेष रखते हैं, इसी से तु[म्हें] नहीं बुलाया।

सती—पिता के घर का उत्सव सुनकर [...] का शरीर भला कैसे चञ्चल न हो। पिता [...] बे बुलाये जाना बुरा भी नहीं है।

शिव—यह तो ठीक है मगर उस वक्त [...] तुम्हें यह विश्वास हो कि वे तुम्हारा तिर[स्कार] नहीं करेंगे। तुम्हारे पिता का चित्त ठीक नहीं [...] हम तो कहते हैं कि ऐसे चित्तवाले सम्बन्धी [...] की तरफ़ भूलकर भी न देखना चाहिए।

सती—मगर मैं तो जाना चाहती हूँ [...] जो भी हो।

शिव—वहाँ तुम सम्मान न पाओगी [...] इसका नतीजा अच्छा न होगा।

सती—मैं तो इस उत्सव को ज़रूर देख[ूँगी]।

शिव—अच्छी बात है, कुछ हमारे आ[दमियों] को लेकर चली जाओ।

सती के पहुँचने पर माँ-बहिनें उससे आ[दर]पूर्वक मिलीं, और किसी ने उसका आदर न [...] उसने देखा शिव का हिस्सा उस यज्ञ में नहीं [...] गया है। इस पर वे क्रोध से लाल हो गई [...] बोलीं—"सभासदो तथा पिताजी! सारे सं[सार में] शिवजी से कोई बड़ा नहीं है। भला उन स[...] वैर-रहित से तुम्हारे सिवा कौन वैर कर सक[ता है]। तुम लोग दूसरे के गुणों में बुराई देखते [हो] बहुत नीच बात है। जो शिव की निन्दा [...] उसका तो वध कर डालना ही ठीक है और [...] सामर्थ्य न हो तो आत्मघात कर लेना चाहिए [...] वास्ते मैं जीवित नहीं रह सकती। मेरी तरफ़ [...]

[...]गी बतावेंगे कि मैं शिवद्रोही की पुत्री हूँ। [...] होने से मर जाना ही अच्छा।

इतना कहकर सती यज्ञ-कुण्ड में कूद पड़ीं और थोड़ी ही देर में जलकर राख हो गईं। यज्ञ-[...] में हाहाकार मच गया। शिव के गणों ने वीरभद्र को नेता बनाकर यज्ञ को भङ्ग कर डाला। दक्ष प्रजापति और उसके पुरोहितों को मार डाला और न मालूम और क्या उपद्रव मचाते, मगर ब्रह्माजी ने शिवजी की स्तुति करके उन्हें अधिक उपद्रव करने से रोक दिया।

चाँद

लेखक, श्रीयुत चन्द्रप्रकाश श्रीवास्तव 'प्रकाश'

यह देखो छोटा-सा चाँद।
नन्हा-सा मुन्ना-सा चाँद।
कभी मेघ में छिप जाता है,
कौतुक कभी दिखाता चाँद।
कभी निकल मेघों से बाहर,
है प्रकाश फैलाता चाँद।
होकर कभी धनुष-सा टेढ़ा,
फिर पूरा हो जाता चाँद।
क्या वह तब बच्चा रहता है,
या घर में रहता वह चाँद?
इसको मामा क्यों हम कहते,
प्यार नहीं जब करता चाँद?
नहीं कहेंगे उसको अब हम,
मेरा प्यारा मुन्ना चाँद।
दूध नहीं यह देता हमको,
किन्तु दूध-सा गोरा चाँद!
आसमान से लाकर दे दो,
मुझको माँ यह गोरा चाँद!!
इसे रखूँगा संग-संग मैं,
यह भैया-सा प्यारा चाँद!
आ जा मामा चन्दा क्यों तू,
रहा मेघ में है यों फाँद!!

मेरी पतंग

लेखक, श्रीयुत 'अशोक'

भैया ने .खुश होकर मुझको
ला दी एक पतङ्ग;
कितना मुझको प्यारा लगता
इसका नीला रङ्ग!
बीचो-बीच बना है इसके
पीले रँग का चाँद,
घने बादलों में ज्यों दिखता,
आसमान में चाँद!
शाम खड़े होकर के छत पर
इसे उड़ाऊँ आज,
.खुश होवेंगे सभी देखकर
इसका सुन्दर साज!
उड़ जाने दूँगा मैं इसको—
पल में चन्दा पास;
छू लूँगा मैं यों चन्दा को—
नहीं जो आता पास॥

"दुष्ट चोर, तेरा बल चोरी करने में ही समाप्त हो गया।" बेला ने अलबेला को धिक्कारा। "अब तुमको लज्जा नहीं आई। एक लड़की के हाथ बन्दी बना है।"

"आप मायापुरी की राजकुमारी हैं", अलबेला ने कहा—"मैं डाकूपुरी का सरदार हूँ। आपके पिता नगरों पर शासन करते हैं। मैं वनों का राजा हूँ। आप यहाँ अकेली हैं। क्या आप इन पेड़ों को गिन सकती हैं। मेरे चार-चार आदमी छिपे हुए हैं एक-एक वृक्ष के पीछे।"

"मत बको।" बेला ने डाँटा।

अलबेला चुप हो गया। दोनों राजसभा में पहुँचे। राजा ने बेटी की सफलता देखी। वह हर्ष से फूल उठा। राजकुमारी की वीरता देखकर वीरों का सिर नीचा हो गया।

"क्या तुमने राजकुमारी के महल पर डाका डाला था?" राजा ने अलबेला से प्रश्न किया।

"डाला था।"

"तुमको इसका दण्ड मिलेगा।"

अलबेला चुप खड़ा रहा।

"इसने अनेक हत्यायें भी की हैं।" मंत्री ने बताया।

"तुम्हारा अपराध भीषण है;" राजा ने कहा—"तुमको मृत्युदण्ड दिया जाता है।"

अलबेला चुप रहा। वह एकटक बेला की ओर देख रहा था।

और बेला सोच रही थी, यदि अलबेला रथ न रोकता तो घोड़े नदी में कूद पड़ते। मैं मर जाती। अलबेला ने मुझको मरने से बचाया। अब अलबेला को मरना पड़ेगा। वह काँप उठी।

"सेनापति, ले जाओ इस डाकू को।" राजा ने आज्ञा दी—"कल सूर्योदय के समय इस दुष्ट को इसके कर्मों का फल देना।"

"ठहरिए।" बेला ने कहा।

"क्यों?"

"उसको प्राण-दण्ड न दीजिए। उसने
जीवन-रक्षा की थी।"

"नहीं, इस दुष्ट डाकू को प्राण-दण्ड अ
मिलेगा।"

"वह मेरा बन्दी है।"

"हाँ। तुमने उसको पकड़ा था।" राजा
स्वीकार किया।

"वन्दी, मैं तुमको मुक्त करती हूँ।"
ने कहा।

"बेला, तेरा यह साहस!" राजा क्रोध
उबल पड़ा—"सेनापति, दोनों को पकड़ लो।"

अलबेला ने देखा, राजकुमारी का मुख
से लाल है। अलबेला ने लपककर राजकुमारी
गोद में उठा लिया। सेनापति मूढ़-सा देखता रह
बेला और अलबेला घोड़े पर बैठकर ग़ायब हो ग

मायापुरी में कोलाहल मच गया। शोक
बादल छा गये। बेला और अलबेला डाकू
पहुँचे। वहाँ हर्ष का समुद्र उमड़ पड़ा।

"यही तुम्हारी गद्दी है?" बेला ने प्रश्न किय

"हाँ, राजकुमारी।" अलबेला ने कहा।

"मैं तुम पर प्रसन्न हूँ।"

"पर मैं डाकू हूँ।"

"कोई हानि नहीं।"

"मेरे पास बढ़िया वस्त्र नहीं हैं।"

"बजाज़ों की दूकान पर वस्त्रों का अभाव नहीं

"मेरे पास बहुमूल्य अलङ्कार नहीं हैं।"

"राज-कोषों में रत्नों की कमी नहीं होती

"मेरी गद्दी टूटी-फूटी है। यहाँ आपके र
योग्य महल नहीं।"

"महल बनाने के लिए बहुत मज़दूर
सकते हैं।"

"ठीक है। पर लूट-मार करना मेरा पेशा है।"

"तुम निर्धनों को नहीं लूटते हो।"

"मैं हत्यारा हूँ।"

"पर किसी निरपराध पर तुमने आज तक
नहीं उठाया।"

"किन्तु डाकू डाकू ही है। मैं नीच, हत्यारा
हूँ।"

"बको मत। राजकुमारी बेला कभी झूठ
मानती। मैं तुमसे विवाह करूँगी।"

अलबेला ने ताली बजाई। उसके अनेकों अनुचर प्रकट हो गये। अनुचरों ने विविध सामान राजकुमारी के चरणों में बखेर दिया, हीरे, मोती, वस्त्र, अलङ्कार। शादी के बाजे बज उठे।

अलबेला ने डाका डालना छोड़ दिया। अब डाकूपुरी का नाम है बेलापुरी। बेलापुरी की रानी बेला है और राजा अलबेला।

इञ्जन

लेखक, श्रीयुत अमरनाथ 'महेन्द्र'

भक-भक करता इञ्जन आता।
धूएँ का बादल फैलाता॥
पानी पीता खाकर आग।
भाप बनी तब निकला भाग॥ १॥
डिब्बे बीस जुड़े हैं इसमें।
नर-नारी बैठे हैं जिसमें॥
बिस्तर बंडल ट्रङ्क अनेक।
भारी हैं सब एक से एक॥ २॥
सीटी गार्ड ने दी दो चार।
सभी मुसाफ़िर हुए सवार॥
सीटी इञ्जन ने तब दी।
भक-भक कर गाड़ी चल दी॥ ३॥
इञ्जन कितनी मेहनत करता।
देश-देश मुझको ले चलता॥
मैं भी मेहनत ख़ूब करूँगा।
जग की सेवा किया करूँगा॥ ४॥

चन्दा

लेखक, श्रीयुत कृष्णलाल वर्मा

अम्मा-अम्मा चन्दा आया।
तारों को पर सङ्ग न लाया॥
उजला-उजला दूध सरीखा।
मीठा होगा दूध सरीखा॥
चख लूँ ला दे थोड़ा मुझको।
कैसा मधुर बताऊँ तुझको॥
क्यों न शीघ्र ही तू है जाती?
बात समझ क्या तुझे न आती?
सीढ़ी रखकर ऊपर चढ़ जा।
एक कटोरा पूरा भर ला॥
यदि सीढ़ी छोटी है माता।
तो विमान क्या वहाँ न जाता॥
अगर न जाना तुझे सुहाता।
मैं भी तेरे पास न आता॥
बाबूजी से मँगवा लूँगा।
तुझे ज़रा सा भी ना दूँगा॥

लेखक, श्रीयुत वल्लभदास बिन्नानी "व्रजेश", मिर्ज़ापुर

नीचे कुछ प्रश्न दिये जाते हैं। इनके सही उत्तर निकालिए और अपने उत्तरों को अन्यत्र दिये हुए सही जवाबों से मिलाइए। सबका उत्तर निकालने का समय १० मिनट से १२ मिनट तक का है।

१—(क) एक शिकारी ने एक पेड़ पर, जिस पर दस चिड़ियाँ बैठी थीं एक चिड़िया बन्दूक़ से मारी तो बताओ अब उस पेड़ पर कितनी चिड़ियाँ बचीं।

(ख) एक धोती को सूखने में बीस मिनट लगते हैं तो पाँच धोतियाँ अगर एक साथ फैला दी जायँ तो कितना अर्सा लगेगा?

(ग) दो पेड़ों के बीच का फ़ासला २ फ़ुट है तो ५१ पेड़ों के बीच का फ़ासला कितना होगा?

(घ) चार ऐसे बटखरे बताओ जिसमे एक सेर से लेकर एक मन (४० सेर) की तौल हो जाय। तौल पूरी-पूरी होनी चाहिए।

२—बतलाइए—

(क) भारत के क्रमवार पाँच बड़े शहरों के नाम बताओ।

(ख) यहाँ किस शहर में सबसे अधिक गर्मी और किस जगह सबसे अधिक ठण्ड पड़ती है?

(ग) भारत का वह कौन-सा शासक हुआ जिसने गद्दी पर बैठने के पूर्व अपने पिता को क़ैद कर लिया और अपने भाई को मरवा डाला?

(घ) अकबर के दरबार के नवरत्न कौन-कौन थे? और उसका विवाह किसके साथ हुआ?

३—नीचे कुछ सही व ग़लत बातें लिखी जाती हैं उनका ठीक-ठीक पता लगाओ—

(क) जब हम स्वप्न देखते हैं तो वह देर तक मालूम होता है।

(ख) रेडियो में समाचार आने में अर्सा लगता है।

(ग) भूकम्प शेषनाग के साँस लेने से आता

(घ) सूर्य चौबीस घण्टे घूमता है।

(ङ) पृथ्वी पर कहीं न कहीं बराबर उजे रहता है।

४—(अ) नीचे कुछ प्रश्न हैं। इनके कई उत्तर ठीक उत्तर बतावें—

जूता इसलिए पहना जाता है।

(क) कि वह पाँव की हर एक बात से करता है।

(ख) क्योंकि आजकल का फ़ैशन है।

(ग) उससे पैर की शोभा बढ़ती है।

(आ) टहलने की आदत इसलिए डालनी चाहिए

(क) क्योंकि इससे मनोरञ्जन होता है।

(ख) बाहरी चीज़ें व भाँति-भाँति के से मुलाक़ात होती है।

(ग) स्वास्थ्यप्रद होता है।

(इ) सुबह स्नान इसलिए करना चाहिए—

(क) क्योंकि सोकर उठने से शरीर हो जाता है।

(ख) क्योंकि स्नान न करने से आलस्य निद्रा बनी रहती है।

(ग) शरीर में स्फूर्ति नहीं रहती।

(घ) शरीर व स्वास्थ्य के लिए हितकर होता है।

किये का फल

लेखक, श्रीयुत मथुराप्रसाद श्रीवास्तव

एक गाँव में धनीराम नाम का एक काछी रहता था। उसके खेत में ख़ूब तरकारियाँ पैदा होती थीं। हर एक तरह की तरकारी उसने अपने खेत में लगा रक्खी थी। उसी गाँव में एक कुम्हार रहता था। उसका नाम शेखशाह था। धनी और शेखशाह में बड़ी दोस्ती थी। शेखशाह मिट्टी के बरतन और खिलौने बड़े सुन्दर बनाया करता था। दोनों एक जगह उठते-बैठते थे। धनीराम का स्वभाव बहुत सीधा था। उसके सीधेपन के ही कारण अक्सर उसे लोग बनाया करते थे। लेकिन धनीराम उसका कभी बुरा न मानता था। वह बूढ़ों में बूढ़ा और लड़कों में लड़कों का-सा व्यवहार करता था।

एक दिन दोनों अपने-अपने काम-काज की बातचीत कर रहे थे। शेखशाह कहता था—"धनीराम, हमारे आजकल बरतन खिलौने कुछ बिकते नहीं" और धनीराम भी यही कहता कि मेरे खेत में बहुत तरकारी पैदा होती है, पर गाँव में बिक्री नहीं होती। बिना घर का काम नहीं चलता।

कुछ सोचकर शेखशाह ने धनीराम से कहा—"चलो, एक दिन दोनों आदमी शहर चलकर अपनी-अपनी चीज़ें बेचें।" धनीराम ने शेखशाह की बातों को मानते हुए कहा—"कहते तो तुम ठीक हो। अगर शहर चला जाय तो सचमुच बड़ा लाभ हो सकता है।"

शेखशाह ने कहा—"हमारी बात में फ़ायदा नहीं हुआ? जब कभी तुमने हमारी बात मानी तो फ़ायदा हुआ और जब मानोगे तब तुमको फ़ायदा होगा।"

धनीराम ने कुछ हँसकर कहा—"हँसी की बात छोड़ो। अगर चलने का इरादा हो तो साफ़-साफ़ बताओ।"

शेखशाह ने ज़ोर से कहा—"क्या मैं हँसी करता हूँ और भी तुमसे कभी हँसी की है या आज ही करूँगा?"

धनीराम ने कहा—"तो फिर बताओ कब चलोगे।"

शेखशाह—जब चलो, हमको क्या?

धनीराम—तो फिर तैयारी करनी चाहिए।

शेखशाह ने कहा—"तैयारी ही क्या करनी है, घर में सामान सब तैयार है ही। किराये पर एक ऊँट कर लेंगे। उसी में हम और तुम दोनों अपना-अपना सामान रख लेंगे और आधा-आधा किराया दे देंगे।"

धनीराम ने कहा—"तो फिर कहीं से एक ऊँट किराये पर ले आओ, उसी पर खुगीर लगाकर उसमें एक तरफ़ मैं तरकारियाँ रख लूँगा और दूसरी तरफ़ तुम्हारे बरतन और खिलौने रख लूँगा।" दूसरे दिन शेखशाह एक ऊँट किराये पर ले आया। उसके ख़ुगीर बाँधी गई। एक तरफ़ धनीराम ने अपनी तरकारियाँ लादीं और दूसरी तरफ़ शेखशाह ने अपने मिट्टी के खिलौने बर्तन भर लिये। धनीराम ऊँट की नकेल पकड़कर आगे-आगे चला और शेखशाह ऊँट के पीछे-पीछे। शेखशाह यह सोचता जाता था कि मेरे बर्तन बहुत हैं, धनीराम की तरकारी से दुगुने दामों में मेरे बर्तन बिकेंगे। यह सोच-सोचकर वह मन ही मन प्रसन्न हो रहा था।

कुछ दूर चले जाने के बाद शेखशाह ने देखा कि ऊँट अपनी गरदन मोड़-मोड़कर धनीराम की

तरकारी खाता जा रहा है। वह मन ही मन बहुत .खुश हुआ। उसको खाते हुए हम क्यों रोकें, फ़ायदा धनीराम का होगा और पाप हमको लगेगा। जिसके भाग्य में जितना होता है उतना ही मिलता है। धनीराम की तरकारी में जो .ज्यादा होगा और जो न बदा होगा वह न मेरी कोशिश से मिल सकता है और न किसी के दिलाने से मिल सकता है और जो उसको बदा होगा, जो उसका भाग्य का होगा वह कहीं नहीं जाता।

शेखशाह खोटी तबीयत का आदमी था। वह अनेक प्रकार की बातें सोचता जाता था और मन ही मन कहता जाता था—"बेवक़ूफ़चन्द चले हैं कमाने। तरकारी सब ऊँट बीच में खाये जाता है।"

शेखशाह समझता था कि मैं मज़े में हूँ। धनीराम की तो तरकारी है, उसे ऊँट खा सकता है। मेरे तो बर्तन हैं उन्हें कैसे खायगा।

ऊँट ज्यों-ज्यों तरकारी खाता जाता था, बर्त[illegible] नीचे की तरफ़ झुकते जाते थे। धीरे-धीरे जब त[illegible] कारी कम हो गई तो दूसरा तरफ़ का हिस्सा [illegible] दम भारी हो गया और धड़ाम से सड़क पर गि[illegible] जिससे शेखशाह के खिलौने और बर्तन सब चू[illegible] चूर हो गये।

यह देखकर शेखशाह को बड़ा क्रोध आय[illegible] लेकिन वह करता ही क्या। अपने इस नुक़सान [illegible] लिए अफ़सोस करने लगा।

ऊँट के तरकारी खा जाने से यद्यपि धनीरा[illegible] का बहुत नुक़सान हो गया था, फिर भी थोड़[illegible] बहुत तरकारी बच गई थी। शहर पहुँच[illegible] धनीराम ने तरकारी बेच ली और कुछ दाम व[illegible] भी कर लिये, पर शेखशाह का तो एक भी ब[illegible] समूचा न बचा था जिसे वह बेच लेता। वह खा[illegible] हाथों घर लौटा।

पृष्ठ १०८ पर छपे प्रश्नों के उत्तर

१-(क) एक भी चिड़िया नहीं बची-क्योंकि बन्दूक की आवाज़ सुनकर और सब चिड़ियाँ वहाँ से उड़ गईं।

(ख) बीस ही मिनट लगेगा।

(ग) १०० .फ़ुट।

(घ) एक बटखरा एक सेर का, दूसरा तीन सेर का, तीसरा नौ सेर का और चौथा सत्ताइस सेर का होना चाहिए।

२-(क) कलकत्ता, बम्बई, मद्रास, दिल्ली, लाहौर।

(ख) जकोबाबाद व गुलमर्ग।

(ग) औरङ्गज़ेब।

(घ) बीरबल, टोडरमल, अबुलफ़ज़ल, फ़ैज़ी, तानसेन, मानसिंह, अब्दुलरहीम खानखाना (रहीम कवि)।

अकबर का विवाह राजपूत राजा भगवानदास की बेटी से हुआ।

३—(क) झूठ। घटनाओं को देखते हुए तो स्वप्न काफ़ी देर तक दिखते हुए मालूम पड़ते हैं—पर वास्तव में कोई भी स्वप्न एक-दो मिनट [illegible] अधिक नहीं रहता।

(ख) झूठ। रेडियो की तरङ्गें १८५००० [illegible] प्रति सेकेंड चलती हैं अतः कुछ भी समय नहीं लगत[illegible]

(ग) झूठ। वैज्ञानिकों का यह कहना है कि [illegible] पानी ज़मीन के अन्दर जाता है तो फिर वह स[illegible] पाकर नीचे की गर्मी से भाप होकर पृथ्वी को ध[illegible] देकर ऊपर आता है। इसी से भूकम्प आता [illegible]

(घ) झूठ। सूर्य अचल है।

(ङ) सच। चूँकि पृथ्वी घूमती है [illegible] उसका जो भाग सूर्य के सामने आता है वहाँ उजाला रहता ही है।

४—(अ) क्योंकि वह पाँव की हर एक बात [illegible] रक्षा करता है।

(आ) स्वास्थ्यप्रद होता है।

(इ) शरीर व स्वास्थ्य के लिए हितकर होता [illegible]

लेखक, श्रीयुत 'अनन्य' विशारद

[illegible] ग्राम में रहता ठाकुर एक निठल्ला।
[illegible]भाव के कारण घर नित होता हल्ला॥
[illegible] रोज़ ठकुराइन उसकी बोली झल्ला।
"[illegible]वर सब बिक गये हाथ में रहा न छल्ला।"
[illegible]र को चुभ गई बात यह ठकुराइन की।
[illegible] रोज़ चल दिये कमाने पूरे पिनकी।
[illegible] ले लीं साथ ज़रूरत थी जिन-जिनकी।
[illegible], लोटा, डोर, अमल ले ली दो दिन की।
[illegible] हुई तब पास गाँव का नाम नहीं था।
[illegible] का इक पेड़ कुएँ के पास वहीं था।
[illegible] पेड़ के तले डालकर झोली-झण्डा।
[illegible] में से बीन लिये कुछ लकड़ी-कण्डा।
[illegible]गाई तब आँच, पिया कुछ पानी ठण्डा।
[illegible] अफ़ीम, भर चिलम, सँभल बैठे ले डण्डा।
[illegible] अँधेरी बादल छाये आसमान में।
[illegible]र होकर मस्त लीन हो गये गान में।
[illegible] बरगद में रहता था इक दानव काना।
[illegible] रात्रि को उतर लगा वह सुनने गाना।
[illegible]र बोला 'कौन ?' मिला उत्तर 'मैं दाना'।
[illegible]र ने भी कड़क कहा—"मैं तेरा नाना"।
[illegible] जोड़कर, दानव बोला "सेवक मैं तो।
[illegible] पावें श्रीमान यहाँ ही यदि खोदें तो।"
[illegible]र बोला अकड़ "कौन खोदेगा कह तो।
[illegible] समझा है मुझे, ज़रा ठहरा तू रह तो"।

"भूल हुई", दानव बोला—"खोदूँगा मैं ही।
चलिए घर है कहाँ वहीं रख दूँगा मैं ही।
भेजूँगा प्रति मास नाज भी अवसे मैं ही।
धन भी दूँगा और, चार चरवे ये हैं ही।"
मिला एक दिन उस दानव को उसका साला।
पूछा—"क्यों है रङ्ग पड़ा चेहरे का काला ?"
भय से चारों ओर दनुज ने देखा भाला।
कह डाला फिर सारा क़िस्सा नाना वाला।
साले ने हँस कहा—"आप धोखे में आये।
इक अफ़ीमची से ही तुम इतना डर खाये।
मैं जाता हूँ मगर द्वार तो बन्द पड़े हैं।
बिल्ली बनकर घुसूँ काम कब रुके अड़े हैं।"
ठाकुर के घर उधर एक बिल्ली आती थी।
दूध-दही वह नित्य सफ़ाचट कर जाती थी।
ठीक जिस समय पहुँचा वह दानव का साला।
खींचा फाँसा ठकुराइन ने उस पर डाला।
डण्डे ताबड़तोड़ लगे, देखा ना भाला।
चिल्लाया—"यह तो मैं हूँ काने का साला।
दूँ अनाज या आटा, यही पूछने आया।
जिसकी सज़ा अनेकों मैंने डण्डे पाया।"
ठकुराइन ने भौंह चढ़ाकर ऐसा डाँटा।
"पीसेगा रे कौन ? भेजना होगा आटा।"
जीजा के जा पास काम को ऐसे बाँटा।
"देना आप अनाज पिसा दूँगा मैं आटा।"

प्रार्थना

लेखक, श्रीयुत मधुरमोहन अवधिया 'विक्रम'

सुनो प्रार्थना हे भगवान्।
मुझे बना दो वीर महान्॥
हो न भले विद्या, धन, मान।
बनूँ देश की पर सन्तान॥

भारत माँ की रक्खूँ शान।
करूँ बड़ों का मैं सम्मान॥
रखूँ देश का मैं नित ध्यान।
यह हो पूजा, यह हो ध्यान॥

सतर्क, चालाक और गुनतीं आदि की ख़िताब ख़ासकर एक ही जाति को विशेष प्राप्त है। उसे सभी जानते हैं। इन्हीं में से ला० चमनलाल पैदायशी थे, फिर पैसा इकट्ठा करने में उन्हें क्या देरी? पर उनके रुपये इकट्ठे करने का एक अजीब ही तरीक़ा था जो उनकी विशेष बुद्धिमत्ता का परिचय था। लालाजी अभी अधेड़ भी नहीं हुए थे कि उनकी रूपवती लड़की 'शामी' ब्याहने योग्य हो गई। चिन्ता माता-पिता को होनी चाहिए। पर रोज़ दरवाज़े पर एक से एक मेहमानों की भीड़, लड़की को देखने, ब्याहने को लगी रहती, जिससे लालाजी की लड़की की शादी की फ़िक्र, पैसे कमाने की फ़िक्र में बदल गई। अब उन्हें सूझा—लड़की के ज़रिए इन सब गंजों को लूटा जाय और जीवन भर के लिए कमाया जाय। बस, यही काम शुरू हुआ। एक-दो महीने और तीन-चार साल बीते, लड़की की शादी न हुई और न जाने कितनों से रुपया ले शादी का ख़र्च जमाकर टाँगा दे भगा भी दिया। काफ़ी रुपया जमा हो गया होगा।

बहुत दिनों से लालाजी की दृष्टि शहर के बड़े अमीर कलाल के लड़के पर लगी थी, जो हाल ही में बाहर किसी 'विश्वविद्यालय' से आया था। कलाल को भी लड़के की शादी की चिन्ता थी, फिर पढ़े-लिखे लड़के के लिए होनी भी उसी की योग्य और पसन्द की चाहिए। लड़के को भी 'शामी' युवती पसन्द आई। सचमुच वह सुन्दरी थी, पर लालाजी ने अपना अड़ङ्गा सामने रक्खा—रिश्तेदार मेरे राज़ी नहीं, पर यदि पहले शादी का पूरा ख़र्च और बारात के साथ न कम न ज़्यादे, ठीक सौ जवान हों, न बूढ़े न बच्चे, बस जवान। इस पर लोग कुछ घबड़ाये अवश्य, पर बूढ़े कलाल के कानों में जब बात पड़ी तो उसने सबको लल- ला जायगा, घबड़ाओ नहीं।

शादी का दिन आया। सौ जवान तैयार [illegible] पूरे एक सौ। बूढ़े कलाल ने भी अपने को एक स[illegible] में छिपा उनका साथ दिया। वह भी छिप[illegible] चला लड़की के घर। बड़ी धूम-धाम थी लाला[illegible] के घर। अच्छा स्वागत हुआ बारात का। रात [illegible] बजे ठीक मुहूर्त्त के वक्त लालाजी ने बीच में [illegible] अपनी ख़ास शर्त रक्खी—आप जानते हैं मैं य[illegible] रिश्तेदारों की इच्छा के विरुद्ध यह शुभ कार्य [illegible] रहा हूँ, पर वे अब एक शर्त पर राज़ी हैं। जब [illegible] पूरी हो सकेगी तभी मैं लड़की दूँगा और वह [illegible] है—"हम सौ जवानों के लिए, सौ पसेरी खा[illegible] भेजेंगे। उसे यहीं खाना होगा, नहीं तो—। बेच[illegible] जवान घबड़ाये हुए दौड़े सन्दूक़ के पास और [illegible] हाल बूढ़े कलाल को जा सुनाया। बूढ़े ने उन्हें हौस[illegible] दिया, और हँसा—"यही है लड़कों की बात! घ[illegible] ड़ाओ नहीं, सब ठीक होगा। हाँ, कह दो, भेजो [illegible] अपने पास ले आना, सब बीच में आग जला[illegible] चारों ओर बैठ जाना, और फिर मुझे पूछना।"

सौ जवानों के चेहरों पर ख़ुशी नाच र[illegible] थी, और दुलहा बस, फूला नहीं समाया। [illegible] के कुप्पा बना जाता था। खाना आया; बीच [illegible] धूनी रमा चारों ओर सौ जवान बैठे, और [illegible] बूढ़े के पास चुपके दौड़ा। उत्तर मिला—"एक-[illegible] पसेरी की रोटी बनाओ, फिर उसको बाँटकर खाना [illegible] इसी तरह एक, दो, दस, बीस और पूरी सौ पसे[illegible] ख़तम हो जायगी।" उन्होंने ऐसा ही किया। सुब[illegible] सब साफ़। अब लाचार होकर बेचारे लाल[illegible] लाला चमनलाल को अपनी एकमात्र कन्या 'शामी' [illegible] शादी बिरादरी को छोड़, जाति से बाहर कलाल के पु[illegible] के साथ करनी पड़ी। ख़ुद बिरादरी से अलग होना पड़ा [illegible] यह नफ़े की रही, और चालाकी का फल मिला [illegible]

[illegible] और पक्षियों के बारे में कोई बात [illegible] बड़ा शौक़ है। मैंने ख़रगोश, कबूतर, [illegible] तरह-तरह की रङ्ग-बिरङ्गी चिड़ियाँ—[illegible] और कुत्ते इत्यादि पाले हैं। [illegible] अनेक नई बातें मालूम की हैं। पर [illegible] बात मुझे कौवों में दीख पड़ी है। इससे [illegible] किसी भी कौवे को किसी भी मनुष्य के [illegible] नहीं देखा। पर एक दिन मैं अपने मकान [illegible] खड़ा था। प्रातःकाल कोई आठ [illegible] समय होगा। क्योंकि बम्बई में जाड़ा [illegible] नहीं होता [illegible] की वायु [illegible] अच्छी लगती [illegible] इसलिए ऊपर [illegible] समुद्र का [illegible] भी ले रहा [illegible] घर के [illegible] पार्क है। [illegible] एक बड़ा [illegible] समय मैंने [illegible] कि उस पेड़ [illegible] कौवे बैठे हैं और ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला [illegible] जैसे कि कोई किसी के आने की राह [illegible] हो।

कौवों को भी अपने बच्चे प्यारे होते हैं।

पार्क के पास ही यहाँ का बन्दरगाह है। [illegible] को हज़ारों की संख्या में मज़दूर वहाँ काम [illegible] जाते हैं। उन मज़दूरों में से एक मज़दूर, जिसका [illegible] होकर है, रोज़ उस पेड़ के नीचे से होकर जाता है। वर्ष में या तो रविवार को या छुट्टी के दिन और अगर कभी बीमार पड़ जाता तभी वह ग़ैरहाज़िर होता था, नहीं तो रोज़ ही मैं उसको देखता हूँ।

वह अपने साथ काग़ज़ में खाने की कोई चीज़ लाता है। उसको देखकर दूर से ही कौवे शोर मचाना शुरू कर देते हैं और वह पेड़ के नीचे कोई आधा मिनट खड़ा होता है। चारों तरफ़ से कौवे उसे घेर लेते हैं। कोई-कोई तो उसके हाथ पर भी बैठ जाता है और वह आध मिनट के बाद हाथवाली चीज़ नीचे गिरा देता है। वह फिर वहाँ नहीं रुकता और कौवे उस वस्तु को एक दम खा-पीकर उड़ जाते हैं। थोड़ी ही देर में फिर एक भी कौवा दिखलाई नहीं पड़ता है।

इस मनुष्य से मिलने की मेरी बड़ी इच्छा हुई। उसने बताया कि मैं दस वर्ष से रोज़ ही इन्हें खिलाता हूँ। मैंने कभी इन्हें हानि नहीं पहुँचाई। ये मुझसे नहीं डरते, और मुझे पहचानते भी हैं। यह सुनकर मैं सोचने लगा कि क्या कौवे भी मनुष्य को पहचानते हैं।

लेखक, श्रीयुत चन्द्रबली सिंह, बी० ए०

'बाल-सखा' के अधिकांश पाठक सारनाथ के नाम से परिचित होंगे। बहुतों ने सारनाथ की यात्रा भी की होगी। सारनाथ भारतवर्ष का बहुत ही प्राचीन स्थान है। आज से ढाई हज़ार वर्ष पूर्व महात्मा बुद्ध ने यहाँ आकर अपने मत का प्रचार किया था। क़रीब छः सौ वर्ष तक इस स्थान को लोग नहीं जानते थे। १८वीं सदी से यह स्थान फिर दिन पर दिन अपनी प्राचीन मर्यादा को ग्रहण करता जा रहा है।

सारनाथ नाम क्यों पड़ा? प्राचीन युग में सारनाथ को ऋषिपतन या मृगदाव नाम से पुकारा जाता है। फ़ाह्यान का कहना है कि एक भिक्षु ने यहाँ निर्वाण पाया था। इसी से इसका नाम ऋषिपतन पड़ गया। दूसरी कहानी कुछ मज़ेदार-सी है। कहते हैं, अपने किसी जन्म में बुद्ध भगवान् मृगों के राजा थे। उनके मृग जङ्गल में इधर-उधर घूमा करते थे। बनारस के राजा बड़े शिकारी थे और इन मृगों का शिकार किया करते थे। यह बात मृगों के राजा को अच्छी नहीं लगी। अतएव उन्होंने राजा से यह तै कर लिया कि वे मृगों का शिकार न करेंगे और उनकी सेवा में एक मृग रोज़ भेज दिया जायगा। राजा इस बात पर राज़ी हो गये और उनके पास एक मृग रोज़ जाने लगा। एक बार एक मृगी की बारी आई। वह गर्भवती थी। उसने मृगों के राजा से अपनी रामकहानी कह सुनाई और कहा कि मुझे राजा के पास जाने में ज़रा भी डर नहीं है, किन्तु एक निरीह और अजात शिशु की हत्या का पाप होगा। मृगों के राजा ने इस बात को ध्यान से सुना और फिर प्रसन्नचित्त काशी के राजा के पास पहुँचे। राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने बोधिसत्त्व से उनके आने का कारण पूछा। बोधिसत्त्व ने सारा सुना दिया। यह सुनकर राजा को बड़ा हुआ। उन्होंने तुरन्त ही कहा—"मनुष्य में मैं मृग हूँ और मृग के भेस में आप मनु मृग का शिकार उसी दिन से बन्द हो गया मृग स्वच्छन्दतापूर्वक विहार करने लगे। कहा जाता है कि सारनाथ सारङ्गनाथ से जिसका अर्थ होता है 'मृगों के राजा'। सार शिव को भी कहा जाता है। इसका प्रमा वहीं स्थित शिव का एक मन्दिर भी है।

सारनाथ पहुँचने के पहले ही एक ऊँ मिलता है जिसे चौखण्डी कहते हैं। इस चौ
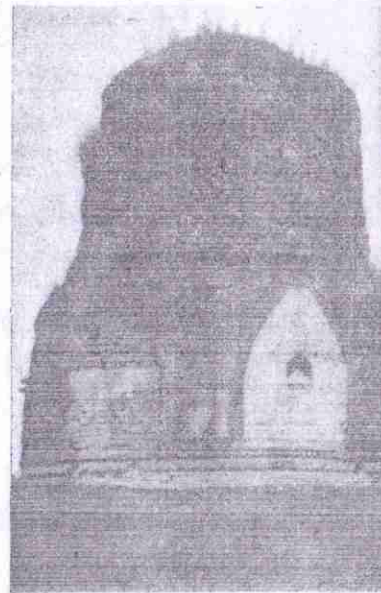
सारनाथ का स्तूप

के ऊपर चढ़ जाने पर चारों तरफ़ का दृश्य ही सुन्दर दिखाई देता है। बनारस में औ की बनाई मसजिद की दो मीनारें ऐसी स दिखाई पड़ती हैं मानों दोनों एक हों।

सारनाथ में जैन और बौद्ध मन्दिर भी बन गये जो बहुत ही सुन्दर हैं। वहाँ से बहुत-

सारनाथ में मूलगन्ध कुटी विहार, बनारस

र्तियाँ वग़ैरह निकली हैं। किसी भी यात्री वहाँ जाने पर इन भग्नावशेषों को अवश्य ा चाहिए। इन्हें देखने से प्रत्यक्ष विदित हो है कि सारनाथ किसी समय एक सुन्दर स्थान यह बौद्ध धर्म का केन्द्र था और अपनी शिक्षा सभ्यता के लिए प्रसिद्ध था। अशोक की लाट अग्रभाग यहीं पड़ा हुआ है। पत्थर की ड़ी चट्टानों से मालूम पड़ता है कि यह स्थान मण्डप का काम देता था। कन्नौज की रानी देवी का मठ अपने ढङ्ग का निराला ही बना है। एक मठ में तो सुरङ्ग का रास्ता बना है। इसके अन्दर जाने से बड़ा आनन्द ा है।

चीनी यात्री फ़ाह्यान का कहना है कि उसके में सारनाथ में दो मठ थे, जहाँ भिक्षु रहते ह्वेन-चाँग का कहना है कि उसके समय में डेढ़ हज़ार भिक्षु वहाँ रहते थे। उसका उल्लेख है—वहाँ एक सुन्दर मन्दिर भी था जिसमें बुद्ध भगवान की एक बड़ी विशाल मूर्ति थी और वहीं पर अशोक का एक स्तम्भ भी था। इस वर्णन से साफ़ मालूम होता है कि बीचवाला मठ ही वह मठ है।

स्तूप उस समय की प्राचीन यादगार हैं। मिस्र के पिरामिड की तरह ये स्तूप भी स्मृति में ही बनाये गये। धमेख स्तूप एक बहुत ही ऊँचा स्तूप है। इसमें बुद्ध भगवान् की हड्डियाँ वग़ैरह रखकर बनाया गया है। स्तूप के ऊपर तरह-तरह की कारीगरी दिखाई गई है। उस पर भी बुद्ध भगवान् के जीवन-चरित्र का वर्णन बना है। धर्म-चक्र का चलाना हर जगह दिखाया गया है।

सारनाथ की मूर्तियों और स्तूपों तथा अन्य भग्नावशेषों से यह विदित होता है कि भारत की शिल्प-कला और पच्चीकारी कितनी उन्नति पर थी।

सारनाथ की सारी वस्तुयें और वैभव अपने ढङ्ग पर बराबर चला आया। समय काफ़ी बीत

चुका है फिर भी सारनाथ को देखने से मालूम पड़ता है कि इसकी दुर्दशा समय के साथ-साथ
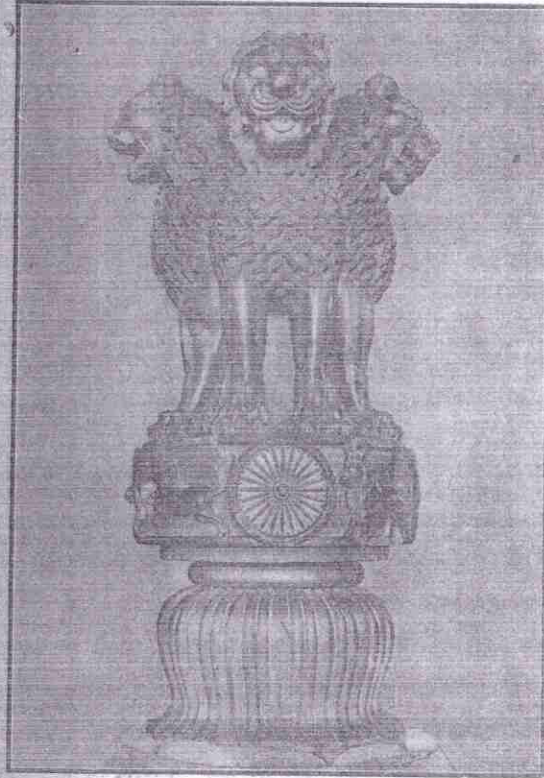
सारनाथ में अशोक के स्तम्भ का ऊपरी भाग

विदेशी आक्रमणकारियों ने की। उन्होंने बहुत-से स्थान जला दिये और बहुत-सी मूर्तियाँ तोड़ डालीं।

बाल-सखाओं को चाहिए कि वे अपनी के अवसर पर सारनाथ अवश्य जायँ औ जाकर उसके वर्तमान तथा प्राचीन स्मार देखें। यह भी देखें कि प्राचीन समय मे की क्या दशा थी, अब क्या हो गई है। आप पढ़ते हैं। सारनाथ जाकर देखिए। आप
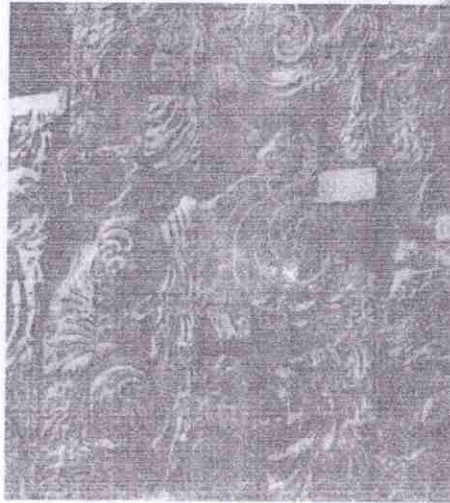
सारनाथ की पुरानी सङ्गतराशी का एक नमूना।

मानें, आपको सच्चा इतिहास पढ़ने को मिलेगा। पाठ को आप कभी भूल न सकेंगे। आपके हृदय इसकी अमिट छाप पड़ जायगी। आपको यह म हो जायगा कि जिस बौद्ध धर्म का अवशेष ऐसा है, उसका जीवित रूप क्या रहा होगा?

विद्यालय को

लेखक, श्रीयुत शान्तिनन्दन, एम० ए०

हुआ सवेरा किरणें आई।
पढ़ने की शुभ वेला आई॥
.खुश-.खुश लड़के दिये दिखाई।
पट्टी-पोथी सभी उठाई॥
कपड़े पहने सुन्दर उजले।
अपने-अपने घर से निकले॥

बड़ी .खुशी के साथ उछलते।
हिल-मिल बातें करते चलते॥
लो, विद्यालय वह अब आया।
शान्त भाव सबने दिखलाया॥
नाम ईश का सबने गाया।
तब गुरु को निज पाठ सुनाया॥

एक आविष्कारक ने ऐसा आविष्कार ईजाद किया है कि एक केमरे से एक फोटो लेने पर कई अवस्थाओं का फोटो आ जाता है।

× × ×

एक वैज्ञानिक ने ऐसा आईना तैयार किया जो बोलता है। यह किसी चीज़ का विज्ञापन करता है।

× × ×

एक विश्वविद्यालय के एक अध्यापक ने ऐसा मीटर बनाया है जो आनेवाले दिन का ताप बता सकता है।

× × ×

संसार की कुल भाषायें ७२०० हैं जिनमें ... भाषायें बोली जाती है। शेष मृत भाषायें २७०० में से अँगरेज़ी भाषा मुख्य है। अँगरेज़ी बाद चीनी भाषा सबसे .ज्यादा बोली जाती है।

× × ×

रेवरेंड इरविन मून नामक उपदेशक जब व्याख्यान देता है तो अँगुलियों में ऐसे दस्ताने पहन लेता है जिनसे व्याख्यान देते वक्त अँगुलियों में आग निकलती दिखाई पड़ती है।

× × × ×

मेडागास्कर के पास जुआनडीनोबा नामक में कुत्तों का राज्य है।

× × × ×

ब्रिटेन में पुलिस की टोपी पर वायरलेस सेट रहता है, जिससे पुलिस को बाहर की खबरें अफ़सरों की आज्ञा सुनने में आसानी हो गई है।

× × × ×

अमरीका के नेशनल पार्क में ३९ हज़ार साल पुराना वृक्ष है। उसकी जड़ों का व्यास ३५ फ़ीट व उँचाई २०० फ़ीट है। इसकी लकड़ी ३० रेल के डिब्बों में भरी जा सकती है।

× × × ×

.फ्रांस के एक वैज्ञानिक ने ऐसे नक़ली बादल बनाये हैं जो सारे पेरिस शहर को १५ मिनट में ढक लेते हैं। हवाई आक्रमण होने पर सारे बादलों द्वारा गगन को छा लेते हैं।

× × × ×

आजकल गाजर बहुत आ रहा है। जब हम गाजर खाते हैं तब जीभ और मुँह नीला पड़ जाता है। हाथ भी नीले अथवा बैंगनी हो जाते हैं। परन्तु यदि ऊपर से नीबू खाइए अथवा हाथ पर नीबू का रस लगाइए तो फ़ौरन् ही लाल-सा हो जायगा। तब फिर साबुन से हाथ धोने पर नीले के नीले हो जायँगे। इसका कारण यह है कि क्षार से तो रस नीला और अम्ल से लाल हो जाता है। पीली हल्दी साबुन लगाने पर लाल हो जाती है।

× × × ×

जाड़े में सर्द मुल्कों में पानी जम जाता है। पर जीव-जन्तु क्यों नहीं मरते? इसका कारण यह है कि पानी की केवल ऊपरी सतह ही जम पाती है। बाक़ी पानी तरल ही रहता है। चाहे कितनी ही सर्दी क्यों न पड़े, १४° सी० से कम ताप होने पर ठण्डा पानी हल्का होता जाता है और हल्का पानी नीचे नहीं जाता और ऊपर से ही जमकर रह जाता है। इस लिए नीचे का पानी तरल ही रहता है।

बर्फ़ यद्यपि पानी से ठोस होता है पर पानी से हल्का होता है और यदि एक गिलास का पानी जमा दिया जाय तो बर्फ़ गिलास से अधिक बनेगा और यही कारण है कि बर्फ़ पानी पर तैरता है।

—देवेन्द्रकुमार

सुनहला प्रातःकाल था। पूरब में लाल गेंद-सा सूरज निकल रहा था। रात की ओस हरी-हरी घास पर मोतियों-सी मालूम होती थी। वृक्ष तथा फूलों पर पड़ी ओस पर जब उगते सूर्य की किरण पड़ती तो मालूम होता कि चाँदी का चमकदार वर्क़ लगा है। हर पेड़ से चिड़ियाँ फुदक-फुदककर चहचहा रही थीं। मक्खियाँ यहाँ-वहाँ उड़कर भनभनाने लगी थीं। यह सब देखकर तितली बेचारी से न रहा गया। वह भी उड़-उड़कर फूलों से खेलने लगी।

उसी बग़ीचे में एक बड़ी सुन्दर तितली रहती थी। उसके बड़े-बड़े काले पङ्खों पर कहीं-कहीं सफ़ेद कहीं पीले-सुनहले निशान बने थे, जो देखने में बड़े सुन्दर लगते। वह बड़ी शान से उड़ती-उड़ती एक नीले फूल के चारों ओर मँडराने लगी। उसका नाम परिमल था।

वह उसी नीले फूल पर बैठ गई। पर पीछे-से ध्वनि कैसी? मालूम हुआ जैसे पीछे से कोई धीरे-धीरे आ रहा है। तितली ने मुड़कर देखा एक लड़का था। यह लड़का अवश्य ही उस बेचारी परिमल को तङ्ग करने आ रहा है। पाँव के नीचे पड़े हुए फूलों को वह लड़का बड़ी निर्दयता से कुचल देता था। उस लड़के को देखकर परिमल एकाएक डर गई। वह न तो भाग सकी, न उड़ सकी। वह इतनी डर गई थी कि उसका शरीर जैसे अकड़ गया हो। परिमल समझ गई कि अब उसका जीवन बहुत थोड़ा है। वह अब मार डाली जायगी, क्योंकि वह लड़का उसी ओर धीरे-धीरे बढ़ रहा था। उसके हाथ में एक छड़ी थी जिसके एक सिरे पर एक जाल बँधा था। जब लड़का बिल्कुल पास आ गया था तो परिमल ने समझ लिया कि अवश्य ही बालक उसे पकड़ने को आ रहा है। अन्त में उस बा[लक ने] उसके ऊपर जाल रख ही दिया। वह [बेचारी] फँस गई। वह रोती हुई बालक से बो[ली]— 'मुझे इतनी जल्दी मत मारो, मुझे छो[ड़ दो।] मैं आज पहली बार इस बग़ीचे में आई थी [और] आज बहुत ख़ुश थी। कृपा करके मुझे छोड़ [दो।] तुम मुझे मारकर क्या पाओगे, बल्कि प्रकृ[ति की] सुन्दरता ही नष्ट कर दोगे।

महेन्द्र ने परिमल को पकड़ लिया औ[र] अपने हाथों में दबा लिया। इस समय [उस] का चेहरा ख़ुशी से खिला हुआ था [क्योंकि] परिमल उन सभी तितलियों से अधिक सुन्दर [थी] जिन्हें उसने पहले पकड़ा है।

महेन्द्र ने उत्तर दिया—"तुमको मैंने अब [पकड़] लिया है। अब तुम्हें मैं अपने तितलियों के [बक्स] में पिन से जड़ दूँगा और सभी मित्रों को दिखाऊँगा।"

यह शब्द सुनकर परिमल काँप गई। [उसके] होश उड़ गये। उसने भगवान् से मनाया कि [इस] विपत्ति के पहले ही वह मर जाय तो अच्छा। उसने सोचा अवश्य ही पिन अब उसकी पी[ठ में] चुभाई जायगी।

"अरे भगवान," वह रोकर बोली—"[मुझे] मृत्यु दो; मेरे ऊपर दया करो।"

तभी ज़ोरों से जाल उसके ऊपर से उठा [और] झट परिमल निकलकर भागी। बात यह थी [कि] महेन्द्र की छोटी बहन सरला दौड़ती हुई बाग़ [में] आई और बोली—"महेन्द्र, तुम यहाँ क्या कर[ते] हो—बाबू तुम्हें कितनी देर से ढूँढ़ रहे हैं। अभी चाय भी नहीं पी न।"

"[अरे] सरला," महेन्द्र चिल्लाया—"जल्दी आओ, [देखो] मैंने क्या पकड़ा है।"

[सरला] [ते]ज़ी से दौड़कर वहाँ आई और देखा— [जाल में बेचा]री परिमल क़ैद थी। वह अपना पङ्ख फड़फड़ा [रही] थी।

"तुम बड़े ख़राब हो।" कहकर सरला ने महेन्द्र का हाथ हिला दिया और परिमल उड़ गई।

इस तरह परिमल वहाँ से भागकर एक वृक्ष पर जा बैठी। वह महेन्द्र के जाल से छूटकर बड़ी ख़ुश हुई।

सोते फूल

लेखक, श्रीयुत राधेश्याम अग्रवाल

[आ]ती जब रात चाँदनी।
किरण फैल हैं जातीं॥
[चाँ]दी की सो चादर को हैं।
धरती पर फैलाती॥

[म]न आता है मेरे जी में।
निकल बाग़ में जाऊँ॥
[खे]लूँ सोते फूलों के सँग।
पास में उन्हें जगाऊँ॥

पर माँ कहती, 'नहीं रात में।
फूलों के ढिग जाते॥
तुम तो दिन में सो सकते।
पर फूल न सोने पाते॥

[ब]हुत थक गये हैं बेचारे।
दो उनको तुम सोने॥
जिससे वे खिल सकें सवेरे।
सुन्दर फूल सलोने॥'

मेरी मा

लेखक, श्रीयुत देवीराम, जी० पी० आर०, सिहावा

मुझको सब से बढ़कर माता।
मुझे झुलाती मुझे हँसाती।
मुझे छोड़ वह कहीं न जाती॥
देख उसे मैं नित हर्षाता।
मुझको सबसे बढ़कर माता॥
मुझे सुलाती मुझे जगाती।
गोदी में ले मुझे खिलाती॥
सभी तरह से मैं सुख पाता।
मुझको सबसे बढ़कर माता॥
रात और दिन एक बनाती।
दौड़-दौड़कर वैद्य बुलाती॥
रोग अगर हो मुझे सताता।
मुझको सबसे बढ़कर माता॥
नये-नये कपड़े बनवाती।
खेल-खिलौने ख़ूब मँगाती॥
मेरा मन उनमें लग जाता।
मुझको सबसे बढ़कर माता॥
चाहे विपदा सिर पर आती।
मुझे देख वह ख़ुशी मनाती॥
मा-बेटे का प्यारा नाता।
मुझको सबसे बढ़कर माता॥

बड़े लोगों का बचपन

गाउस

लेखक, श्रीयुत देवेन्द्र शर्मा, एम० एस-सी०

शनिवार की सन्ध्या थी। सूरज छिपने जा रहा था। एक आदमी पेड़ के नीचे बैठा मज़दूरों की हफ़्ते भर की मज़दूरी का हिसाब लगा रहा था। उसे यह पता न था कि उसका ढाई-तीन वर्ष का लड़का पास ही बैठा हुआ है। हिसाब कर लेने पर पिता ने चकित होकर बच्चे को कहते सुना—'पिताजी, हिसाब ग़लत है।' और जाँच करने पर मालूम हुआ कि बच्चे का कहना ठीक था।

मालूम है यह बच्चा कौन था? यह जर्मनी के एक किसान का लड़का था, और आगे जाकर गणित का एक बहुत बड़ा विद्वान् हुआ। इसका नाम गाउस था।

जब वह सात वर्ष का हुआ तो उसे पाठशाला भेजा गया। मास्टर साहब की मार से लड़के इतने थर्राते थे कि कभी-कभी वे अपने नाम भी भूल जाते। पहले दो वर्ष में बालक ने कोई विशेषता न दिखाई। दस वर्ष का होने पर उसने हिसाब पढ़ना शुरू किया। एक दिन मास्टर साहब ने एक लम्बा-सा जोड़ का सवाल दिया। वह कुछ इस तरह था।
८१२९३+८१४९१+८१६८९+ ··· +१००८९५
यहाँ सौ संख्याओं को जोड़ना है, और हर संख्या अपने पहले वाली से १९८ अधिक है।

स्कूल का क़ायदा था कि सबसे पहले सवाल कर लेनेवाला अपनी स्लेट को उलटकर मास्टर साहब की मेज़ पर रख देता था। दूसरा लड़का अपनी स्लेट पहली स्लेट के ऊपर रखता; औ तीसरा, चौथा इत्यादि इसी तरह करता। म साहब अभी सवाल को पूरा भी न कर पाये बालक गाउस स्लेट को मेज़ पर रखते हुए बो 'यह लीजिए।' और लड़के घण्टे भर तक रहे। उधर मास्टर साहब बीच-बीच में इस छोटे लड़के को घूर लेते थे। वे समझते थे सबसे मूर्ख है।

घण्टे के अन्त में जब स्लेटें देखी गई गाउस की स्लेट पर केवल एक संख्या थी, वही सही उत्तर था और सब के उत्तर ग़लत इस तरह के जोड़ों के करने का एक ख़ास त है। एक बार जान लेने पर वह बहुत आसा जाता है। पर अभी तो मुझे वह तरीक़ा याद आ रहा है। क्या कोई छोटा भाई पता ल बतावेगा।

मास्टर साहब को अपने शिष्य की यो पर बड़ा अचरज हुआ, और ख़ुशी भी। किसी से सीखे हुए उसने वे संख्यायें जोड़ द अब मास्टर साहब कम से कम अपने एक पर दयालु हो गये, और उसकी आगे की पढ़ सहायता दी। बड़ा होने पर गाउस कहा था कि उसने बोलना सीखने से पहले हि सीखा था।

माँ को अपने लड़के से बहुत आशा थी

१९ वर्ष का था तो एक दिन माँ ने उसके एक ी से पूछा कि क्या उसका लड़का कुछ कर गा। साथी ने उत्तर दिया—"योरप का सबसे गणित का विद्वान् होगा।" और ख़ुशी के माँ के आँसू निकल पड़े।

एक दिन बैरन हम्बोल्ट ने फ़्रेञ्च गणितज्ञ काउंट लाप्लास से पूछा—"जर्मनी का सबसे बड़ा गणित का विद्वान कौन है?"

लाप्लास ने उत्तर दिया—"फ़फ़।"

"और गाउस?" हम्बोल्ट ने पूछा।

"ओह," लाप्लास बोला—"वह तो संसार का सबसे बड़ा गणितज्ञ है!"

चिड़ियाँ

लेखिका, श्रीमती प्रेमलता श्रीवास्तव

बहुत सबेरे उठकर चिड़ियाँ।
अपना गीत सुनाने लगतीं॥
मेरे घर में आ-आ करके।
वे हैं मुझे जगाने लगतीं॥
इनके मीठे गीतों को सुन।
भला कौन फिर सो सकता है॥
इनकी चूँ-चूँ को सुन करके।
सारा जग झट-पट जगता है॥
ये चिड़ियाँ हैं बड़ी सलोनी।
सारे जग से ये न्यारी हैं॥
दिन भर घर में आती रहतीं।
मुझे बहुत ही वे प्यारी हैं॥

क्या ?

लेखक, श्रीयुत निरङ्कारनाथ अग्रवाल, प्रयाग

माँ कहती है रात जा चुकी।
सोओ बेटे प्यारे॥
पर कहते हैं 'हमको देखो'।
टिम-टिम करते तारे॥
सारी रात जागते रहते।
नींद न इनको आती॥
इनकी माँ क्या नहीं इन्हें भी।
सोने को कह जाती॥
क्या इनकी दुनिया में दिन है।
बनता रात अँधेरी॥
जब ये नहीं दिखाई देते।
करते नभ में फेरी॥

रमेश का भाग्य

लेखक, श्रीयुत ओम्प्रकाश बंसल

रमेश की उम्र बारह साल की थी। उसके माता-पिता बहुत ग़रीब थे। उन लोगों को दोनों समय भरपेट भोजन भी प्राप्त न होता था।

एक बार रमेश अपने बाप के साथ रेलगाड़ी से अपने गाँव लौट रहा था तो उसे रेलगाड़ी में नींद लगी और वह वहीं सो गया। एक स्टेशन पर गाड़ी रुकी और रमेश का बाप पानी लाने के लिए नीचे उतर गया। रमेश का बाप पानी न ला पाया था कि अचानक गाड़ी चल दी और रमेश का बाप वहीं रह गया। थोड़ी देर बाद रमेश की नींद खुली तो वह अपने बाप को न देख हक्का-बक्का-सा रह गया। उसने पास बैठे हुए मुसाफ़िरों से अपने बाप के बारे में पूछा तो वे बोले कि वे स्टेशन पर रह गये हैं। रमेश को इससे बहुत दुःख हुआ परन्तु वह साहसी था इसलिए रोया नहीं और हिम्मत करके तेज़ी से चलती हुई गाड़ी से कूद पड़ा।

रेलगाड़ी से कूदते ही रमेश कुछ देर के लिए सन्नाटे में आ गया। थोड़ी देर बाद जब उसे चेतना आई तो उसे एक धीमी आवाज़ सुनाई पड़ी। उसने ताज्जुब से चारों तरफ़ देखा तो थोड़ी दूर पर एक सुनहला मेढक दिखाई पड़ा। रमेश मेढक के पास गया तो मेढक बोला—"प्यारे बच्चे! घबड़ाओ नहीं, सुनो, मैं तुम्हारी ग़रीबी दूर करने का रास्ता बतलाता हूँ। यह लो मेरा पत्र और मुकुट और यहाँ से थोड़ी दूर जाओ तो तुमको एक साफ़ तालाब मिलेगा। तुम उसमें बेखटके नहाना तब एक सुनहली मछली तुम्हारा पैर पकड़ लेगी तब तुम उस मछली को ये मुकुट और पत्र दे देना। वह पत्र पढ़कर तुम्हें रास्ता देगी। फिर तुम, वह जहाँ कहे वहीं चले जा[ना।"]

मेढक की बात मानकर रमेश चल [दिया।] वह तालाब के पास जल्दी ही पहुँच गया। [जब] तालाब में स्नान किया तो एक सुनहली मछ[ली ने] उसका पाँव पकड़ लिया। तब रमेश ने [उसे] मेढक का मुकुट तथा पत्र दे दिया। पत्र [पढ़कर] मछली बोली—"रमेश! तुम यहाँ से एक मील [जाओ] तब तुम्हें घास-फूस की एक कुटी मिलेगी। तु[म उस] कुटी के अन्दर निडर होकर चले जाना। व[हाँ] एक जटाधारी बाबाजी समाधि लगाये ये बैठे [होंगे।] तुम उनके पास जाकर धीरे से उनका श[रीर छू] लेना तो वे उठ पड़ेंगे। तब उन्हें तुम मेरा प[त्र] दे देना और वे तुम्हें रास्ता बता देंगे।"

रमेश को कुटी तक पहुँचने में आधा [...] लगा। वह कुटी के अन्दर धड़ाके से घुस गया और उसने बाबाजी को छू दिया। बा[बाजी] उठ पड़े और उन्होंने लाल-लाल नेत्रों से रमे[श को] घूरा। तब रमेश ने बाबाजी को मछली [का पत्र] दे दिया और भोजन के वास्ते प्रार्थना की। [...] मछली का पत्र पढ़कर बाबाजी को रमेश प[र दया] आई और उन्होंने रमेश को कुछ कन्द मू[ल] खाने को दिये, जिन्हें खाकर रमेश तृप्त [हुआ।] थोड़ा सुस्ता लेने के बाद बाबाजी ने रमेश को [सोने] की गुफा का रास्ता बतलाया जो उनके [...] के नीचे ही था।

रमेश गुफा के अन्दर गया और उसने धोती में जितना सोना आ सकता था उतना [...] जब वह गुफा से लौट रहा था तो अचान[क] [...] गुफा की ऊपरी दीवाल से रमेश के ऊपर [...] जिसकी चोट से रमेश बेहोश हो गया। [...] की आवाज़ सुनकर बाबाजी गुफा के [...] तो उन्होंने रमेश की दीन दशा देखी। [...] रमेश की दीन दशा पर दया आई [...] उन्होंने रमेश को सोने की गठरी के साथ अपने [...] से उसके घर पहुँचा दिया।

जब रमेश की नींद खुली तो उसने अपने को घर में पाया जिससे उसे बहुत आश्चर्य हुआ, परन्तु वह बाबाजी की कृपा समझ गया। जब रमेश ने यह सब हाल अपने माता-पिता को सुनाया तो वे बहुत ख़ुश हुए। उस दिन से रमेश के घरवालों की ग़रीबी दूर हो गई और रमेश बाबाजी को कभी न भूला।

करेले-मूली का ब्याह

लेखक, श्रीयुत गौरीशङ्कर मालवीय श्री बालविनोदी

शकरकन्द न्योते में आई।
मूली का है ब्याह॥
दूल्हा बना करेलामल है।
और धरे सिर वाह॥

लौकी ले तुरही झट आई।
धुतू तुतू की ज़ोर॥
ढम्म-ढमा-ढम बजा नगाड़ा।
कटहलमल का घोर॥

टिम्मिक-टिम्मिक बजा मजीरा।
खीरामल का ख़ूब॥
पी, पी, पी, शहनाई करते।
मियाँ चुक़न्दर फूँक॥

भाटा, आलू और टमाटर।
बने बराती ठेठ॥

चले शान से चढ़ घोड़ों पर।
बर्राते भर पेट॥

कुम्हड़ामल चढ़ बैठे हाथी।
मटका-सा ले पेट॥
समधी थे, वे लड़केवाले।
भारी-भरकम सेठ॥

बिगड़ा तभी बरात का हाथी।
मारी एक चपेट॥
बोला एक पड़ाका ऐसा।
कुम्हड़ाजी का पेट॥

तितर-बितर बारात हो गई।
भागी चारों ओर॥
बिन ब्याहे रह गये करेला।
किया सभी ने शोर॥

प्यारा भइया

लेखिका, श्रीयुत राजकुमारी सत्संगी

भइया मेरा प्यारा है।
आँखों का यह तारा है॥
भइया ने है पहनी टोपी।
जिसमें टँका है सुन्दर मोती॥
भइया की जब चली बरात।
बाजा बजता सारी रात॥

मेरा भाई

लेखक, श्रीयुत तिलककुमार सिसौदिया

कमल मेरा छोटा भाई।
दूध-जलेबी खाता है॥
उसका प्यारा तुतलाना भी।
मेरे मन को भाता है॥

मेरी रेल

लेखक, श्रीयुत ज्वालाप्रसाद खेतान

धर धर ईंट
बनाई रेल;
हमने रचा
अनोखा खेल

एक ईंट में
मारा धक्का,
सब ईंटों का
छूटा छक्का!

खड़ खड़ खड़ खड़
छूटी रेल,
ईंट गिर गईं
टूटी रेल।

पतङ्ग

लेखक, श्रीयुत रामावतार हुरकट "मुधीर"

सर सर सर करता जाता।
नभ की सैर तुरत कर आता॥
कई रँगों का मैं हूँ आता।
सब बच्चों का मन बहलाता॥
लेने को सब दौड़े आते।
चीड़-फाड़कर मुझे गँवाते॥
उड़ा न तब वे मुझको पाते।
थककर तभी बैठ हैं जाते॥
कट जाता तो शोर मचाते।
छोटे बच्चे दौड़ न पाते॥

मेरा मुन्नू

लेखक, श्रीयुत छोटेलाल सरावगी

मुन्नू मेरा छोटा भाई,
बड़ा ऊधमी बड़ा उपाई।
कहीं बैठ मैं पुस्तक पढ़ता,
तो मुन्नू भी झट आ अड़ता।
शाला से जब पढ़कर आता,
भैया कह वह मुझे बुलाता।
जब मैं कहीं घूमने जाता,
वह भी पीछे है लग जाता।

तीन अक्षर का मेरा नाम,
उलटा-सीधा एक समान।
आदि कटे तो बीन बन जाता,
मध्य कटे तो नन कहलाता॥
(नबीन)—रूपकिशोर सेठ

× × ×

तीन वर्णों का मेरा नाम।
आती हूँ छात्रों के काम॥
मध्य कटे कम बन जाती।
अन्त कटे समय बतलाती॥ (क़लम)

× × ×

तीन वर्णों का मेरा नाम।
स्वच्छ बनाना मेरा काम॥
आदि कटे बुन बन जाता।
अन्त कटे अनाज कहलाता॥
(साबुन)—मुरलीधर 'गुप्त'

× × ×

तीन वर्णों का मेरा नाम।
आता हूँ मैं सबके काम॥
सिर कटे तो दर्जी के पास।
धड़ कटे तो सबके पास॥
पैर कटे तो बनूँ मैं पक्षी।
अब बतलाओ मेरा नाम॥
(काग़ज़)—रामावतार हुरकट

× × ×

धूप लगे सूखे नहीं, छाँह लगे कुम्हलाय।
कहो कौन वह चीज़ है, पवन लगे मर जाय॥
(पसीना)

× × ×

उज्ज्वल वर्ण अधीन गत, एक चरण दो ध्यान।
दीखत है तो साधु-सा, निरो कपट की खान॥
(बगुला)
—ब्रजभूषणसिंह तोमर

तीन अक्षर का मेरा नाम।
बतलाओ तो मिले इनाम॥
अन्त बिना मैं लगा रह जाता।
आदि कटे से गाम कहाता॥ (लगाम)

× × ×

दो अक्षर का मेरा नाम
पेट में जाना मेरा काम॥
मेरे बिना न कोई जीता।
अन्त कटे से तुम्हें रुलाता॥
(रोटी)—वासुदेव गुप्त

× × ×

तीन अक्षर का मेरा नाम।
ताल में रहना मेरा काम॥
आदि कटे मैला बन जाऊँ।
मध्य कटे समय बताऊँ॥
अन्त कटे थोड़ा हो जाऊँ।
(कमल)—एस० एन० जोशी

× × ×

तीन अक्षर का मेरा नाम,
तीनों पर एक देश का नाम।
मध्य काटने से रुकता पानी,
गिरे ज़ोर से यदि इसे न जानी॥
अन्त कटे खाने को पाओ।
मेरा नाम तुरत बतलाओ॥
(मेवाड़)—अमरनाथ श्रीवास्तव

× × ×

चार वर्ण से बना हुआ मैं,
एक प्रसिद्ध शहर हूँ।
नारङ्गी विख्यात जहाँ की
भारत बीच नगर हूँ।
तीजा चौथा लुप्त किये से
सर्प जल्द बन जाता हूँ।
अक्षर दो मध्यम हटने से
मैं नारी बन जाता हूँ॥
(नागपुर)—बनवारीलाल डंगायच

एक सज्जन को किसी भी सवारी से सख्त घृणा थी। एक दिन उनके एक मित्र ने कहा—"बुरा न मानिए, जब आपका देहान्त होगा तो आपको चार आदमियों के कन्धे पर सवार होकर जाना पड़ेगा।" यह सुनकर वे सज्जन बोले—"इससे पहले कि मुझे लोगों के कन्धों पर सवार होना पड़े मैं भगवान् के घर पहुँच जाऊँगा।"

—सागरमल मेहता

× × × ×

मास्टर साहब—क्यों रामू, ढाई तोले भङ्ग के छः आने तो पाँच तोले के क्या दाम हुए?

रामू—माफ़ कीजिए मास्टर साहब, पिताजी ने मुझे नशीली चीज़ों के बारे में बात तक करने को मना कर दिया है।

—कृष्णकुमार मेहता

× × × ×

कक्षा में बैठे हुए लड़के शोर मचा रहे थे। मास्टर साहब ने झुँझलाकर कहा—"बैठे मत रहो, कुछ न कुछ काम करते रहो।"

सुरेश उठकर दीवाल पर स्याही से चित्र बनाने लगा।

मास्टर—सुरेश, क्या कर रहे हो?

सुरेश—आपही ने कहा था कि कुछ न कुछ करते रहो, सो वही 'कुछ' कर रहा हूँ।

—रामावतार हुरकट

× × × ×

माँ—क्यों बेटा, मोज़ा पहनकर, पाँव धो रहे हो।

बेटा—लाचारी है माँ, जाड़े के मारे मोज़ा पहनना ही पड़ता है।

—ओमप्रकाश खेतान

× × × ×

मास्टर साहब—क्यों नन्दन, शिवाजी कहाँ पैदा हुए थे?

नन्दन—हुए थे बम्बई में। अस्पताल के सिवा और कहाँ हो सकते हैं?

—अनिलकुमार

कवि-सम्मेलन हो रहा था। सभापति ने एक कविता पढ़ने के लिए कहा। उसने कहा कि मेरा गला [illegible] है। पास में एक बेवकूफ़ गँवार खड़ा था। उसने [illegible] गाय-भैंस है का जो बैठ गओ अगर ऐसा ही होय तो [illegible] पकड़, पूँछ मड़ोर और दुइ-चार डण्डा मार के उठा[illegible]

—आदित्यप्रकाश चतु[illegible]

× × × ×

एक मियाँजी अपने बीमार दोस्त को देखने [illegible] मियाँजी ने जाकर उनसे हाल पूछा। बीमार दोस्त [illegible] तीन-चार घण्टे से बुखार तो टूट गया है, पर कम[illegible] बहुत है।

मियाँजी बोले—घबराइए नहीं, ख़ुदा ने चाहा [illegible] भी टूट जायगी।

—व्रजभूषण[illegible]

× × × ×

दो अफ़ीमची अफ़ीम खाये हुए एक ही खाट पर [illegible] थे। थोड़ी देर में उनमें से एक अफ़ीमची गाने लगा। [illegible] ने जो उसकी आवाज़ सुनी तो बोला—वाह-वाह! ग[illegible] है, अच्छी खासी सारङ्गी है। और उसको इतनी [illegible] दी कि वह छत पर से कूद पड़ा। जब महाशय [illegible] 'धम्' से आवाज़ हुई और ज़ोर से चिल्लाकर बोले [illegible] घिसुआ, देखना कि धम् से क्या गिरा है।

घिसुआ बोला—हुज़ूर आप ही गिरे हैं।

तो यह सुनकर आप रोने लगे और कहने लगे [illegible] तो चोट भी लगी होगी और घण्टों तक रोते रहे।

—रूपकिशोर [illegible]

× × ×

एक किसान—अरे इतना दिन चढ़ आया और अपनी स्त्री को अभी तक जगाया भी नहीं?

दूसरा किसान—सोने भी दो।

पहला किसान—नहीं भाई, यदि कहीं बम गिरा तो [illegible] भर उलहना देगी।

Printed & Published by A. Bose, at the Indian Press, Ltd., Benares-Branch, Benares.

बालसखा

मई १९४४

वार्षिक मूल्य ३)

एक प्रति का =)॥

सम्पादक { श्रीनाथसिंह
अनन्तप्रसाद विद्यार्थी

[illegible] २८] मई १९४४—ज्येष्ठ २००१ [संख्या ५

क्यों

लेखक, श्रीयुत 'अशोक'

प्रातः जब सूरज की किरणें
फल-फूल पर हैं खिल जातीं;
उड़ने लगती चञ्चल तितली
चिड़ियाँ चूँ-चूँ गाने गातीं।
तब मन में .खुश हो चिल्लाते
हम हैं फूलों के ढिंग जाते;
किन्तु पिताजी .गुस्सा हो क्यों
हम सबको हैं डाँट बताते ?
अपने कमरे में जब बैठे
वे उदास सोचा करते हैं,
स्याही क़लम लिये दफ़्तर के
क़ाग़ज़ ही जब वे भरते हैं।
तब उनको .खुश करने को हम
ऊधम आँगन-बीच मचाते,
पर वे आँखें लाल बनाकर
हमें पीटने क्यों आ जाते ?
जब हम अपनी मौजों में भर
हँसी-खेल से घर भर देते,
तभी डाँटकर हमें पिताजी
क्यों घर से बाहर कर देते ?
क्या माँ ! कुछ भी उन्हें समझ में
भाव न हम सब का है आता ?
या हमको .खुश देख उन्हें है
भूत मारने का चढ़ जाता ?
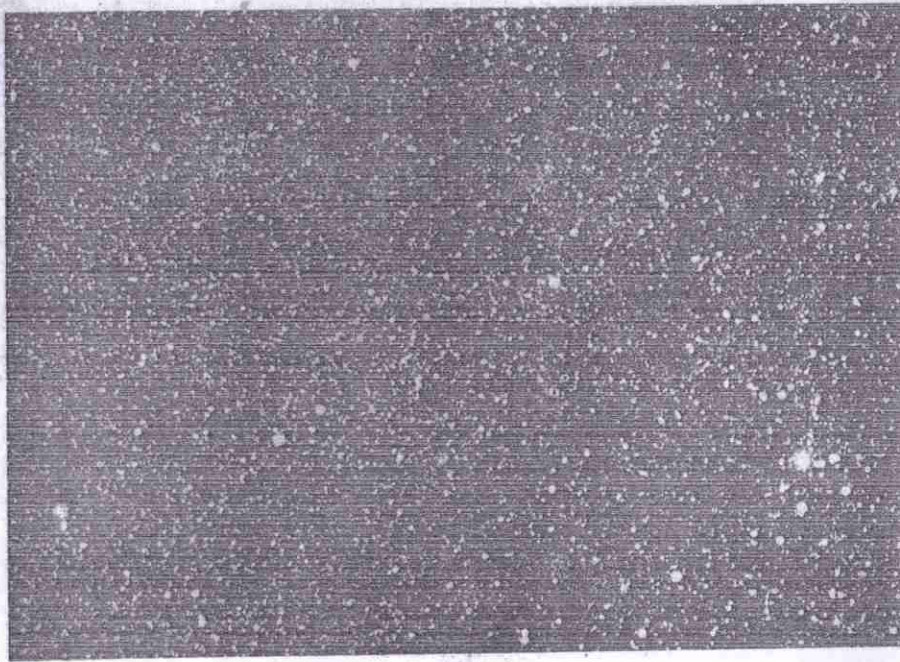
आसमान के झिलमिल तारे! लगते हमको कितने प्यारे!

हमारी दुनिया

लेखक, श्रीयुत सुरेशशरण अग्रवाल

संसार में सबको ही रात अच्छी लगती है। इसका यह कारण ही नहीं है कि रात को हमें काम करना नहीं पड़ता और चैन मिलता है, बल्कि शायद उससे भी बड़ा कारण यह है कि ज़रा आँख उठाकर देखें तो आकाश में तरह-तरह की वस्तुयें दिखाई पड़ती हैं जो हमारे मन को हर लेती हैं। जगमग करते, छुकते-छिपते लाखों तारे, कोई दुम-वाले, कोई बिना दुमवाले, कोई नीले रङ्ग के, कोई मानो कमरबन्द बाँधे हुए और कोई कैसे। ये सब हमको बहुत लुभावने लगते हैं और हमारा मन अपने आप गुनगुनाने लगता है:—

झिलमिल तारा! झिलमिल तारा!
तू जग में करता उजियारा।
जग के ऊपर की दुनिया में
अपनी ऊँची-सी कुटिया में
बादल की फैली खटिया में
जगमग करता है जग सारा।
झिलमिल तारा झिलमिल तारा!

तू है लगता बहुत निराला,
कह तो किसने तुझको पाला,
है क्या बिना मातु-पितावाला?
तू है न्यारा मेरा प्यारा,
झिलमिल तारा झिलमिल तारा!

वास्तव में आकाश में हम जो कुछ देखते हैं उसे तारा नहीं कहना चाहिए। कोई अवश्य तारे होते हैं, किन्तु इनके अला

काश में ग्रह, नीहारिका, पुच्छल, केतु आदि भी होते हैं।

तुम्हारी इच्छा होगी कि इन सब बातों का हम जान जायँ। तुम क्या, सैकड़ों और हजारों वर्षों से मनुष्य इनके तारों के बारे में जानने का प्रयत्न कर रहा है। हम भारतवासी तो बहुत दिनों से इनसे परिचित हैं।

यदि तुम भाई-बहन कभी अपनी नाना के घर चले जाओ और ज़्यादा दिन तक वहीं रहो,

तुमने चन्द्रग्रहण होते अवश्य देखा और सुना होगा। इस अवसर पर तुम्हारी दादी, माता आदि घर के बड़े लोग पास की नदी में जाकर स्नान करते हैं। यही नहीं, ऐसे समय हर गली और कूचे में ज्योतिषी, भंगी आदि चिल्लाते घूमते हैं 'दान करो', 'धर्म करो'। अब भी राजपूताने की कई रियासतों में तो ग्रहण पड़ने पर राजे-महाराजे सोने-चाँदी की चीज़ें दान में देते हैं। सूर्य-ग्रहण का महत्त्व तो चंद्रग्रहण से भी कहीं ऊँचा है। वह
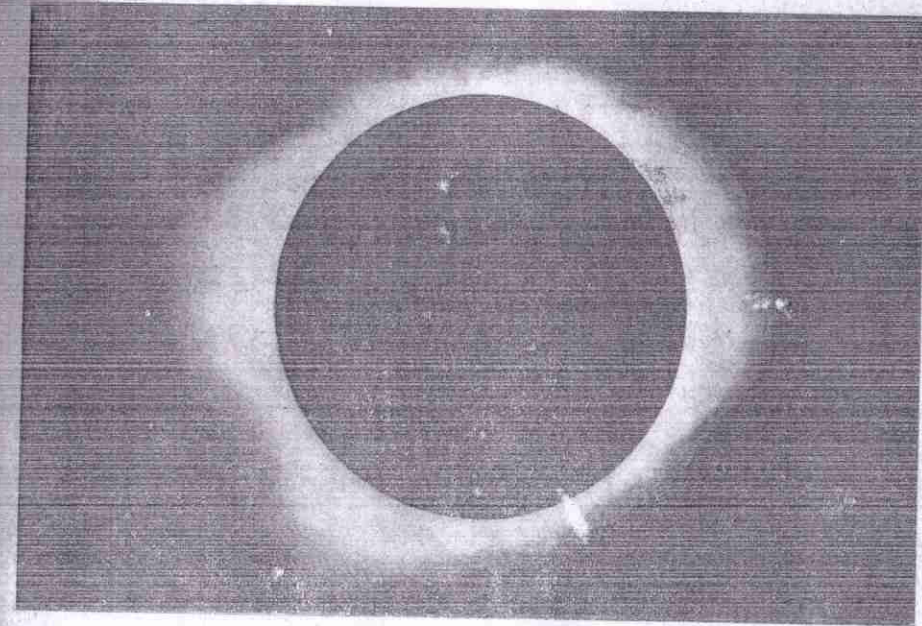
पूरे सूर्य-ग्रहण के कारण अन्धकार छाया है।

तुम्हारे पिता जल्दी आने को कहते हैं। परन्तु ...लो तुम्हारे नाना तुम्हारे पिताजी को लिख ...कि आज कल 'शुक्र डूब' गया है और बच्चे ...के बाद आयँगे। तब तुम कितना ख़ुश होते और अपने नाना की तारीफ़ करते हो। परन्तु तुमने यह भी सोचा है कि यह 'शुक्र डूबना' है, क्यों उसे हम लोग मानते हैं? बात यह ...क यह एक ग्रह का नाम है।

और कम भी पड़ता है। तुमने सुना होगा कि चन्द्र-ग्रहण पड़ने पर चन्द्रमा पर सङ्कट आ जाता है। इसी प्रकार सूर्यग्रहण पड़ने पर सूर्य पर सङ्कट आता है। इसी सङ्कट से बचने के लिए लोग नहाते, दान करते, पूजा-पाठ करते हैं। किन्तु वास्तव में ग्रहण का पड़ना सूर्य, चन्द्रमा और पृथ्वी की करामात है।

तुम्हारी माता, दादी और नानी आदि प्रायः व्रत रखती हैं। कभी एकादशी का तो कभी

तुम लोग दूरी से परिचित होगे। प्रयाग से काशी ८० मील है, कलकत्ता ५०० मील और बम्बई से लन्दन ४५०० मील। परन्तु ज्योतिष की दूरियों से तुम चकित हो जाओगे। पृथ्वी के चारों ओर एक बार घूमने में २५,००० मील का चक्कर लगाना पड़ता है। अब एक गोले की कल्पना करो जिसका व्यास २० करोड़ मील है— २० करोड़ ! कितना हुआ ? पृथ्वी के चारों ओर आठ हज़ार चक्कर लगाने के बराबर। यदि तुम एक-दो-तीन-चार-पाँच.... कहते हुए २० करोड़ तक गिनो और एक मिनट में २०० तक गिन लो तो तुम्हें गिनते-गिनते दो साल और लगभग साढ़े दस महीने लग जायँगे। फिर शर्त यह कि इन दो साल साढ़े दस महीनों में तुम न कुछ खाओ-पियो, न कुछ करो, बस गिनते रहो। हाँ, तो २० करोड़ मील व्यास के दस लाख गोलों की कल्पना करो। इन गोलों की लम्बाई-चौड़ाई का अनुमान करके तुम आकाश में तारों के एक समूह की कल्पना करो। और आश्चर्य यह कि इस विश्व में हज़ारों ऐसे और इनसे बड़े समूह हैं।
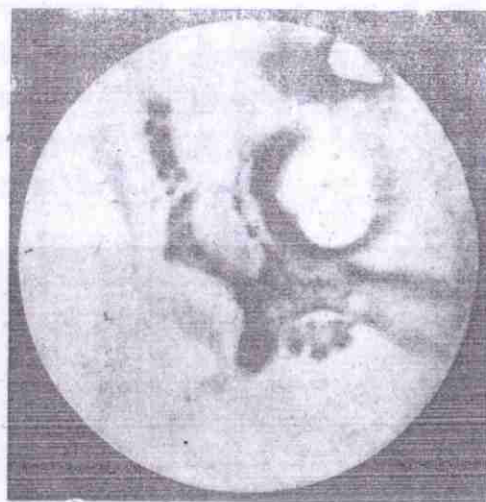
मङ्गल तारा हमसे बहुत दूर है।

इतना ही नहीं, हमारे देश में रेलें अधिकतर २०-२५ मील प्रति घण्टा चलती हैं, और हद से हद ६० मील फ़ी घण्टा—यानी एक मिनट में एक परन्तु ध्वनि तो एक मिनट में लगभग १२ जाती है। इसका आभास तुम इस प्रकार पा हो कि बरसात में जब बिजली चमकती है बादल गरजते हैं तो गरजने का शब्द बाद को पड़ता है, बिजली की चमक हम पहले देख ले इससे भी कहीं बढ़ी-चढ़ी गति कई और पदार्थ है। परन्तु सबसे ज़्यादा गति तो रोशनी वह एक सेकेंड मे लाख ८६ हज़ार जाती है। और की बात यह है कि विश्व में करोड़ों तारे हैं जिनके प्रकाश पृथ्वी तक आने में वर्ष लगते हैं। तुम द्वारा अपने आप लगाओ कि वह जिसका प्रकाश पर एक साल में कितनी दूर होगा फिर उन दूरियों अनुमान करो जिनको तै करने में करोड़ों लगते हैं।

लाखों, करोड़ों तथा बड़ी-बड़ी संख्याओं मैं तुम्हें डराना नहीं चाहता। डरने के साथ ही तुम यह भी जानना चाहोगे कि इन बातों का कैसे चला ? इस प्रश्न का उत्तर देना कोई काम नहीं है, परन्तु वह तुम ज़्यादा बड़े होकर प

चार मित्र

लेखक, श्रीयुत सत्यवीर

हाथीसिंह, भालूराम, बिल्लू और मटकन मित्र एक ही दर्जे में पढ़ते थे। हाथी सिंह भारी-भरकम थे। जब वे चलते तो ऐसा लगता जैसे कोई छोटा-मोटा हाथी चला जा रहा। उनकी नाक बड़ी लम्बी और आँख थी। भालूराम बेचारे बहुत नाटे और अजीब थे। सर पर बड़े-बड़े बाल थे। शायद सिर उन्होंने कभी कटाये ही न थे। बिल्लू साथियों में सबसे छोटा था। उसकी आँखें की आँखों की तरह चमकदार थीं। मटकन नाटे तो नहीं थे पर अपनी तोंद के कारण झुक नहीं सकते थे। दर्जे में उन्हें नींद आया करती थी। कभी-कभी जब मास्टर साहब उन्हें खड़ा कर देते तो वे अपनी तोंद को डेस्क पर रखकर उस पर आराम से हाथ फेरा करते थे।

एक दिन मास्टर साहब ने दर्जे के लड़कों को एक लेख लिखकर लाने को कहा। दूसरे दिन सब लोग स्कूल पहुँचे तो चारों मित्रों को ध्यान आया कि उन्होंने लेख नहीं लिखा। वे बहुत घबड़ाये। मटकन ने कहा—"भाई, सारे दिन दर्जे में खड़े रहना नहीं पसन्द।" अन्त में सब ने यह राय की कि घण्टा के पहले हम लोग भी लेख लिख डालें।

चारों मित्र दर्जे की आख़िरी बेंच पर बैठ गये और लेख लिखने लगे। जब मास्टर साहब दर्जे में आये तो चारों मित्रों का लेख लिखा जा चुका था। वे बड़े ख़ुश थे। मास्टर साहब ने सब लड़कों के लेख को देखना शुरू किया। चारों मित्रों के लेख को देखकर मास्टर साहब बहुत बिगड़े। चारों के लेख में कम से कम दो सौ ग़लतियाँ थीं। मास्टर साहब ने कहा—"स्कूल की छुट्टी हो जाने पर चारों बैठकर जब तक दूसरा लेख नहीं लिखकर दिखायेंगे तब तक उन्हें छुट्टी नहीं मिलेगी।"

चारों मित्र बहुत दुखी हुए। छुट्टी हो जाने के बाद जब सब लड़के चले गये तो चारों मित्र अकेले कमरे में बैठकर लेख लिखने लगे। हाथीसिंह ने कहा—"भाई, यह तो बहुत बुरा है। यहाँ अकेले बैठे रहना तो बहुत खल रहा है।"

"हाँ, हम भी यही सोचते हैं। मनबहलाव के लिए कुछ तो होना चाहिए।" भालूराम ने कहा।

मटकन चुपचाप कुछ सोच रहे थे। उन्होंने अपनी तोंद पर हाथ फेरते हुए कहा —"मुझे एक तरकीब सूझी है। कहो तो बताऊँ।"

सब के सब एक साथ बोल उठे —"हाँ, हाँ, कहो।"

मटकन ने चुपके से सब को अपनी तरकीब बता दी। सबको उनकी तरकीब पसन्द आई और उन्होंने लेख की कापी बन्द करके रख दी और मास्टर साहब की मेज़ पर पहुँचे। मेज़ पर लाल और नीली स्याही की दावातें रक्खी हुई थीं। चारों मित्रों ने अपने-अपने मुँह को लाल और नीले रङ्ग में रँग लिया। खड़िया पीसकर उन्होंने बालों में मल लिया जिससे उनके बाल सफ़ेद हो गये।

वहाँ से वे सङ्गीत-मास्टर के कमरे में पहुँचे। हाथीसिंह ने तबला उठा लिया, भालूराम ने हारमोनियम लिया, मटकन ने सितार और बिल्लू ने बेला। चारों फिर अपने कमरे में आ गये और लगे गाने-बजाने। गाने-बजाने में वे इतने मस्त

हो गये कि उन्हें यह भी ध्यान न रहा कि मास्टर साहब पास ही अपने कमरे में बैठे हैं।

मास्टर साहब अपने कमरे में बैठे हुए कुछ ज़रूरी काम कर रहे थे। उन्होंने जो यह गाना-बजाना सुना तो वे उठकर उस कमरे में यह देखने के लिए आये कि यह सब शोर-गुल क्यों हो रहा है। चारों मित्रों को देखकर वे फिर उलटे पाँव बेंत लेने के लिए चले गये। बेंत लेकर जैसे ही उन्होंने कमरे में प्रवेश किया वैसे ही मटकन की दृष्टि मास्टर साहब पर पड़ी। अपना सितार फेंककर वह दूसरे दरवाज़े की ओर भागा। तीनों मित्रों ने भी मास्टर साहब को देख लिया और उसी ओर को भाग चले।

मास्टर साहब बहुत गुस्से में थे। वे उनके पीछे दौड़े। स्कूल के दरवाज़े पर एक रिक्शा खड़ा था। रिक्शावाला शायद पास के किसी मकान में गया था। मटकन कूदकर चलानेवाले की जगह पर बैठ गया। तीनों मित्र भी कूदकर पीछे बैठ गये। मटकन ने रिक्शा तेज़ी से चलाना किया। मास्टर साहब कुछ दूर तक तो उनके पीछे दौड़े, पर मटकन रिक्शा बहुत तेज़ चला था इसलिए बेचारे हारकर लौट आये।

इतने में ही सामने से एक मोटर आती दि[खाई] पड़ी। मटकन ने घबड़ाकर अपने रिक्शे को के किनारे की ओर मोड़ा परन्तु दुर्भाग्यवश एक बिजली के खम्भे से टकराकर उलट ग[या।] बिजली के खम्भे के पास ही जानवरों के के पानी का एक हौज़ था। चारों मित्र में जा गिरे और डुबकियाँ लगाने लगे। उनके पर लगी हुई स्याही और बालों की खड़िया धुलकर साफ़ हो गई। इतने ही में रिक्शावाला दौड़ता आता दिखाई दिया। चारों मित्र किसी हौज़ से निकलकर अपने अपने घर की ओर भ[ागे।]

दूसरे दिन जब वे स्कूल पहुँचे तो उन्हें दे[खकर] मास्टर साहब को भी हँसी आ गई और उ[न्होंने] चारों मित्रों को सज़ा नहीं दी।

प्रार्थना

लेखक, श्रीयुत कृष्णकुमार

तेरे मन्दिर में हनुमान—
चढ़ाऊँ फूल - बताशे - पान ॥
तेरी सेवा में मैं आया।
तेरे से ही नेह लगाया॥
कर दे पास हमें भगवान्।
चढ़ाऊँ फूल - बताशे - पान ॥
तू कापी में, तू है पेन में।
तू पुस्तक में, तू है मन में॥
पास करा दे यह इम्तहा[न।]
चढ़ाऊँ फूल - बताशे - पान ॥
सभी जानते नाम तुम्हा[रा।]
परोपकार है काम तुम्हारा॥
करो हमारा भी कल्या[ण।]
चढ़ाऊँ फूल - बताशे - पान ॥

चिड़ियों की रानी

लेखक, श्रीयुत सैयद महमूद अहमद 'हुनर'

[एक] बार एक गिद्ध ने एक छोटी-सी अबा[बील] को उड़ते हुए देखा। उसको यह देखकर [आश्चर्य हु]आ कि इतनी छोटी-सी चिड़िया को भी [उड़ने] का शौक़ चर्राया। गिद्ध उड़ते-उड़ते उस [चि]ड़िया के पास आया और उसकी ओर घृणा से [देखकर] कहने लगा कि तू किसकी आज्ञा से इस [आज़]ादी के साथ उड़ा करती है।

यह नन्हीं-सी चिड़िया इतने बड़े गिद्ध को [देख]कर सहम गई और हक्का-बक्का होकर उसकी ओर [देखने] लगी। गिद्ध ने फिर [डपट]कर कहा कि जब तेरे परों में [ताक़त न]हीं है तब तू क्यों हमारी [बराबरी] करती है।

गिद्ध ने अबाबील को उड़ते हुए देखा

अबाबील ने दीन भाव से [कहा]—"मेरे हलके-फुलके शरीर [को] देखते हुए मेरे परों में काफ़ी बल [है।] भगवान् ने आपका शरीर [भ]ारी-भरकम बनाया है, इसी से आपके परों में बल अधिक है।"

यह विचित्र उत्तर सुनकर गिद्ध सिटपिटा [गया] और जब कोई जवाब न बन पड़ा तो कहने [लगा] कि मैं चिड़ियों का राजा हूँ, तू मेरी आज्ञा के [बिना] क्यों उड़ा करती है।

अबाबील ने जी कड़ा करके पूछा—"आप [किस] अधिकार से चिड़ियों के राजा बन बैठे हैं?"

गिद्ध ने अपने परों को ज़ोर से फड़फड़ाया [और] कहने लगा—मैं चिड़ियों का राजा इसलिए [कहल]ाता हूँ कि मैं सब चिड़ियों से ऊँचा उड़ता हूँ। [अगर] तुम्हें विश्वास न हो तो मेरे साथ-साथ उड़ो। [थोड़ी] दूर के बाद तुझे आप ही मालूम हो जायगा [कि त]ू अधिक ऊपर तक उड़ सकती है या मैं।

अबाबील ने नम्रता से उत्तर दिया—अच्छा, तो इसी बात पर फ़ैसला रहा। आज जो ऊँचा उड़ेगा वही राजा कहलायेगा।

गिद्ध और अबाबील दोनों ने उड़ना शुरू किया। थोड़ी दूर जाकर अबाबील थक गई। उसने सोचा कि यदि हार मान लेती हूँ तो उम्र भर के लिए गिद्ध को राजा मानना पड़ेगा और अपनी स्वतन्त्रता गँवानी पड़ेगी।

यह सोचकर उसने दिल में ठान लिया कि चाहे जो कुछ हो पर साहस न छोड़ूँगी और जब तक दम में दम है उसका साथ न छोड़ूँगी।

जब उसने हिम्मत से काम लिया तो उसकी मुर्दा जान में जान आ गई। और उसने फिर अपनी पूरी शक्ति से उड़ना शुरू किया। लेकिन बेचारी कहाँ तक मुक़ाबला करती। गिद्ध जैसे-जैसे ऊपर चढ़ता उसकी चाल तेज़ होती जाती और यहाँ अबाबील की ताक़त जवाब दे रही थी। जब अबाबील ने देखा कि वह फिर थकने लगी है और गिद्ध का साथ छूट रहा है तो एक उपाय उसकी समझ में आया। उस उपाय के सूझते ही उसको बड़ा ढाढ़स हुआ और थोड़ी देर के लिए फिर उसकी जान में जान आ गई।

एकदम उसने फिर अपनी पूरी ताक़त लगाकर कोशिश की कि गिद्ध से थोड़ा ऊपर हो जाय। जब वह गिद्ध के ऊपर हो गई तो धीरे से उसके परों पर बैठ गई। गिद्ध उस समय अपनी धुन में था और पूरी तेज़ी से उड़ रहा था। उसको अबाबील के बैठने का पता तक न चला। अबाबील चुपचाप उसके परों पर बैठी मौज
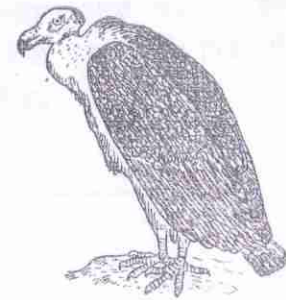
कर रही थी और गिद्ध उड़ने में व्यस्त था। जब गिद्ध बहुत ऊपर पहुँचा तो अपने आस-पास अबाबील को देखा। जब वह कहीं न दिखाई दी तो गिद्ध अपने दिल में बहुत ख़ुश हुआ और सोचने लगा कि आज से चिड़ियों का राजा हो जाऊँगा और इस अबाबील से तरह-तरह की सेवायें कराऊँगा।

किन्तु फिर भी वह उड़ता ही रहा। जब और ऊपर पहुँचा तो बिलकुल थक गया। और उसके परों में उड़ने की तनिक भी शक्ति न रह गई। उस समय उसने चिल्लाकर कहा—"बस, अब इससे अधिक मैं नहीं उड़ सकता।"

यह सुनकर अबाबील चुपके से कुछ ऊपर उड़ गई और वहीं से बोली कि अभी और ऊपर आओ। मैं तुमसे आगे हूँ।

अबाबील की आवाज़ सुनकर गिद्ध के उड़ गये और उसकी रही-सही ताक़त भी जा[illegible] गई। उसने लज्जित होकर काँपती हुई आवा[illegible] कहा—अच्छा, मैं हारा और तुम जीतीं। आ[illegible] तुम चिड़ियों की रानी कहलाओगी और मैं तु[illegible] प्रजा होऊँगा।

अबाबील को यह सुनकर हँसी आ [illegible] उसने गिद्ध से कहा कि न तो मु[illegible] रानी बनने का शौक है, न तुमको अपनी [illegible] बनाने का। तुम उसी तरह आज़ादी से [illegible] जैसे पहले रहते थे, पर एक बात कभी [illegible] भूलना कि आज से किसी को केवल इस[illegible] अपने से तुच्छ न समझना कि वह देखने में तु[illegible] कम है।

———

आम

लेखिका, कुमारी मोहिनीबाला

अच्छे पक्के मीठे आम,
लँगड़े कलमी देशी आम;
आमों के भी कितने नाम,
सभी फलों का राजा आम।

लटक रहे पेड़ों में आम,
टपक रहे पेड़ों से आम;
चिड़िया आकर खाती आम,
लड़के भगते पाकर आम।

सबको अच्छा लगता आम,
कच्चा हो या पक्का आम;
होवे सुबह, धूप या शाम;
लड़के खोजा करते आम।

———

कान उमेठी

लेखक, श्रीयुत विशाल त्रिपाठी

पूज्य पिताजी प्रातः उठकर,
जब पढ़ने हूँ जाता।
मैं न आज पीटा जाऊँ,
दिल में कहता हूँ जाता।

जाने क्यों कर क्रुद्ध गुरुजी
मुझसे हैं खिसियाते।
रोज़ाना, वे जान-बूझकर,
मेरे बेंत लगाते।

जब देखो कहते रहते हैं,
अभी मार क्या बैठी।
मैं न आज पढ़ने जाऊँगा,
होगी कान उमेठी।

———

समुद्र की राजकुमारी

लेखक, श्रीयुत ओंकारनाथ अग्रवाल 'शरद'

[illegible] भर के समुद्रों का एक राजा था। उस [illegible] का महल समुद्र के नीचे एक बहुत सुन्दर [illegible] में बना था। वह राजा बहुत अच्छा था। [illegible] रानी बहुत पहले मर चुकी थी। घर में [illegible] छः लड़कियाँ थीं। राजा की माँ अभी [illegible] थी। वही सभी छोटी-छोटी राजकुमारियों की [illegible] किया करती थी।

[illegible] सभी लड़कियाँ शाम को खा-पी चुकतीं [illegible] बूढ़ी दादी को कहानियाँ कहने के लिए [illegible] करने लगती थीं। दादी राजकुमारियों को [illegible] पर रहनेवाले मनुष्यों की अजीब-अजीब [illegible] सुनाया करती। छोटी राजकुमारी, जो [illegible] राजकुमारियों में सुन्दर और अच्छी थी, [illegible] आदमियों की कहानियाँ सुन-सुनकर उन्हें [illegible] की इच्छा प्रकट किया करती।

दादी उसे समझाती कि जब वह बड़ी हो [illegible] तब उसे पानी के ऊपर जाने और पृथ्वी [illegible] मनुष्यों को देखने की इजाज़त दे दी जायगी।

धीरे-धीरे एक दिन छोटी राजकुमारी ने देखा [illegible] उसकी सबसे बड़ी बहन को बाहर जाने की [illegible] दे दी गई, क्योंकि उसकी उम्र पन्द्रह साल [illegible] गई थी। बड़ी राजकुमारी जब बाहर से [illegible] आई तो उसने पृथ्वी के लोगों की अजीब-[illegible] कहानियाँ सुनाईं। यह सब सुनकर छोटी [illegible]मारी की बाहर जाने की इच्छा और भी [illegible] हो गई। छोटी राजकुमारी ने सोचा कि [illegible] उसे बाहर जाने में अभी पाँच साल [illegible]। वह बड़ी दुखी हुई।

अन्त में पाँच साल बीते और छोटी राज-[illegible] पन्द्रह साल की हो गई। उसे बाहर जाने [illegible] अनुमति मिल गई। वह ख़ूब अच्छे-अच्छे कपड़े पहनकर समुद्र के ऊपर की सैर करने और पृथ्वी के लोगों के बारे में जानने को निकली।

समुद्र के ऊपर तैरते-तैरते उसे शाम हो गई। शाम को उसने एक बड़े भारी जहाज़ को समुद्र पर चलते देखा। उस जहाज़ पर एक राजकुमार सैर करने निकला था। राजकुमार देखने में बड़ा सुन्दर था। राजकुमारी ने इसके पहले कभी किसी मनुष्य को नहीं देखा था। उसने देखा, राजकुमार के आस-पास बहुत-से आदमी और भी बैठे हैं। राज-कुमारी को बड़ा आश्चर्य हो रहा था क्योंकि इतने मनुष्यों को एक साथ उसने कभी नहीं देखा था।

तभी बड़े ज़ोरों की आँधी आई। तूफ़ान भी आया। समुद्र का पानी बड़े ज़ोरों से उछलने लगा। जहाज़, जिस पर राजकुमार था, उलट गया। समुद्र में गिरते ही राजकुमार बेहोश हो गया। राजकुमारी ने देखा और बढ़कर उसने राजकुमार को पकड़ लिया। राजकुमारी ने सोचा अगर राजकुमार को वह पानी के नीचे अपने महल में ले जाती है तो रास्ते में इतने पानी में पड़कर नीचे पहुँचते-पहुँचते राजकुमार मर जायगा। इसलिए राजकुमारी उसे लेकर समुद्र में ऊपर ही तैरती रही। थोड़ी दूर पर जाकर उसने देखा कि समुद्र के किनारे एक पहाड़ी है और पहाड़ी पर बड़ा सुन्दर-सा एक सफ़ेद महल बना है। राजकुमारी राजकुमार को लेकर किनारे पर रुकी रही। राज-कुमार तब तक बेहोश ही था। इसी समय महल से कई औरतें बाहर निकलीं। राजकुमार को देखकर ने एकदम दौड़ पड़ीं और उसे राजकुमारी से छुड़ाकर महल के अन्दर उठा ले गईं।

राजकुमारी को बड़ा दुःख हुआ और वह लौटकर अपने महल में आई। दूसरे दिन फिर

रेशम की कहानी

लेखक, श्रीयुत जगदीशकृष्ण जोशी

रेशमी कपड़े सब लोग पहनते हैं, परन्तु वे कैसे बनते हैं, इसका पूरा हाल बहुत थोड़े लोग जानते हैं। रेशम असल में एक कीड़े की लार है। इस कीड़े को कोया कहते हैं। कोयों का रङ्ग हरा, पीला या काला होता है और उनके ऊपर सुनहरे धब्बे भी होते हैं। पूरी अवस्था में कोया सात-आठ इंच मोटा और चार-पाँच इंच लम्बा होता है। कुछ कीड़े इससे छोटे भी होते हैं। ये बेर, जामुन, शहतूत आदि पेड़ों के पत्ते खाते हैं। हमारे देश में ज़्यादातर रेशम शहतूत के कोयों से लिया जाता है।
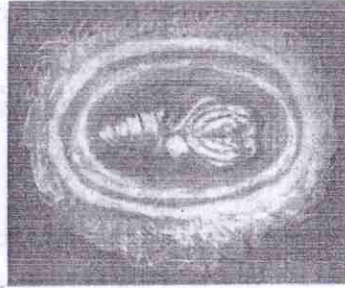
रेशम के कोये इन पेड़ों के पत्तों पर अण्डे देते हैं। इन अण्डों से छोटे-छोटे कीड़े निकलते हैं। फिर उसी पेड़ के पत्ते खाकर वे एक महीने में
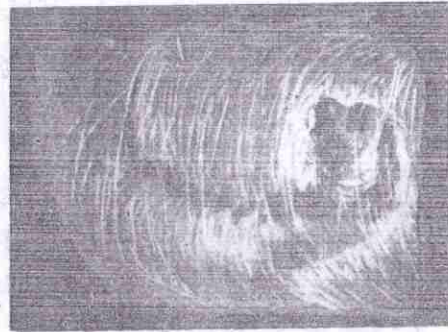
पूरी अवस्था के हो जाते हैं। इसी बीच में ये तीन-चार बार अपनी खाल बदलते हैं। खाल छोड़ने से इनकी भूख कम होती जाती है। यहाँ तक कि ये बिलकुल खाना छोड़ देते हैं। दो-तीन दि[illegible] बिना कुछ खाये रहकर, पास के पत्तों पर, [illegible] नाक के छेदों से लार निकालकर, मकड़ी की [illegible] जाला बुनते हुए घूमने लगते हैं। हवा लग[illegible] वह लार कड़े सूत के समान हो जाती है। [illegible] हफ़्ते में यह जाला इतना मज़बूत हो जाता [illegible] चिड़ियाँ भी अपने पंजे या चोंच से उसे नहीं [illegible] सकतीं। इसमें बैठकर कोये रेशम बनाते हैं। [illegible] जाले या खोल को भी कोया कहते हैं। कीड़े [illegible] आकर इतने बदल जाते हैं कि उनकी पहिली शक्ल से कोइ समानता नहीं रहती। यहाँ त[illegible] वे ज़िन्दा हैं या नहीं—यह भी आसानी से [illegible] समझा जा सकता। यदि कीड़े की इस जग[illegible] काटा न जाये तो दो-तीन हफ़्ते में वह ख़ुद ही [illegible] धारण करके तितली बन जाता है और कोये [illegible]
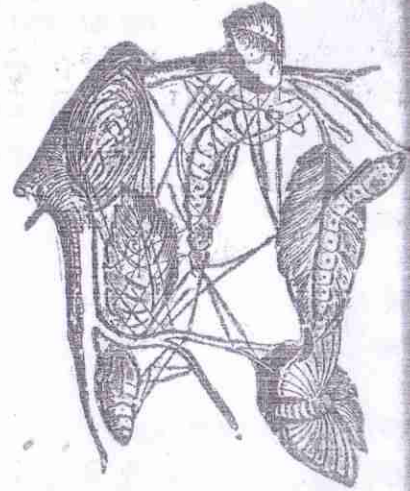
काटकर बाहर आ जाता है। इसी समय वे [illegible] देना प्रारम्भ कर देते हैं। इन अण्डों के बाहर [illegible] तरह की लस होती है। इसलिए वे जिस प[illegible] गिरते हैं उसी से चिपक जाते हैं, नीचे ज़मीं[illegible] [illegible] गिरते। इन अण्डों का आकार मसूर की तरह [illegible]। दो-तीन दिन अण्डे देने के बाद तितली [illegible] मर जाते हैं और इन अण्डों से नये [illegible] होकर रेशम के कोयों की जाति बढ़ती [illegible]। इस तरह इन कीड़ों का जीवन दो से [illegible] महीने तक रहता है, जिसमें इनके चार रूप [illegible] अण्डा, कीड़ा, कोया और तितली।

[illegible]गाल और बिहार के सूबों में मुर्शिदाबाद, [illegible], बर्दवान, भागलपुर आदि में रेशम की [illegible] हैं। इन कोठियों में शहतूत के बड़े-बड़े [illegible] हैं जिनमें कोयों को पालकर रेशम तैयार [illegible] जाता है। अर्थात् तितली-रूपी कीड़ों से

[illegible] दिलवाकर उन्हें इकट्ठा किया जाता है। जब [illegible] फूटने का समय आता है, तो एक बड़ी चलनी [illegible] तार के पिंजरे में शहतूत के पत्ते बिछाकर ऊपर [illegible] इन अण्डों को छिटक देते हैं। इसके बाद गर्मी [illegible] छोटे छोटे कीड़े बाहर निकल आते हैं। जब [illegible] बहुत छोटे रहते हैं तब पत्तों के छोटे छोटे [illegible] करके उनके पिंजरे में डालने पड़ते हैं। बड़े [illegible] पर कीड़े ख़ुद ही शहतूत के पत्तों को काट-[illegible] खाने लगते हैं। किन्तु उनके पिंजरे या चलनी [illegible] बड़ी सावधानी से झाड़-पोंछकर पत्ते बदलने की ज़रूरत है, नहीं तो कीड़े गन्दगी से बहुत जल्दी मर जायँ।

पत्ते बदलते समय उनके शरीर को नहीं छूना चाहिए। जिसमें वे रहते हैं उसके पास दूसरा पात्र रखकर पत्ते डालने से वे स्वयं उसमें चले जाते हैं और कोया बनाते हैं। तब लोग उन कोयों को इकट्ठा करते हैं। अधिक दिन तक रखने के लिए गरम पानी में उबालकर चिमड़ा लेते हैं। ऐसा न करें तो तितली-रूपी कीड़े स्थान काटकर बाहर आ जायँ और रेशम बर्बाद कर दें।

कोयों को ठण्डा करने के लिए पानी में डालकर ज़रा सा छील देते हैं। इसके बाद पानी से निकालकर एक-दूसरे से सटाकर रख देते हैं। ऐसा करने से वे एक प्रकार की लस पाकर आपस में लिपट जाते हैं। जब रेशम निकालना होता है, तो कोये को काटकर निकाल लेते हैं।

कीड़े के मुँह से जो रेशम निकलता है उसमें एक प्रकार का लस रहता है। पानी में धोने से वह धुल जाता है। रेशम का रङ्ग पीला होता है, यद्यपि किसी रेशम का रङ्ग सफ़ेद भी होता है। रेशम कोमल और टिकाऊ होता है। पाट, सन और सूत इन सबसे रेशम ज़्यादा मज़बूत है।

हिन्दुस्तान और चीन रेशम के आदि-देश हैं। इन्हीं दो देशों में सबसे पहले रेशम पैदा किया जाता था और व्यवहार में लाया जाता था। वेनिस के सौदागर इसको योरप में ले जाकर सोने के भाव बेचा करते थे। अब तो विलायत में भी रेशम के कीड़ों को पालकर रेशम तैयार किया जाने लगा है, जिससे अब यह पहले के समान महँगा नहीं रहा।

———
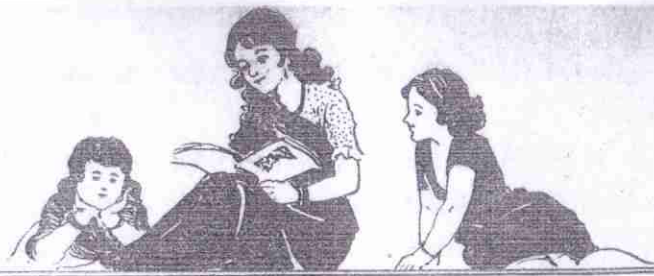
हीरों की राजकुमारी

लेखिका, श्रीमती राजकुमारी अग्रवाल

किसी देश में एक राजा रहता था। वह बड़ा कञ्जूस था। उसे केवल अपनी धनदौलत और एकमात्र लड़की राजकुमारी से ही प्रेम था।

उसने अपनी धन-दौलत और हीरे-जवाहरात को एक तहख़ाने में बन्द कर रक्खा था। उस कमरे में सदा ताला बन्द रहता था। वहाँ सिर्फ़ राजा और राजकुमारी ही जा सकती थीं। उस कमरे की दीवालें भी बड़े मज़बूत पत्थरों की बनी हुई थीं। उस कमरे में सिर्फ़ धूप और हवा जाने के लिए एक खिड़की थी जो सदा बन्द ही रहती थी। शाम को सूरज डूबने लगता था तो राजा अपने सामने वह खिड़की खुलवाता था ताकि कोई देख न ले।

एक दिन राजा और राजकुमारी उस कमरे में अपने हीरे-जवाहरात को देखने गये। उस समय शाम की धूप के लिए खिड़की खोली गई थी। सूर्य की अन्तिम किरणें हीरे-जवाहरातों से भरे कमरे में पड़कर बड़ी सुन्दर मालूम होती थीं। राजा ने यह सब देख राजकुमारी से कहा—"हम लोगों के पास इतना अधिक और सुन्दर धन-ख़ज़ाना है कि किसी और के पास कदापि न होगा।"

राजकुमारी ने उत्तर दिया—"पि... आप इतने बड़े राजा हैं। आपके लिए यह क... भी नहीं है।"

राजा बोला—"अच्छा, आज ही हम दे... में यह सन्देश भेजते हैं कि जिसके पास जित... हीरे-जवाहरात हों, हमारे राज-दरबार में ... दे। उसे उसके धन के मूल्य का तीन गुना हम देंगे।"

राजकुमारी और धन हो जाने की आ... बड़ी ख़ुश हुई।

दूसरे दिन राजा के आदमियों ने देश ... घूम-घूमकर यह सन्देश पहुँचाया। और ... दिनों के बाद देश भर के महाजन और धनी अपने-अपने हीरे-जवाहरात लेकर आ ... राजा ने सबों के हीरे-जवाहरात से भरे ... देखे। उसके मुँह में पानी भर आया। ... सोचा अगर किसी प्रकार इनका सब धन ... जाय और रुपया न देना पड़े तो बड़ा अच्छा ...

सोचते-सोचते उसे एक बात सूझी। ... सभी महाजनों और धनी लोगों को जो हीरे-ज... रात बेचने आये थे, एक बड़ी भारी दावत ... उस दावत में स्वयं राजा और राज...मारी ने ... चीज़ परोसकर लोगों को खिलाया। ... के इस व्यवहार से सभी बड़े ख़ुश हुए और ... की तारीफ़ करने लगे। राजा ने यही ... अवसर देखा और कहा—"महाजनो, आप ... आज मेरे मेहमान हैं। आज अब सौदा कैसे ... सबेरे होगा। रात को आप लोग ... हीरे-जवाहरात का थैला बग़लवाले कमरे में ... । इस कमरे में हम स्वयं रहते हैं। कोई ... नहीं है। आप लोगों के सोने का भी ... ने इन्तज़ाम कर दिया है।"

महाजनों ने बात मान ली और यही तय किया ... थैलों को बग़लवाले कमरे में रख दिया जाय। थैला रख-रखकर सभी महाजन सोने के लिए ... रास्ते में बाग़ में से होकर वे गुज़रे। राजा ने एक पेड़ में बड़ा भारी फूल बनवा... दिया था। वह फूल देखने में तो बड़ा ... था पर उसमें एक बिजली लगी हुई थी। जो ... उसके सामने से निकलता उसी को वह ... बहुत सुन्दर लगता और जब वह फूल लेने के ... उसके निकट जाता तो वह फूल उसे अपनी ओर खींच लेता और वह आदमी फूल में जाकर समा जाता। एक-एक करके सभी सौदागर उसमें समा गये। राजा इससे बहुत प्रसन्न हुआ। उसने सोचा कि सुबह सब हीरे-जवाहरात का स्वामी वह स्वयं हो जायगा। रात भर उसको नींद न आई। राजकुमारी को उसने उसी कमरे में सुला रक्खा था जिसमें सौदागरों के हीरे-जवाहरात रक्खे हुए थे।

सुबह जब वह उस कमरे में गया तो उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि हीरे-जवाहरात के थैले ख़ाली पड़े हैं और राजकुमारी चद्दर ओढ़े सो रही है। राजा ने राजकुमारी को जगाया, परन्तु वह न उठी। तब राजा ने उसके ऊपर की चद्दर हटा दी। जो कुछ उसने देखा उसको देखकर उसके आश्चर्य का ठिकाना न रह गया। राजकुमारी के शरीर भर में हीरे-जवाहरात जड़े थे, पर वह पत्थर हो गई थी।

राजा को अपनी प्यारी पुत्री को गँवाने का बहुत दुःख हुआ, पर अब हो ही क्या सकता था।

थैला

लेखक, श्रीयुत साँवलराम सिघानेवाला

मेरा थैला, मेरा थैला।
कितना सुन्दर है यह थैला॥
रँग में है यह काला-काला।
सबका दिल है हरनेवाला॥
...ल में पढ़ने को हूँ जाता।
...ले को सँग में ले जाता॥
जब थैला मेरा खो जाता।
तब मुझको है गुस्सा आता॥
थैले को जब पा जाता हूँ।
मन में मैं ख़ुश हो जाता हूँ॥

मोहन और शीला

लेखिका, श्री गिनियाँबाई नेमानी, पडरौना

शीला माँ की बहुत दुलारी।
सबके मन को हरनेहारी॥
पढ़ने में मन ख़ूब लगाती।
गीत मनोहर सुन्दर गाती॥
बोली उसकी अजब निराली।
भोली-भाली सब गुणवाली॥
मोहन बाबूजी का प्यारा।
माँ का भी है बहुत दुलारा॥
कूद-कूदकर लड्डू खाता।
घर में ऊधम ख़ूब मचाता॥
पढ़ने में मन सदा लगाता।
प्रातः नित्य टहलने जाता॥

कोहिनूर

लेखक, श्रीयुत रतनचन्द सावनसुखा

संसार का सबसे बड़ा हीरा कोहिनूर है। यह हीरा अब इँगलैंड के सम्राट् के पास है।

कई शताब्दियों के पहले यह हीरा भारतवर्ष में लाया गया था। यह इतना चमकीला, साफ़ और सुन्दर है कि बड़े-बड़े राजा-महाराजा इसे ख़रीदने को उत्सुक थे। मुग़ल बादशाह शाहजहाँ ने उसे कई लाख रुपयों में ख़रीद लिया और उसे अपने तख़्तताऊस में जड़ा दिया। मुग़ल-दरबार में बहुत-सी सुन्दर चीज़ें थीं। पर उन सब चीज़ों में यह हीरा ही सबसे अधिक सुन्दर था।

जब मुग़ल-साम्राज्य का पतन हुआ, मुहम्मदशाह मुग़ल-साम्राज्य का अन्तिम बादशाह था। जब वह दिल्ली में राज्य कर रहा था तब नादिरशाह नाम के एक लुटेरे ने दिल्ली पर धावा किया। दिल्ली के पास पहुँचते ही उसने शहर को चारों तरफ़ से घेर लिया। मुहम्मदशाह से कुछ करते-धरते न बना और उस लुटेरे ने आसानी से दिल्ली पर क़ब्ज़ा कर लिया। फिर उसने सबों को लूटना शुरू किया। वह धन का लालची था, राज्य का नहीं। उसने जितना धन हो सका, ले लिया, लेकिन वह अमूल्य हीरा उसके हाथ न आया। मुहम्मदशाह ने उस हीरे को अपनी पगड़ी में छिपा रक्खा था। यह बात जब नादिरशाह को मालूम पड़ी तो उसने जान-बूझकर मुग़ल बादशाह से सन्धि कर ली। उसे हीरा लेने की एक तरकीब सूझी। उसने मुहम्मदशाह से कहा—"यह दिखाने के लिए कि हम दोनों प्रिय मित्र [illegible] अपनी-अपनी पगड़ी बदलनी चाहिए।"

लाचार होकर मुहम्मदशाह को यह [illegible] स्वीकार करना पड़ा और उसने अपनी [illegible] नादिरशाह को दे दी।

जब नादिरशाह ने हीरा पा लिया तब [illegible] ख़ुशी का ठिकाना न रहा और उसने उस [illegible] नाम "कोहिनूर" रख दिया। कोहिनूर का [illegible] है "प्रकाश का पर्वत"।

कुछ दिन के बाद कोहिनूर एक [illegible] सरदार के हाथ में पड़ गया। एक बार [illegible] को लोगों ने अपने राज्य से निकाल [illegible] अफ़ग़ान भटकते-भटकते हिन्दुस्तान पहुँचा।

उस समय पञ्जाब में महाराजा रणजी[illegible] राज्य करते थे। रणजीतसिंह बहुत दयालु भाव के राजा थे। उन्होंने उस अफ़ग़ान [illegible] अपने यहाँ ठहरा लिया और उसके खाने-पी[illegible] भी प्रबन्ध कर दिया। अफ़ग़ान सरदार [illegible] होकर महाराजाधिराज को वह अमूल्य [illegible] दिया। कुछ वर्ष उपरान्त अँगरेज़ों ने पञ्जा[illegible] जीत लिया। अँगरेज़ों ने 'कोहिनूर' को [illegible] और महारानी विक्टोरिया के पास पुरस्कार [illegible] में इँगलैंड भेज दिया।

महारानी विक्टोरिया इस हीरे को [illegible] बहुत ख़ुश हुई और उसे अपने मुकुट [illegible] दिया। उस समय से कोहिनूर ब्रिटिश स[illegible] पास ही है।
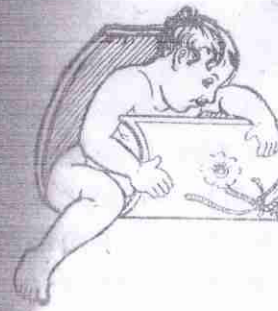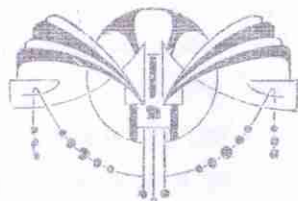
कमाल अतातुर्क

लेखिका, श्रीमती प्रेमलता वर्मा

[illegible] अतातुर्क का नाम योरप के बड़े-बड़े [illegible] में लिया जाता है। तुर्की को उसने एक [illegible] जीवन प्रदान किया। आज तुर्की जो कुछ [illegible] कर सका है उसका अधिक श्रेय कमाल [illegible] ही है।

[illegible] पाशा का जन्म १८८० ई० में सालो[illegible] शहर में [illegible] उनके पिता [illegible] अलीरज़ा [illegible] वहाँ चुंगी [illegible] थे। [illegible] धनी न होने [illegible] उन्हें पैसे [illegible] कमी [illegible] थी। कमाल [illegible] से ही अक्खड़ [illegible] लड़ाकू थे। [illegible] छोटे थे [illegible] इनके पिता की [illegible] गई। स्कूल [illegible] की किसी [illegible] न थी। इस [illegible] अन्त में स्कूल [illegible] पड़ा। कमाल की रुचि देखकर उन्हें सालो[illegible] के सैनिक स्कूल में भेज दिया गया। वहाँ की शिक्षा समाप्त करने पर ये फ़ौज के कप्तान बना दिये गये।

कमाल अतातुर्क

इस समय तुर्की की दशा बहुत ही शोचनीय थी। तुर्की का सुल्तान आलसी और आराम-पसन्द था। तुर्की का शासन बदलने के लिए युवक तुर्कों ने एक दल बनाया था। मुस्तफ़ा कमाल भी उसके सदस्य हो गये। सेना में रहकर मुस्तफ़ा को देश की हालत समझने में बड़ी सहायता मिली।

सन् १९१४ में जब योरप में युद्ध छिड़ा तो तुर्की ने जर्मनी का साथ दिया। अँगरेज़ी सेनाओं ने तुर्की पर हमला कर दिया। हमले को रोकने का भार एक जर्मन अफ़सर को सौंपा गया। कमाल भी उस जर्मन की सेना में थे। मुस्तफ़ा कमाल ने इस युद्ध में बड़ी वीरता और योग्यता दिखाई, जिससे ख़ुश

होकर सुल्तान ने उन्हें 'पाशा' की उपाधि दी। सन् १९१८ में जर्मनी हार गया और उसके साथ तुर्की की भी हार हो गई। तुर्की के कमज़ोर सुल्तान ने सन्धि की सब शर्तें मान लीं पर कमाल पाशा से यह सब न देखा गया। वह अपने साथियों के साथ अंगोरा पहुँचा और वहाँ एक बड़ी सेना संगठित करके यूनान से युद्ध छेड़ दिया। यूनान के हार जाने से कमाल पाशा का बड़ा नाम हुआ। उन्हें सुल्तान ने 'ग़ाज़ी' की उपाधि दी।

कमाल पाशा के हाथ में देश का सारा शासन आ गया। सब लोगों ने उससे सन्धि कर ली। जब उसने देखा कि अब कोई ख़ास शत्रु नहीं रह गया तब वह सेना के सङ्गठन के काम में लग गया। जहाज़ और हवाई जहाज़ बनाने की भी तरकीबें निकाली गईं। तरह-तरह के हथियार बनाने के कारख़ाने खोले गये। इसके बाद कमाल तुर्की की सामाजिक तथा धार्मिक उन्नति की ओर झुके।

परन्तु सुल्तान के कारण काम में म... रुकावट पड़ती थी। इसलिए सन १९२५ में सु... को हटाकर कमाल पाशा तुर्की के डिक्टेटर बन... उन्होंने सभी पुराने और बेकार क़ानूनों ... कर दिया और उनके स्थान पर नये क़ानून ब... उन्होंने शिक्षा का प्रबन्ध किया। स्कूलों के तरीक़ों में परिवर्तन कर दिया और रोमन लि... प्रचार किया। इससे शिक्षा के विस्तार में ... सहायता मिली।

उन्होंने अपना सारा जीवन तुर्की की ... में ही लगा दिया। उन्हीं के परिश्रम का यह फ... है कि जिस तुर्की को योरपवाले अपने दे... काला धब्बा समझते थे और जिसके पास ... आज़ादी की रक्षा करने भर की भी शक्ति ... थी उसी तुर्की का अब सम्मान करते हैं ... उसकी सैनिक शक्ति से भय खाते हैं।

भोला प्रश्न

लेखक, श्रीयुत 'युगल'

माँ, बोलो, वह चाँद कहाँ है?
कहाँ गये वे तारे?
रात-रात भर जो जुगनू-से
जलते थे बेचारे।
पूरब में क्या आग लगी है,
जो यह लाली छाई?
डर से चह-चह करती चिड़िया
डाल-डाल पर आई।

साँझ समय तेरे बाबूजी
मुन्नू थककर आते;
उसी तरह नानी के घर पर
तारे थककर जाते,
पथिक रात के अन्धकार से
भूल डगर जो जाते;
दीप जला भगवान उन्हीं को
सच्ची राह दिखाते।
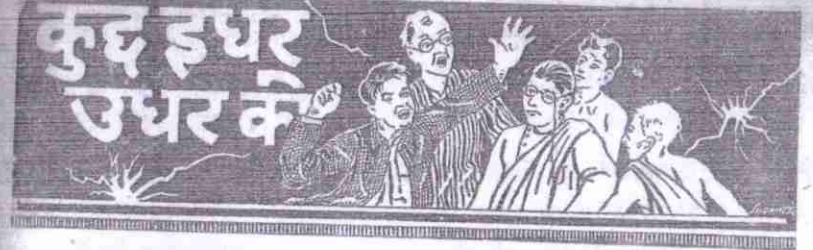
नये खेल

...र्मी आ गई है, स्कूल की छुट्टियाँ भी हो गई हैं ... खेलने के लिए बहुत समय मिलता है ... बाहर धूप रहती है। इसलिए लाचार होकर ...ार्थी को कमरे के भीतर ही बन्द रहना ...ा है। बहुत-से बाल-सखा सोचते हैं कि कमरे ... कौन-सा खेल खेला जाय। यहाँ पर मैं ... खेल बताता हूँ जो बड़ा ही मज़ेदार है। ...सके लिए जितने ही लोग हों उतना ही ... है। एक लड़का जज चुन लिया जाता है। ...ह कुर्सी पर बैठ जाता है और अपनी गोद में ...किया रख लेता है। उसके सामने एक ख़ाली ... रख दी जाती है। एक-एक लड़का आकर ...र्सी पर बैठता है और जज बना हुआ लड़का ...म्भीरता से तीन प्रश्न पूछता है। उत्तर देने- ... लड़का उन प्रश्नों का उत्तर न देकर केवल ...ही कहता है कि—अरे बेचारा! ...ज ऐसे प्रश्न पूछता है कि जवाब देनेवाले ... तो हँसी ही आ जाय या उत्तर देने को ही ... होना पड़े। यदि जवाब देनेवाले लड़के को ... गई या उसने किसी प्रश्न का जवाब दे ... तो फिर उसे जज बनना पड़ता है। इसी ...ल चलता रहता है।

—निरंकारनाथ अग्रवाल

कितनी सलाइयाँ बचीं?

दियासलाई की बहुत-सी जली हुई सलाइयाँ ... रख दो और अपने मित्र से अपनी आँख पर कपड़ा बाँधने को कहो। अब अपने मित्र से कहो कि उन सलाइयों को मेज़ के दाहिने और बाईं ओर एक तरतीब से फैलाकर इस तरह रखे कि दाहिनी ओर सलाइयों की संख्या बाईं ओर की सलाइयों की संख्या से एक ज़्यादा रहे।

अब उससे कहो कि बाईं ओर की सलाइयों में से दो सलाई निकाल ले। अब उससे कहो कि दाहिनी ओर की सलाइयों से उतनी ही सलाइयाँ निकाल ले जितनी कि बाईं ओर शेष हैं। जब यह हो चुके तब अपने मित्रों से कहो कि दाहिनी ओर तीन सलाइयाँ बची हैं। चाहे जितनी सलाइयाँ क्यों न इस्तेमाल की गई हों पर उत्तर तीन ही होगा। तुम्हारे मित्रों को आश्चर्य होगा कि आँख बन्द होने पर भी तुमने यह कैसे बता दिया।

—राधेश्याम अग्रवाल

चीन का परीक्षा-भवन

शायद हममें से हरएक परीक्षा-भवन में बैठ चुके हैं। आज मैं चीनी परीक्षा-भवन के बारे में कुछ कहना चाहता हूँ और वह यह है कि यह सभी परीक्षा-भवन से निराला है। यह परीक्षा-भवन कैन्टन में है।

अब चीनी परीक्षा-भवन बहुत बदल गये हैं। पुराने ज़माने और आज के परीक्षा-भवनों में आकाश-पाताल का अन्तर है। उन दिनों, सबों की यही इच्छा थी कि वह सरकारी नौकर हो जाय। इसलिए उन्हें एक परीक्षा पास करनी पड़ती थी। जो चाहते

वे परीक्षा देते पर नाई और नाविक परीक्षा नहीं दे सकते थे चूँकि वे नीच जाति के समझे जाते थे।

जब परीक्षा का समय निकट आता और परीक्षार्थी सम्मिलित होते तो वे एक ही कमरे में नहीं बैठते थे। हर परीक्षार्थी को एक डिब्बे के समान वस्तु दी जाती थी। जब वह उसमें प्रवेश कर जाता, इसमें ताला बन्द कर दिया जाता था। और जब वह अपना काम कर चुकता था तब निकाला जाता था। परीक्षा में एक लेख आता था जिसका सम्बन्ध चीनी लेखकों से होता था। सारे डिब्बे एक मञ्च के चारों ओर रखे रहते थे। इस मञ्च पर निरीक्षक बैठता था और वहाँ से वह चारों ओर निरीक्षण करता था। इस प्रकार परीक्षार्थी चोरी नहीं कर पाते थे।

जब परीक्षा-फल प्रकाशित होता था, चारों ओर काफ़ी सनसनी फैल जाती थी। सब जगह के परीक्षार्थी आते थे। वहाँ वाले इसमें काफ़ी दिलचस्पी लेते थे। चीन में ग्रामीण मन्दिर प[...] एक या दो नक्काशी किये हुए लकड़ी के [...] होते थे। इन पर उस गाँव के परीक्षा[...] सफलता असफलता के बारे में लिखा होता[...] जिस प्रकार हमारे यहाँ बी० ए०, एम० ए[...] डाक्टर तीन रूप हैं उसी प्रकार वहाँ भी ती[...] थे। यदि कोई आदमी डाक्टरी पास कर [...] उसकी बड़ी इज्जत होती थी। उसे सर[...] ओर से काफ़ी सम्मान और ऊँचा पद मिल[...] जो नीचे के दर्जे पास करते वे फ़ौज में भर्ती [...] जाते थे। चीन-वासियों में एक फ़ौजी आद[...] भी काफ़ी इज्जत होती है।

साथ ही वे लोग यह भी समझते [...] फालतू आदमी ही फ़ौज में भर्ती होते हैं।

इन सब कठिनाइयों के होने पर भी [...] सरकारी पदवाले बहुत कम तनख्वाह प[...] यहाँ तक कि एक सूबा का 'लाट' [...] पाता था।

फूल और लड़के

लेखिका, कुमारी प्रमीला श्रीवास्तव

रङ्ग-बिरङ्गे पंखोंवाली
सोने की किरणों सँग उठकर;
फूलों के सँग खेल रही थी
उन्हें नींद से जगा-जगाकर।
उसी समय लड़कों की टोली
आई चुनते ओसों के कन,
रंग-बिरंगी तितली को लख
ललच उठा उन सब का ही मन!

उसे पकड़ने दौड़े वे सब
पर तितली भी क्या कुछ कम थी,
इधर उधर बैठी फूलों
लोच हुई फिर वह अनुपम
चिढ़ करके लड़कों ने क्ष[...]
फूल नष्ट कर डाले
बैठ दूर रोती थी तितली
गिरे फूल भू पर लख प्यारे।

गर्मी
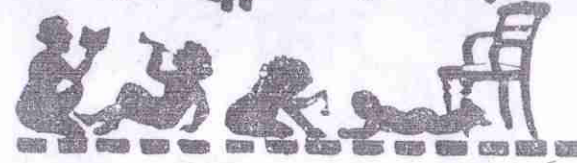
लेखक, श्रीयुत नरेशसिंह

[...] आई, गर्मी आई!
[...] लोगों में सुस्ती छाई!
[...] बाबा बैठे रहते,
'बाहर मत निकलो' हैं कहते!
जब ज़ोरों से आँधी आती,
आँखों में है धूल समाती;
तन में आता ख़ूब पसीना,
तर हो जाता कपड़ा झीना।

खिलौना

लेखिका, श्री उदेशकुमारी

[...]-चलो माँ तुम बाज़ार,
[...] दो मुझे खिलौना चार।
कुत्ता, घोड़ा, बिल्ली एक,
रामलखन दो मुझको एक॥

मेरी नाव

लेखिका, कुमारी निर्मल दत्त

आओ-आओ देखो भैया,
छोटी-सी है मेरी नैया,
लहरों को चीर हटाती,
विजयी हो पाल उड़ाती,
बल खाती बढ़ती जाती,
यह ख़ूब मज़े दिखलाती,
मथुरा कलकत्ता, काशी,
कन्नौज कालपी झाँसी,
जाती है तेज़ हवा-सी,
थकती भी नहीं ज़रा-सी।
है सुन्दर मेरी नैया!

कोयल

लेखक, श्रीयुत गोपालकृष्ण बांगण

यद्यपि मैं हूँ बेहद काली,
औ' जाती औरों से पाली!
रंग देखकर पर मत डरना,
गुण का आदर तुम भी करना,
पर जब पञ्चम स्वर से गाती,
सब लोगों के मन को भाती।

परीक्षा-फल

लेखक, श्रीयुत हिम्मतलाल नागर

अब इम्तहान का अन्त हुआ
फल सुनने का दिन आया है।
सब लड़कों के कोमल मन में
असफलता का डर छाया है।
है एक बार हर वर्ष यहीं
डर बनकर यह दिन आता है।
कितनों को ख़ुश कर देता है
कितनों को बहुत रुलाता है।

हम चारों

लेखिका, कुमारी लक्ष्मीबाई निगम

मुन्नी, बड्डा, रज्जू, रानी,
चारों में है छोटी रानी।
मुन्नी से छोटा बड्डा है,
मानो यह पूरा गुड्डा है।
'बड्डा मालिक रज्जू नौकर'
रज्जू चिढ़ता ऐसा सुनकर
नौकर से कहता है राजा
मुन्नू कुत्ते से भी पाजी।

पण्डितजी ने क्लास में आते ही शङ्कर से पूछा—नदी बहती है या नदी बहता है, क्या शुद्ध है ?

शङ्कर दिहाती था, बोला—पण्डितजी, नदी बहती है, न बहता है। नदी बहे है।"

— बच्ची रानी

× × × ×

सोहन—(मन में) मेरा मित्र रोज़ मेरी हँसी उड़ाता आज उसकी भी मज़ाक़ करूँ। इतना कहकर वह उसका मित्र जहाँ सोता था वहाँ गया और तलवार से सिर काटकर खाट के नीचे रख दिया।

सोहन—(ख़ुशी से) बच्चूजी, आज तो अपना सिर न देखकर ज़रूर सिटपिटायेंगे, क्योंकि देखेंगे कहाँ से ? आँख तो सिर में है न ?

—गिरिजाप्रसाद नागर

× × × ×

रमेश—(पिता से) बाबूजी, आपके कहने के अनुसार आज मैं अस्पताल में बिलकुल नहीं रोया, अब मिठाई दीजिए।

पिता—शाबाश बेटा, देखें तो तुम्हारी आँख में अच्छी तरह दवा छोड़ा है।

रमेश—जब मैं वहाँ (अस्पताल) गया तब डाक्टर साहब थे ही नहीं।

× × × ×

एक भिखमंगा भीख माँगता हुआ एक वकील साहब के दरवाजे पर पहुँचा। वकील साहब बाहर खड़े थे। भिखमंगे ने कहा—"बाबूजी, कुछ खाने को मिले।"

वकील साहब—घर पर इस समय मालकिन नहीं हैं।

भिखमंगा—मैं तो भूखा हूँ, मालकिन को थोड़े माँग रहा हूँ, खाने को माँगता हूँ।

—कुमारी राजकिशोरीदेवी

जज—(क़ैदियों से) तुम अपना मामला [illegible] बाहर क्यों नहीं फ़ैसल कर लेते।

क़ैदी—हम फ़ैसले तो कर ही रहे थे कि [illegible] आकर बीच ही में दख़ल दे दिया और हमको [illegible] कर लिया।

× × ×

शिक्षक—नवल, यह बताओ विलायत जाने [illegible] अगर अफ़्रीका होकर गुज़रें तो क्या दशा होगी ?

नवल—वाह गुरु महाराज, यह भी कोई [illegible] यह तो सब ही जानते हैं। इस तरफ़ होकर जायँगे [illegible] आटा लगेगा।

× × ×

एक अँगरेज़ का नाम था जॉन होल। [illegible] आलसी था कि अपना नाम लिखने समय का[illegible] लिखकर उसके पास ही एक छेद कर दिया करता [illegible]

× × ×

एक बार चोर न्यायाधीश के सामने लाया ग[illegible] हिन्दी का केवल तीन ही शब्द जानता था—'हाँ[illegible]' 'बहुत अच्छा'।

न्यायाधीश—क्या तुमने चोरी की है ?

चोर—हाँ।

न्यायाधीश—क्या तुम कुछ कहना चाहते हो[illegible]

चोर—नहीं।

न्यायाधीश—मैं तुमको एक वर्ष की सज़ा दे[illegible]

चोर—बहुत अच्छा।

× × ×

अध्यापक—सोहन, अमरीका कहाँ पर है ?

सोहन—अमरीका नक़शे में है।

[illegible] रहूँ गोल रहूँ दाने भी रखूँ अपार।
[illegible] होने पर भी मुझको समझो नहीं अनार॥
[illegible] मुँह में रखने को सब बार-बार तैयार।
[illegible] बता सकने पर तुम समझो अपनी ही हार॥

(टमाटर)

[illegible] काट दो उसका तो,
हो जाय भयङ्कर आग।
[illegible] शीश उलटने से हो,
सुन्दर कोमल राग॥

(आगरा)

—पुष्पलता गोयल

× × × ×

[illegible] न उसका किसी को भाता।
[illegible] से भी काला दिखलाता॥
[illegible] इधर कभी उधर है जाता।
चारों ओर ठोकरें है खाता॥

(कौवा)

—मनहर शर्मा

× × × ×

तीन अक्षर का मेरा नाम।
आदि कटे तो तोता बनता॥
मध्य कटे पर संख्या बनता।
अन्त कटे तो किरण कहाता॥

(अशुक)

× × ×

तीन अक्षर का मेरा नाम,
आदि कटे तो वर्ण बताता।
मध्य कटे तो परिमाण बताता,
अन्त कटे तो जानवर बनता।

(अजाति)

—बच्ची रानी

× × ×

गोली टेढ़ी जलभरी,
सिर पर रक्खी आग।
जब बजाओ बाँसुरी,
निकले काला नाग॥

(हुक्का)

—गिरिजाप्रसाद

× × × ×

तीन अक्षर का मेरा नाम।
आती हूँ मैं सबके काम॥
आदि कटे मैं गज बन जाऊँ।
अन्त कटे बगुला कहलाऊँ॥

(बकरी)

—मदनलाल

× × × ×

पाँच अक्षर का मेरा नाम,
उलट पुलट में भी समान,
नया जीवन देना है काम,
यदि बतलाओ तो लो इनाम।

(नव जीवन)

—सागरमल मेहता

× × × ×

इन्द्र की सास वरुण की ताई।
धरती फोड़ पाताल से आई॥

(नल)

× × × ×

हरी बढ़ावे लाल रुकावे।
काली-काली धुआँ उड़ावे॥

(रेल)

—हरदयाल सिंह

× × × ×
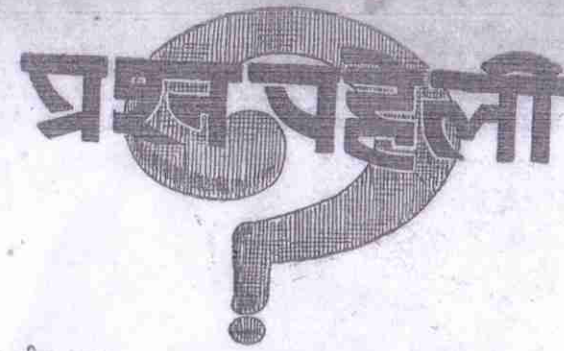
दो चोर चोरी करने गये। उन दोनों में एक बहुत भोला था और दूसरा था चतुर। वे दोनों एक घर में घुसे। भाग्यवश उस समय वहाँ कोई नहीं था। वे दोनों उस कमरे में पहुँचे जहाँ रुपये रखे हुए थे। उन्होंने सन्दूक को आसानी से तोड़ डाला और नोटों का बंडल निकाल लिया। अब भोले चोर ने वहीं पर बैठकर नोटों को गिनना शुरू किया। यह देखकर दूसरे चोर ने पूछा—"भाई, यह क्या करते हो।"

भोले चोर ने उत्तर दिया—"कुछ नहीं नोटों को गिन रहा हूँ ताकि मालूम पड़ जाय कि हमने कितने रुपये चुराये हैं।"

यह सुनकर दूसरे चोर ने कहा—"गिनने की क्या जरूरत है। कल सवेरे ही अखबार में मालूम पड़ जायगा कि कितने रुपये चोरी गये हैं।"

× × × ×

एक बार दो मित्र रेल से यात्रा कर रहे थे। उनका नाम था सोहन और मोहन। जब वे बम्बई पहुँचे तो सोहन ने देखा कि मोहन की पेटी गायब है। उसने मोहन से कहा—"भाई तुम्हारी पेटी गायब हो गई है। मोहन ने सिर हिलाते हुए कहा—"पेटी गायब हो गई तो क्या हुआ, उसकी चाबी तो मेरे पास है।"

—रतनचन्द सावनसुखा मद्रास।

× × × ×

गोपाल—पोस्टमास्टर जी! मेरी एक चिट्ठी आई है, दे दीजिये।

पोस्टमास्टर—तुम्हारा नाम और पता क्या है?

गोपाल—जी, चिट्ठी के ऊपर लिखा है। पढ़ लीजिये।

—रामप्रवेश तिवारी।

× × × ×

गुरु जी ने लड़कों से 'कबूतर' पर लेख लि[illegible] कहा। पर राम नहीं लिख लाया था। गुरु [illegible] पर उसने कहा—

गुरु जी मेरे यहाँ कबूतर नहीं है। और [illegible] कबूतर पकड़ाता ही न था। तब मैं लिखता कैसे।

× × ×

अध्यापक—(नये विद्यार्थी से) तुम्हारा क्या [illegible]

विद्यार्थी—"मूर्खानन्द"

अध्यापक—नाम तो बड़ा अच्छा है।

विद्यार्थी—अच्छा है तो आप रख लीजिये। [illegible] खोज लूँगा।

—दीपेन्द्रनाथ [illegible]

× × ×

पिता—(रमेश से) तुम अपने कक्षा में [illegible] होगे।

रमेश—(पिता से) नहीं सबसे पीछे तो दो [illegible]

—आनन्द [illegible]

× × ×

पिता—(मुन्नू से) तुम क्यों रोते हो।

मुन्नू—मास्टर साहब ने मारा है।

पिता—क्यों?

मुन्नू—उसने एक सवाल किया जो कोई उत्त[illegible] सिर्फ मैंने दिया।

पिता—फिर क्यों मारा? वह प्रश्न क्या था[illegible]

मुन्नू—मेज के दराज में बिल्ली का [illegible] रखा?

—राजेन्द्र[illegible]

× × ×

[illegible]टा, बड़ा कीड़ा सा।
[illegible] मैं खट मीठा सा॥
(शहतूत)

× × ×

तीन अक्षर का मेरा नाम!
आता हूँ सोने के काम॥
आदि कटे तो लँगड़ा बनूँ।
मध्य कटे तो पैर बनूँ॥
(पलँग)

× × ×

[illegible] तान से नहीं गाता है।" इस वाक्य में एक प्रसिद्ध [illegible] नाम छिपा है। खोजकर बताओ।

(तानसेन)

—राधारमण जोशी 'रमण'

× × ×

तीन अक्षर का मेरा नाम।
अन्त कटे तो होता काम॥
मध्य कटे तो मौत हो जाता।
आदि कटे तो जल बन जाता॥
(काजल)

—शशिभूषण

× × ×

दो अक्षर की गर्म चीज मैं,
सारे जग में पाती हूँ।
जीवन है मुश्किल मेरे बिन,
पर न आग कहलाती हूँ॥
(धूप)

—बनवारीलाल डंगायच

× × ×

तीन अक्षर का मेरा नाम,
आदि कटे 'साम' बन जाता।
मध्य कटे 'आम' हूँ खाता,
अन्त कटे 'आसा' बन जाता॥
(आसाम)

× × ×

दो अक्षर का मेरा नाम,
रहता हूँ मैं सबके साथ।
गर्मी में मैं सोया करता,
जाड़े में मैं सोता जगता॥
(रोआँ)

—जगदेव

× × ×

आदि काटकर रानी लाऊँ,
अन्त काटकर 'पुरा' खाऊँ।
मध्य काट 'पुनी' बन जाऊँ
पूर्ण हो बूढ़ी कहलाऊँ॥
(पुरानी)

—आनन्ददेव

× × ×

'र' सङ्ग जोड़ सुझे। जब भाई,
प्रथम हटा मुख वचन न आई।
अन्त हटा दो, मुझे बुला लो,
उभय मिले फल एक चखाऊँ॥
(आम)

× × ×

तीन अक्षर का यही बखेड़ा,
सबके भीतर करूँ बसेरा।
प्रथम हटे शोणित संचारूँ,
अन्त-हीन आदर सिर धारूँ।
तीस दिवस तक करूँ निवास,
यदि मध्यम देवे निकाल।
(मानस)

—श्यामदेव

अभी पिछले दिनों भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक सर पी० सी० राय का स्वर्गवास हो गया। सर पी० सी० राय ने अपनी खोजों से संसार को चकित कर दिया था। भारतवर्ष के प्रति उनके हृदय में अगाध प्रेम था तथा बच्चों को वे बहुत चाहते थे। हम उनकी स्वर्गीय आत्मा के लिए प्रार्थना करते हैं।

× × × ×

एक बालसखा ने हमसे पूछा है कि जल जाने पर क्या करना चाहिए। उनका कहना है कि अक्सर लैम्प जलाते समय उनकी उँगलियाँ दियासलाई की लपक से जल जाती हैं। साधारण जलने में चमड़ा लाल पड़ जाता है और जलने लगता है। ऐसी हालत में चूने के पानी से धोने से आराम होता है। यदि फफोले पड़ गये हों तो चूने का पानी और शहद फेंटकर लगाइये।

× × × ×

किरण ने हमारे पास कई पत्र लिखे हैं। उनका कहना है कि वे हर महीने जब बालसखा देखती हैं, तो लिखनेवालों के नामों को देखकर उनकी भी इच्छा कुछ लिखने की होती है। वे कहानियाँ लिखना चाहती हैं परन्तु कोई नई कहानी उन्हें नहीं सूझती। उन्होंने नई कहानियाँ सूझने का उपाय पूछा है। क्या कोई बालसखा बताने करेंगे।

× × ×

इस अङ्क में हम कुछ ऐसे खेल खेलने के रहे हैं जो कमरे में बैठकर खेले जा सकते हैं। अपने पसन्द के कुछ खेल दूसरे बालसखा लिख भेजें।

× × ×

संसार के सात आश्चर्यों के बारे में आ से सुना होगा। उनके बारे में श्रीयुत गोवि इस अङ्क में बहुत सुन्दर ढङ्ग से बताया है। पढ़कर आप संसार के सात आश्चर्यों के बारे में प्राप्त कर सकेंगे।

× × ×

पिछले अङ्क में हमने बालसखाओं के लिए वाहिक कहानी प्रकाशित करने का वादा किया कुछ कारणवश हम उसे इस अङ्क से प्रकाशित सके, अगले अङ्क से वह प्रकाशित होगी।

बड़ी देर से रोतीं आप।

गुड़िया देख हुई चुपचाप।

फूलों से बातचीत

मुझको माँ है फूल बताती
हँसती रहती मैं दिन-रात;
आती पर जब पास तुम्हारे
नहीं फूल! क्यों करते बात?

तितली के सँग खेला करते,
भौंरों के सँग हो गाते;
मुझको आते देख किन्तु तुम
जाने क्यों चुप हो जाते!

हँस हँस मुझसे बात करो तो
आऊँ अपनी गुड़ियाँ ले,
तितली भौंरों को भी कह दो
साथ-साथ हम खेलें।

—राजकुमारी अग्रवाल
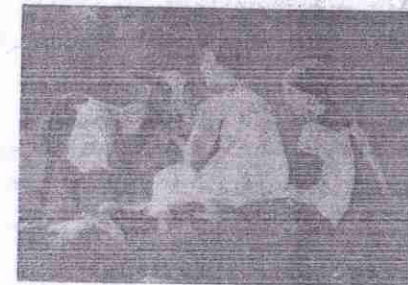
आओ हम तुम खेलें खेल।

है अजीब ही इनका खेल।

लखनऊ से श्री हरिवंशकिशोर लिखते हैं कि उन्होंने बहुत-देश-विदेश के टिकट संग्रह कर रक्खे हैं। उनके पास बहुत-से टिकट ऐसे भी हैं जो एक से अधिक हैं। जो बाल-सखा उनसे टिकट बदलना चाहें वे उनसे पत्र-व्यवहार करें; उनका पता यह है—श्री हरिवंशकिशोर द्वारा डाक्टर आर० के० सेठ, एम० बी०, बी० एस०, सराय मालीखाँ, लखनऊ।

× × × ×

श्री नत्थूलाल शर्मा लिखते हैं कि श्री वंशीधर शर्मा की अपनी बनाई दो पहेलियाँ फ़रवरी सन् १९४० के 'बाल-सखा' में प्रकाशित हुई थीं। उन्हें ही ज्यों की त्यों श्रीराम शर्मा ने अपने नाम से पिछले मार्च के 'बाल-सखा' में प्रकाशित कराया है। यह बड़े ही दुःख की बात है। आशा है बाल-सखा भविष्य में ऐसा न करेंगे।

× × × ×

इस अङ्क में हम श्रीयुत सुरेशशरण अग्रवाल का एक लेख प्रकाशित कर रहे हैं। इस लेख में उन्होंने तारों तथा पृथ्वी से उनकी दूरी के बारे में बड़े मनोरंजक ढङ्ग से समझाया है। भविष्य में वे हमारे प्यारे बाल[illegible] विज्ञान की ओर बहुत-सी ऐसी बातें बतायेंगे।

× × ×

श्रीकण्ठगोपाल वैद्य ने 'बच्चों की सात कहा[illegible] की एक बड़ी ही सुन्दर पुस्तक लिखी है। [illegible] पढ़ने योग्य सात कहानियाँ हैं। 'राजा और [illegible] बहन' और 'मज़दूर की रामकहानी इस संग्र[illegible] अच्छी कहानियाँ हैं। हमें विश्वास है कि बाल[illegible] यह पुस्तक पसन्द आयेगी। इसका मूल्य छः [illegible] मिलने का पता शिवाजी-बुकडिपो, लखनऊ है।

× × ×

'हरिश्चन्द्र' ने अपना गोंडा सम्मेलन अ[illegible] किया है। इसमें सम्मेलन की कार्यवाही के अ[illegible] प्रकार की पाठ्य-सामग्री भी है। यद्यपि हरिश[illegible] पत्र है फिर भी इसके सम्पादक राय दुर्गाप्रस[illegible] आदर्श के प्रयत्न से यह आज-कल बहुत सु[illegible] रहा है।

नहीं छपेंगी

स्थानाभाव के कारण नीचे लिखी रचनायें 'बाल-सखा' में नहीं प्रकाशित हो सकेंगी। प्रेषकगण क्षमा[illegible]

कहानियाँ—श्री विश्वम्भरनाथ अवस्थी, निर्मला दत्ता, रामसेवक 'सेवक', बैजनाथ दास्रो, उमाशङ्कर [illegible] नरेन्द्र सिंह, 'नरेन्द्र', त्रिलोकचन्द्र जैन, मोहनलाल बजरावाला, प्रतापनारायणसिंह की।

कवितायें—श्री भीखनचन्द्र मंनहोत, शम्भूलाल 'देशी', बद्र प्रसाद, अर्जुनसिंह, त्रिलोकसागर जैन, [illegible] जैन, सत्यदेव, कुमारी कमल दत्ता, सागरमल 'मेहता', चन्द्रप्रकाश श्रीवास्तव, विजयसिंह, कुंवर नरेन्द्रसिंह, बाल[illegible] 'विकट', राजेन्द्र शर्मा, नूर मुहम्मद, रामकृष्णप्रसाद नवलकिशोरप्रसाद सिनहा और कृष्णानन्द की।

फुटकर—श्रीरामसिंहासनसहाय, कुमारी सरोजिनी भटनागर, शत्रुसेन सिंह, वीरेन्द्रकुमार विद्या[illegible] सिंह अध्यापक, श्रीनाथ दुबे, कुमारी सतनाम की।

Printed & Published by A. Bose, at the Indian Press, Ltd., Benares Branch, Benares.

सम्पादक { श्रीनाथसिंह
अनन्तप्रसाद विद्यार्थी

२८] जून १९४४—आषाढ़ २००१ [संख्या ६

बढ़े चलें

लेखक, श्रीयुत मधुरमोहन अवधिया "विक्रम"

हम प्रतिपल आगे बढ़े चलें।
हो ध्येय हमारा चलना ही
मग के तापों में जलना ही
जानें न कभी हम ढलना ही
जीवन ऐसा ही गढ़े चलें।
जब हम चलने की टेक धरें
तब बस जल थल नभ एक करें
कुछ भी कठिनाई से न डरें
नित पाठ प्रगति का पढ़े चलें।
बाधायें आयें, आने दें
अड़चन-घन छायें, छाने दें
दुख मँडरायें, मँडराने दें
बस, अपने पथ पर अड़े चलें।
विघ्नों के सम्मुख तन जावें
साहस के पुतले बन जावें
जीवन में नव जीवन लावें
अपनी उमङ्ग में चढ़े चलें।
सुख-दुख का कुछ भी ख़्याल न हो
मन, मुख पर रंज-मलाल न हो
धीमी पैरों की चाल न हो
हिम्मत में मन को मढ़े चलें।
हम प्रतिपल आगे बढ़े चलें॥

बाबू शिवप्रसाद गुप्त

लेखिक, श्रीयुत प्रभुदयाल विद्यार्थी

बाबू शिवप्रसाद जी ने लाखों रुपया पैदा किया और लाखों रुपया देश के काम में खुलकर दान किया। ऐसे महापुरुष का जीवन कितना पवित्र और सरल था; यह आज लिखने की बात नहीं रही।

काशी का बच्चा-बच्चा उनके देश-प्रेम को जानता है। गली-गली में उनकी चर्चा है। अपने देश के लिए उन्हें अभिमान था। देश के बालकों के लिए उन्हें अनुराग था। पढ़े-लिखे लोगों के लिए उन्होंने 'पृथ्वी-प्रदक्षिणा' लिखी है जिसमें सारे देश की बातें बड़े ही रोचक ढङ्ग से लिखी गई हैं। उन्हें अपने शहर काशी के लिए अभिमान था, इसी लिए तो उन्होंने वहाँ से 'आज' नाम का दैनिक समाचार-पत्र प्रकाशित कराया और भारत माता का मन्दिर बनवाया।

बाबा विश्वनाथ का दर्शन करना जितना पवित्र समझा जाता है, उतना ही पवित्र भारत माता का मन्दिर देखना भी है। हर एक यात्री बनारस पहुँचने पर भारत माता का मन्दिर देखने अ जाता है।

बाबू शिवप्रसाद गुप्त ने बहुत धन करके यह मन्दिर बनवाया है। इसके बन देश के प्रसिद्ध कलाकारों ने अपनी कला परिचय दिया है। भारत का चित्र बहुत ही सुन्द है। सभी जाति के लोग लिए मन्दिर खुला रहता इसमें किसी देवी-देवता की नहीं है और न पान-फूल की इजाज़त है। यह तो भूमि का मानचित्र है गोदी में हम सब खेल बड़े होते हैं और अपनी करनी के अनुसार उसकी में फिर समा जाते हैं। की सूझ अनोखी थी। जीवित मूर्ति लाखों रुपया खर्च करके गये हैं।

बाबू शिवप्रसाद

बाबू शिवप्रसाद गुप्त बहुत धनी परिवा थे, लेकिन जैसा धन का अपव्यय धनी परि लोग करते हैं वैसा बाबूजी ने अपने हा या नहीं किया। रुपया तो लाखों कमाया पर उन्होंने परोपकार के कामों में ही खर्च कर दिया। बनारस हिन्दू-यूनिवर्सिटी में हज़ारों रुपया मालवीयजी को दिया। वे कितने ही विद्यार्थियों को छात्र-वृत्ति भी देते थे।

दस लाख रुपया देकर उन्होंने काशी-विद्यापीठ की नींव डाली। काशी-विद्यापीठ के पुस्तकालय के लिए हज़ारों रुपया दिया। हिन्दी में पुस्तक लिखवाने के लिए भी उन्होंने बहुत खर्च किया। जो भी उनके पास सहायता के लिए जाता वह निराश नहीं लौट पाता था।

'आज' अख़बार में उन्हें बराबर नुक़सान उठाना पड़ रहा था, पर उन्होंने इसकी परवा नहीं की। वे आदर्श के पीछे मर मिटनेवाले व्यक्ति थे। कांग्रेस की सहायता वे तन, मन, धन से समय-समय पर करते रहते थे। बाबूजी देश में ऊँच-नीच के जटिल भेद-भाव को बिलकुल पसन्द नहीं करते थे।

आप अपने देश को हरा-भरा और सुशिक्षित देखना चाहते थे।

देश के अनेक महान् व्यक्तियों से आपका परिचय था। महात्मा गाँधी से आप विशेष प्रभावित थे।

आप महात्मा गाँधी को हृदय से पूजते थे और उनकी आज्ञाओं को मानते थे। ग़रीबों के साथ आपको सहानुभूति थी।

मरते दम तक आपको अपने देश का ख़याल रहा है। मृत्यु-शय्या पर से भी आप देश-कार्य यथाशक्ति करते रहे।

छोटे-छोटे बालकों के लिए आपने स्वर्गीय बाबू रामदास गौड़ से कितनी ही पुस्तकें लिखवाईं, जिससे हमारे देश के बालक वीर और स्वाभिमानी बनें।

बाबूजी अपनी बात के धनी और पक्के आदर्शवादी थे। हिन्दी की उन्नति का आपको विशेष ध्यान रहता था। ऐसे महापुरुष के जीवन से हम लोगों को शिक्षा लेनी चाहिए।

इक्केवाला

लेखक, श्रीयुत लक्ष्मीनारायण "सरोज"

इक्केवाले इक्केवाले,
देंगे तुझको पैसे चार।
हमें बिठा ले हमें बिठा ले,
ले चल हमको तू बाज़ार॥
इधर घुमा के उधर घुमा के,
ले चल गलियों में से पार।
हाट हवेली निरी निराली,
गन्दी नलियों से कर पार॥

टन टन करते इक्के आते,
भौं भौं करती मोटरकार।
इन्हें बचाना पार कराना,
आ पहुँचा अब बीच बज़ार।
यहीं छोड़ दे यहीं छोड़ दे,
ये ले अपने पैसे चार।
उतरो भैया मुन्नू-चुन्नू,
ठहरेंगे हम घण्टे चार॥

उदास होकर मोटर-साइकिल की ओर देखा। सहसा उसे एक बात सूझी। उसने सुनील से कहा—भैया, तुम तो अब मोटर-साइकिल चलाना सीख गये होगे।

सुनील ने गर्व से गर्दन ऊँची करके कहा—हाँ, अच्छी तरह चला सकता हूँ। इसमें क्या रक्खा है? बस, बैठकर इस लोहे को पैर से दबा दो और यह चलने लगेगी।

बेबी ने उसके निकट आकर चुपके से कहा—न हो, आओ हम लोग इस पर थोड़ी दूर तक घूम आवें। वे साहब तो भीतर पिताजी के पास बैठे हैं। उन्हें पता भी न लगेगा और हम फिर मोटर इसी जगह लाकर रख देंगे।

सुनील ने कुछ देर सोचा। तरकीब तो अच्छी है। उसने तुरन्त ही कहा—हाँ-हाँ, चलो और वह मोटर-साइकिल पर बैठ गया।

बेबी उसके पीछे बैठा और उसने उसकी कमीज़ कन्धों पर पकड़ ली।

सुनील ने लोहे को दबाया; घर-घर की आवाज़ हुई। सुनील को सब याद था, जैसा कि मोटर के मालिक ने किया था। मोटर-साइकिल का पहिया घूमने लगा और वह दरवाज़े की ओर भागी। मोटर की आवाज़ सुनकर पिताजी और मोटर-साइकिल के स्वामी बाहर निकल आये। उन्होंने जो इन्हें मोटर साइकिल पर भागते देखा तो क्षण भर तक तो चुपचाप देखते रहे फिर वे उनके पीछे दौड़े। मोटर भागी जा रही थी। सा[illegible] की सड़क पर अधिक भीड़-भाड़ नहीं रहती, फिर [illegible] तेज़ मोटर साइकिल आते देख रास्ता यों ही खा[illegible] कर दिया जाता था। पिताजी और मो[illegible] साइकिल के मालिक पीछे-पीछे दौड़े आ रहे थे।

सड़क के किनारे एक तालाब था। सा[illegible] मोटर-साइकिल उसी ओर को मुड़ गई। सुनी[illegible] बहुत घबड़ाया परन्तु उसे कोई उपाय न सूझा[illegible] उछलकर मोटर-साइकिल तालाब में कूद पड़ी।

तालाब में बहुत-से बतख तैर रहे थे। मो[illegible] साइकिल जहाँ पर गिरी थी वहाँ कई बतख [illegible] रहे थे। घबड़ाकर वे पानी के धरातल से थो[illegible] ऊपर उड़े तो संयोगवश सुनील ने मोटर-साइ[illegible] का हैंडिल छोड़कर दोनों हाथों में एक-एक ब[illegible] की पूँछ पकड़ ली। बेबी उसके कन्धे को ज़ोर [illegible] पकड़े हुए थे। अब दोनों बतखें थीं जो तैर[illegible] भागना चाहती थीं और सुनील उनकी पूँछ प[illegible] पानी से बाहर निकलने की कोशिश कर रहा [illegible] और बेबी सुनील के कन्धे से चिपट गया था।

शायद वे दोनों बतखों को भी लेकर [illegible] जाते पर उसी समय उनके पिता आ गये [illegible] वे लोग पानी से बाहर निकाल लिये गये। मोट[illegible] साइकिल की तो कीचड़ में दुर्दशा हो गई थ[illegible] पर उस दिन से जब वे किसी को मोटर-साइकि[illegible] पर बैठे देखते हैं तो उन्हें बड़ा डर मा[illegible] होता है।
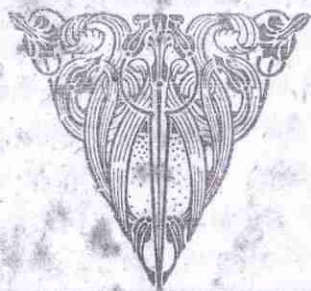
अद्भुत जीव-जन्तु

लेखक, श्रीयुत वल्लभदास बिन्नानी 'ब्रजेश', मिर्ज़ापुर

ईश्वर ने ऐसे-ऐसे आश्चर्यजनक जीव-[illegible]न्तुओं का निर्माण किया है जिन्हें देखकर दाँतों [illegible] उंगली दबानी पड़ती है। उसने ऐसे-ऐसे [illegible] हाथी, रंग-बिरंगी मछलियाँ, चींटी, मनुष्यभक्षी [illegible] और बहुत से अद्भुत जानवरों का निर्माण [illegible]या है। इस लेख में हम कुछ अद्भुत जीव-[illegible]न्तुओं की चर्चा करने बैठे हैं।

[illegible]ोरल सागर में टर्टल हेड नामक एक टापू [illegible]। इसमें एक ऐसे प्रकार का अद्भुत पक्षी पाया [illegible]ता है जो ५-५ फ़ीट तक लम्बा और २८० [illegible] तक का होता है। ये पानी में तैरती रहती भी [illegible]। इनको मनुष्यों से कुछ भय नहीं रहता और किसी [illegible] व्यक्ति के उस टापू में पहुँचते ही, रात के समय [illegible] उसपर हमला कर देती हैं। इस वास्ते वह टापू [illegible]जन है। वहाँ लाखों-करोड़ों की संख्या में इन्हीं [illegible]यों की बस्ती है और इनका पूरा राज्य है।

इसी टापू से लगभग ५० मील दूर दुनिया [illegible] एक सबसे आश्चर्यजनक टापू मिकल्मस द्वीप [illegible]। यहाँ तीन प्रकार की चिड़ियाँ पाई जाती [illegible]। ढील-ढौल में उपर्युक्त चिड़ियों की तरह [illegible]ी हैं पर उनमें एक खास विशेषता यह है कि [illegible] रात-दिन चीं-चीं की आवाज़ करती हैं। सोते, [illegible]ते, उठते, बैठते, आते-जाते अर्थात् कोई क्षण [illegible]ी नहीं जाता था, जब कि वे न चिल्ला रही [illegible]। वह टापू निर्जन है और वहाँ हमेशा चिड़ियों [illegible] कलरव सुनाई पड़ता है। इसका शब्द सैकड़ों [illegible] तक की दूरी तक जाता है। शब्द बहुत [illegible]नक होने की वजह से इस टापू में कोई जाने [illegible] प्रयत्न नहीं करता।

दक्षिणी हिन्द महासागर में करग्यूइलन टापू कुत्तों से भरा हुआ है जो बिल्कुल भूँकना नहीं जानते। किसी ने इनको आज तक भूँकते हुए नहीं सुना है। कैसे आश्चर्य की बात है।

पहले मैडागास्कर टापू में एक ऐसे प्रकार की मुर्ग़ी पाई जाती थी और अब भी पाई जाती है जो नव-दस फ़ीट तक की होती है और तीन फ़ीट व्यास का अण्डा देती है। यहीं एक ऐसी प्रकार की मकड़ी पाई जाती है जो सीटी बजाती है और इसकी आवाज़ कुछ दूर तक सुनाई देती है। एक अन्य प्रकार की भी मकड़ी पाई जाती है जो २-३-४ फ़ीट या इससे भी अधिक लम्बी होती है। उसके जाल इतने मज़बूत होते हैं कि उसमें चिड़ियों इत्यादि का फँस जाना एक मामूली बात है।

भारत के नैपाल देश में एक इस प्रकार की चिड़िया पाई जाती है जिसके पैर बहुत ही छोटे होते हैं, पर चोंच उसकी अत्यधिक लम्बी होती है।

पूर्वी इंडीज़ के टापुओं में एक बिल्ली के समान जानवर पाया जाता है जिसे लेमर कहते हैं। इसकी पूँछ बहुत लम्बी होती है। ये बहुत सुस्त व धीरे-धीरे चलनेवाले होते हैं, यहाँ तक कि एक लेमर को एक पतङ्गा—जोकि २ फ़ीट की दूरी पर था—उसे पकड़ने में एक घंटा लगा।

दुनिया के कई भागों में जहाँ समुद्र बहुत गहरे हैं, कहीं-कहीं ऐसी ऐसी जाति की मछलियाँ पाई जाती हैं, जिनके बदन से फ़ॉस्फ़र के रूप में एक प्रकार का प्रकाश निकलता है। इससे यह स्पष्ट है कि ये मछलियाँ अँधेरे में भी समुद्र में सब चीज़ें देखती होंगी। एक प्रकार की और मछली पाई जाती है जिसे हम अग्नि-रूप मछली कह सकते हैं। ऐसी मछली के पीठ पर अभ्रक के समान, पर खूब चमकदार निर्जीव मांस के

छोटे-छोटे टुकड़ों की क़तार होती है—उसी से प्रकाश निकलता है। दक्षिण अफ़्रीका के किसी-किसी भाग में कभी-कभी ऐसी मछलियाँ पाई गई हैं जिनकी आकृति बिल्कुल मनुष्य की-सी होती है। हाथ-पैर, नाक-कान इत्यादि बिल्कुल मनुष्य के समान होते हैं। न्यूयार्क के अजायबघर में एक ऐसी ही मृत मछली को कोट, पैंट, कमीज़, टाई, हैट इत्यादि पहनाकर बैठा दिया गया है। दर्शक लोग इसे देखकर इसे एक विशेष व्यक्ति समझकर भारी धोखा खाते हैं।

ब्रेज़िल और गाइना के दलदलों में बिजली की मछलियाँ पाई जाती हैं। ये अपने शत्रुओं को मारने के लिए बिजली का करेन्ट मारती हैं। मद्रास के अजायबघर में हमने एक ऐसी मछली देखी है जो गोल ग़ुब्बारे की तरह फूली रहती है। शरीर दबा दो, ग़ुब्बारा पचक जायगा, फिर कुछ समय बाद ग़ुब्बारा बन जायगा।

दुनिया में कहीं-कहीं ऐसी मछलियाँ पाई जाती हैं जो पेड़ों पर चढ़ती हैं और वहीं रहती हैं। भोजन की तलाश में वे पानी में जाती हैं। कुछ मछलियाँ पानी में घोंसला बनाकर रहती हैं और सामुद्रिक लता-पत्ताओं से ही उनका घोंसला बना रहता है। इन्हीं घोंसलों में ये अण्डे देती हैं। ऐसी मछलियों में गिरगिट की तरह रंग बदलने की शक्ति रहती है।

एक विशेष कीड़ा जिसे कैफीनोमिया [illegible] हैं, युरोप व दक्षिणी अमेरिका के कुछ भागों [illegible] पाया जाता है। यह संसार का सबसे [illegible] उड़नेवाला कीड़ा है। यह एक घण्टे में ८[illegible] मील यानी एक मिनट में लगभग १४ माल [illegible] है। ये इतना तेज़ उड़ते हैं कि इनका पक[illegible] मुश्किल हो जाता है। धोखे ही से पकड़े [illegible] सकते हैं। यह मधुमक्खी के आकार से [illegible] बड़ा होता है।

स्याम देश में कुछ ऐसे वनमानुस और [illegible] पाये गये हैं जो हम लोगों से भली भाँति बातें [illegible] कर सकते हैं। लिख सकते हैं, पढ़ सकते [illegible] उनमें से कुछ बन्दर स्याम के एक बैंक में [illegible] जाँचने और गिनने का काम करते हैं।

अभी हाल ही में अमेरिका में एक बहुत [illegible] शरीरवाले जानवर का पता चला है। [illegible] छिपकिली की शक्ल का है। इसकी ऊँचाई [illegible] फ़ीट है। आप उसकी लम्बाई का इसी से [illegible] मान कर सकते हैं कि कई हाथियों की पंक्ति [illegible] उसकी पूँछ के नीचे छिप जाती थी। उ[illegible] लम्बाई १६० फ़ीट है। कितना वज़न है—इ[illegible] तो कोई ठीक पता ही न लगा सका फिर भी [illegible] अनुमान किया जाता है कि यह १००० टन [illegible] कम नहीं है।

गाड़ी

लेखक, श्रीयुत श्रीभागवतदत्त मिश्र

गाड़ी आई ! गाड़ी आई !
जल्दी से बस कपड़े पहनो
धोती पहनो, कुर्त्ता पहनो
झोले में रक्खो मिठाइयाँ
दौड़ो भाई ! दौड़ो भाई !
गाड़ी आई ! गाड़ी आई ॥१॥

मत इतना तुम देर लगाओ
जो लेना हो, लेकर आओ
जल्दी आओ, दादा आये
दादी आई ! दादा आई !
गाड़ी आई ! गाड़ी आई ॥२॥

हंस का न्याय

लेखक, श्रीयुत गुलाबसिंह राना

[illegible] बार तोता, कबूतर और कौवे में झगड़ा [illegible] गया। तोते का कहना था—"मैं तुम दोनों से [illegible], क्योंकि मैं अपनी मीठी बोली बोलकर [illegible] को मोहित कर लेता हूँ। पर निर्दय मनुष्य [illegible] बिना अपराध क़ैदी बनाकर पिँजड़े में डाल [illegible]। अपनी स्वतन्त्रता छिन जाने पर यद्यपि मैं [illegible] रहता हूँ, तब भी प्रातःकाल 'राम-राम', 'सीता-[illegible]' आदि शुभ नामों को भजता हूँ। इस प्रकार मैं [illegible] को राम-नाम का उपदेश देता हूँ। जब से [illegible]स्वामी तुलसीदास को मैंने राम-नाम का ज्ञान [illegible] तब से लोग मुझे प्रेमपूर्वक अपने घर में [illegible] में रखते हैं जिससे मेरा सम्मान बढ़ गया [illegible] मेरी लाल चोंच की सुन्दरता पर मुग्ध हैं।"

यह सुनकर कबूतर बोला—"तुलसीदासजी [illegible] रामायण में कहा—"कर्म प्रधान विश्व कर [illegible], जो जस करे सो तस फल चाखा।" मैं कर्म [illegible] में किससे कम हूँ ? जब पुराने समय में डाक-[illegible] का प्रबन्ध नहीं था, उस समय मैं ही पत्रों को [illegible] जगह से दूसरी जगह पहुँचाया करता था। [illegible] युद्ध में जब शत्रुओं के भय से पत्रों का [illegible]-जाना कठिन हो गया था तब मैं ही पत्र-[illegible] का काम किया करता था जो कि मनुष्य [illegible] कर सकते। अपने आप "मियाँ-मिट्ठू" बनना [illegible] नहीं है, तब भी मैं एक उदाहरण देता हूँ। [illegible] बार बादशाह अकबर ने बीरबल से आसमान [illegible] ऐसा पका मकान बनवाने को कहा, जो [illegible] से छुआ न हो। बीरबल ने तत्काल २५ जोड़े [illegible] आकाश की ओर उड़ा दिये। जिस समय [illegible] आकाश-मण्डल में गुटरू-गूँ करने लगे [illegible] समय बीरबल ने बादशाह से कहा—"जहाँ-[illegible], आकाश में इमारत बनानेवाले कारीगर आ गये, जो चूना-गारे की पुकार मचा रहे हैं। जल्द चूना-गारा भिजवाइए। बादशाह को बहुत तअज्जुब हुआ और बीरबल की बुद्धिमत्ता पर प्रसन्न होकर इनाम दिया।"

कौवे ने कहा—"हमारी चालाकी और होशियारी तो जगत्प्रसिद्ध है ही किन्तु हम जैसे सङ्गठित हैं उसे देखकर मनुष्य भी चकरा जाते हैं। जब हममें से किसी पर कोई सङ्कट आता है तो हम सब कौवे मिलकर सहानुभूति प्रकट करने के लिए वहाँ एकत्रित हो शिकारी को लज्जित कर अपने भाई को उत्साहित कर अपने धर्म का पालन करते हैं। हमारा कौवों का एक राष्ट्र है जो हम सब अपने कौवे-राष्ट्र के घटक हैं। किसकी मजाल है कि हम पर कोई उँगली उठा दे। हम सब उस पर एक साथ टूट पड़ते हैं।

इसी तरह तोता, कबूतर और कौवा अपनी श्रेष्ठता का दावा कर रहे थे कि कबूतर ने प्रस्ताव रखा कि भाई इसका फ़ैसला हंसराज के दरबार में किया जाय। तोते ने इसका समर्थन किया, क्योंकि तोते और कबूतर को अपनी विजय की आशा थी। दोनों ख़ुशी-ख़ुशी हंस के पास पहुँचे। पीछे से कौवा भी आया। हंस के सामने मुक़दमा पेश हुआ। तीनों ने बारी-बारी से अपने बड़प्पन के बयान पेश किये। हंस ने सब के बयान सुन दूसरे दिन यह फ़ैसला किया—"यह ठीक है कि तोते ने अपनी मधुर बोली से मनुष्यों को आकर्षित किया किन्तु अपनी मातृ-भाषा और जाति के साथ अन्याय किया। वे अपनी मातृ-भाषा 'टें-टें' छोड़कर मनुष्यों की भाषा बोलने लगे और जङ्गली फल-फूलों को छोड़कर चित्र-कोटी, दूध-रोटी कहकर दूध-रोटी आदि खाने की इच्छा प्रकट की। इसलिए वे बन्दी के रूप में

पिँजड़े में रक्खे गये। उन्होंने सिर्फ़ दूध-रोटी के लिए मनुष्य की भाषा को अपनाया और बन्दी हो गये। किसी भी क़ैदी के लिए उसके क़ैदख़ाने का प्रमाण कभी भी बड़प्पन नहीं माना जा सकता। इसलिए वे पक्षी-वर्ग में बड़प्पन के योग्य नहीं। कबूतर ने भी जो अपने सबूत पेश किये हैं उनसे प्रकट है कि वे भी अपने जाति-बन्धुओं से अलग होकर मनुष्यों के हित के लिए, स्वार्थवश बन्दी बने हैं। इसलिए वे भी तोते के दर्जे में आ गये। हाँ, कौवों [illegible] पारस्परिक सङ्गठन प्रशंसनीय है। तोते और क[illegible] को उनसे शिक्षा लेनी चाहिए कि वे सङ्गठन [illegible] स्वतन्त्रता से कैसे रहते हैं। यद्यपि उनकी भ[illegible] मधुर नहीं है तब भी उन्होंने अपनी मातृ-भाषा [illegible] रक्षा करके उसे त्यागा नहीं और अपनी जाति [illegible] सीमा में रहे। इसलिए वे पक्षी-समाज में बुजि[illegible] हैं और बड़प्पन के योग्य हैं।"

देहली मेल

लेखक, श्रीयुत निरंकारदेव सेवक, एम० ए०

देहली मेल! देहली मेल!!
झक झक, भक भक
झक झक, भक भक
करती आती, देहली मेल!
देहली मेल!!
यह देहली से आनेवाली
कलकत्ते तक जानेवाली,
कलकत्ते से वापिस होकर
फिर देहली तक आनेवाली।
देहली मेल! देहली मेल!!
झक झक, भक भक
झक झक, भक भक
करती आती देहली मेल!
देहली मेल!!
पहिए इसके मोटे मोटे,
बड़े बड़े औ छोटे छोटे,
इसके डिब्बे लम्बे चौड़े
जैसे हों गढ़ के परकोटे।
देहली मेल! देहली मेल!!
झक झक, भक भक
झक झक, भक भक
करती आती, देहली मेल!
देहली मेल!!
धू - धू धुआँ उड़ाता इंजन,
कू-कू सीटी देता छन-छन,
देख हरी झंडी को हिलता
लेकर रेल हवा जाता बन!
देहली मेल! देहली मेल!!
झक झक, भक भक
झक झक, भक भक
करती आती, देहली मेल!
देहली मेल!!
इसके डिब्बे राघव रंजन,
रामू स्यामू रम्मन झम्मन,
राजिन्दर है टिकट कलक्टर
हरी गार्ड औ' मैं हूँ इंजन।
यह है रेल रेल का खेल,
देहली मेल! देहली मेल!!
झक झक, भक भक
झक झक, भक भक
करती आती देहली मेल!
देहली मेल!!

मेरे किमी की कहानी

लेखक, श्रीयुत सत्यदेव

आप जानते हैं किमी कौन है? न जानते [illegible]। आज मैं उसके सम्बन्ध में आप लोगों [illegible] बताऊँगा। किमी मेरा प्यारा कुत्ता है। [illegible] बड़े भाई उसे उसकी माँ के पास से लाये [illegible] वह बहुत छोटा था। अपनी माँ को न [illegible] पहले वह बहुत घबड़ाया; खाना खाना भी [illegible] दिया। मैं उसे लिये हुए दिन भर [illegible] फिरा तब कहीं वह अपनी माँ की याद भूल [illegible] और उसने दूध पिया। फिर तो वह मुझको [illegible] परच गया कि दिन रात मेरे ही पास रहने [illegible]। जब मैं स्कूल जाता तो वह मेरे साथ जाकर [illegible] दरवाज़े पर बैठा रहता। स्कूल के सभी [illegible] को वह पहचानने लगा। उनके साथ [illegible] वह बहुत .खुश होता।

[illegible] एक आदत बहुत ख़राब थी वह यह [illegible] उसे भूख लगती तो वह घर में जहाँ भी

[illegible] रक्खी देखता लेकर चट कर जाता। एक [illegible] बहुत बिगड़ी और मुझसे कहा कि तुम्हारे [illegible] आदत बहुत ख़राब है। यदि अब [illegible] बिना माँगे कोई चीज़ ली तो मैं इसे घर में [illegible] दूँगी।

[illegible] मैं क्या करता। दिन भर मैंने उसे [illegible] माँगना सिखाया। धीरे-धीरे करके वह इसे अच्छी तरह सीख गया और जब कभी उसे कोई चीज़ माँगनी होती तो वह अपना पैर फैलाकर माँगता।

मेरे यहाँ पास-पड़ोस के बहुत से लड़के आते थे। उन्हें किसी का इस तरह हाथ फैलाकर माँगना बहुत अच्छा लगता था। इसलिए अक्सर वे अपने साथ बिस्कुट या जेमनजूस ले आते और किमी को दिखा-दिखाकर उसे माँगने को मजबूर करते।

यों तो किमी बहुत अच्छा कुत्ता है परन्तु बार-बार माँगने में उसे बहुत तकलीफ़ होती। इसलिए वह अक्सर जब माँगते-माँगते थक जाता तो हमारे पास से चला जाता और बाग़ में तितलियों के पीछे दौड़ने लगता।

एक दिन मेरे एक मित्र आये। माँ ने हम लोगों को खाने के लिए बिस्कुट दिये। मेरे मित्र को किमी का माँगना तो अच्छा लगता ही था; उन्होंने किमी को बुलाकर माँगने के लिए कहा। हर बार वह किमी को बिस्कुट का एक छोटा सा टुकड़ा पकड़ा देते। आख़िरकार एक बार किमी खीझ उठा और उसने एक झपाटे से उनके हाथ से सारा बिस्कुट अपने मुँह में ले लिया और बाग़ की ओर भाग गया।

मुझे उसकी इस हरकत पर बड़ा .गुस्सा आया और मैंने उसे इसके लिए सज़ा देने का निश्चय किया। थोड़ी देर बाद किमी फिर हमारे पास आया पर हमने उसे डाँटकर भगा दिया। वह हमसे थोड़ी दूर पर जाकर उदास होकर बैठ गया जैसे बड़े अफ़सोस में हो।

थोड़ी देर बाद मेरे मित्र अपने घर चले गये; पिताजी बाज़ार जा रहे थे। मैं भी उनके साथ
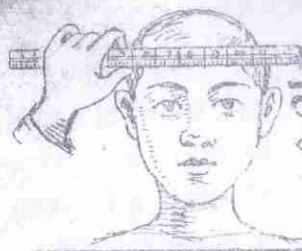
लेखक, श्रीयुत देवेन्द्रकुमार, लखनऊ

हम यहाँ पर कुछ बहुत ही आसान और ऐसे प्रश्न देते हैं जिनका उत्तर तुम्हें मालूम होना चाहिए। इन प्रश्नों को पढ़कर इनका उत्तर सोच निकालिए। अपने उत्तर को दूसरे पेज पर दिये गये इन प्रश्नों के उत्तर से मिलाइए। देखिए कितने प्रश्नों के उत्तर सही हैं। यदि तीन या उससे भी कम प्रश्नों के उत्तर सही हैं तो साधारण ज्ञान बढ़ानेवाली किताबें और अधिक पढ़िए।

१—संसार का सबसे बड़ा रेगिस्तान कौन सा है और उसका क्षेत्रफल कितना है ?

२—संसार के सबसे ऊँचे झरने का क्या नाम है और वह कितनी ऊँचाई से गिरता है ?

३—सबसे बहुमूल्य धातु कौन सी है ?

४—सबसे ऊँची, सबसे नीची और स बड़ी झीलें कौन सी हैं ?

५—संसार में गेहूँ की कितनी क़िस्में होती

६—आसमान में कितनी ऊँचाई तक पहुँच सका है ?

७—संसार की उस सबसे ऊँची पर्वत का नाम बताओ जिस पर आज तक कोई पहुँच सका।

८—भारत और लङ्का के बीच के समुद्र गहराई कितनी है ?

९—'संसार की छत' तिब्बत के पठार कितना ऊँचा है ?

१०—गङ्गा सबसे कम गहरी और कहाँ पर हैं ?

नदी

लेखक, श्रीयुत गुलाबचन्द चोपड़ा, मुंगेली

मैं बड़ी दूर से आती हूँ।
पवत का हूँ संवाद लिये,
झरनों का घोर निनाद लिये,
दोनों का हाहाकार लिये,
शेरों की हुंकार लिये !
फूलों की साथ सुवास लिये,
बाग़ों का सुन्दर हास लिये;
शहरों का हूँ मैं मान लिये
गाँवों कुटियों की जान लिये;
सागर से मिलने जाती हूँ
मैं बड़ी दूर से आती हूँ।

समझदार राजा

लेखक, श्रीयुत श्रीकण्ठगोपाल वैद्य

बात बहुत पुरानी है। बिहार प्रान्त में एक राज्य करता था। राह चलते उसे जब लड़का मिलता तो वह उसको नमस्कार ज़रूर था, चाहे वह बूढ़े या जवानों की ओर हाथ उठाता।

लोगों को राजा के इस व्यवहार से बड़ा होता था कि राजा छोटे लड़कों को नमस्कार करता है। जो लोग राजा से उम्र में उनको नमस्कार करना चाहे वह भूल जाय बच्चों को नमस्कार करने से वह कभी चूकता। इसका क्या कारण है। इसमें रहस्य है। बहुतों का तो यह ख़याल कि राजा पागल हो गये हैं। होते-होते यह राजा के मन्त्री के कानों में भी पहुँची।

मन्त्री ने एक दिन राजा से इसका कारण का निश्चय किया। एक दिन प्रातःकाल बैठे थे। मन्त्री नेकहा—"महाराज, आज्ञा हो तो एक बात पूछूँ।"

राजा ने कहा—"अवश्य कहो, क्या पूछना है ?"

मन्त्री ने कहा—"प्रभो, आपको लोग पागल हैं।"

राजा ने कहा—"क्यों ! हमको, और पागल हैं। निडर होकर कहो कैसे हम पागल हैं। क्या पागलपन का काम किया है जिससे लोग पागल कहते हैं ?"

मन्त्री ने कहा—"बात यह है कि आप बच्चों हाथ जोड़ते हैं। इस राज्य में कितने बड़े-बड़े पण्डित, ज्योतिषी, एक से एक बढ़े कवि, लोग रहते हैं। उनकी ओर तो आप हाथ तक नहीं उठाते हैं। इसका क्या कारण है। छोटे बच्चों को नमस्कार न करके उनको तो आशीर्वाद देना चाहिए।"

राजा ने कहा—"केवल इसी बात पर लोग मुझे पागल कहते हैं।"

मन्त्री ने कहा—"हाँ राजन्! यही बात है। इसका रहस्य हमें समझाइए जिससे कि लोगों से कह दें कि राजा बच्चों को क्यों नमस्कार करते हैं।"

राजा ने कहा—"मैं जो करता हूँ वह ठीक करता हूँ। इसका कारण कल दरबार में बताऊँगा।"

दूसरे दिन राजदरबार में बहुत भीड़ थी। राजा ने लड़कों को अपने अगल-बगल बैठाया और फिर कहना शुरू किया—"लोग मुझे पागल कहते हैं; क्योंकि मैं बच्चों को नमस्कार करता हूँ और बड़े-बूढ़ों को नहीं। इसका कारण यह है कि जो लोग बड़े-बूढ़े हो गये हैं, उन्होंने क्या किया है और वे क्या करेंगे—यह तो सबको मालूम है। मगर छोटे लड़कों के सम्बन्ध में किसी को यह नहीं मालूम है कि वे क्या करेंगे। यह तो उनका भविष्य बतलायेगा। जब मैं छोटे बच्चों को देखता हूँ तो मेरे मन में यह भावना पैदा हो जाती है कि पता नहीं इसमें से कौन कितना बड़ा आदमी हो, कौन राम सरीखा बने, कौन कितना नाम कमावे। इसी लिए जब मैं छोटे बच्चों को देखता हूँ तो नमस्कार करता हूँ। बच्चों को नमस्कार करने का यही रहस्य है।"

मन्त्री ने कहा—"धन्य राजा ! धन्य राजा ! आपका जयजयकार हो। आपका दिमाग़ नहीं ख़राब है। दिमाग़ तो हम लोगों का ख़राब है जो कि हम लोग इतनी दूर की बातें नहीं सोच सकते हैं।"

परियों के बीच

लेखिका, श्री विमला देवी

'ऐसा न कहो पद्मिनी। दुनिया में परियाँ होती हैं। मैंने भी उन्हें देखा है।' मैंने कहा।

मेरी बात सुनकर पद्मिनी को विश्वास न हुआ। परियों की कहानियाँ उसने भी बहुत-सी सुनी हैं, परन्तु मेरी तरह कभी परी देखने का अवसर उसे नहीं मिला। उसने उत्तर दिया—"होती होंगी, पर मैं तो तब तक विश्वास नहीं कर सकती जब तक कि उन्हें स्वयं अपनी आँखों से न देख लूँ।"

इसका उत्तर भला मैं क्या देती पर मुझे न जाने क्यों परियों पर विश्वास है। मैंने कहा—"तुमने परियाँ नहीं देखीं! वाह, तुमने फूल देखे हैं, तितलियाँ देखी हैं। क्या कभी तुमने यह भी सोचा है कि रात को ये सब कहाँ चले जाते हैं। रात में ये परियाँ बन जाते हैं और यदि तुम रात को बाग़ में जाकर देखो तो तुम्हें परियाँ खेलती हुई दिखाई पड़ेंगी।"

रात का नाम सुनते ही पद्मिनी सकपका गई। शाम होते ही वह सो जाती है, इसलिए वह मुझसे परी दिखाने की बात न कह सकी।

उस दिन रात को जब मैं अपने कमरे में लेटी [illegible] बार परियों का ध्यान आ रहा था। मैं सो[illegible] थी कि क्या सचमुच ही फूल और तितलियाँ [illegible] में परियों का रूप बना लेते हैं! ऐसा ही तो [illegible] लोगों के मुख से सुना है।

घर का सारा काम समाप्त करने के बाद [illegible] कमरे में आई। उसने चादर मेरे ऊपर डाल दी [illegible] स्वयं भी चारपाई पर लेट गई। रात बीतती [illegible] रही थी और चारों ओर सन्नाटा हो गया [illegible] केवल मैं ही अपनी चारपाई पर पड़ी हुई खि[illegible] से बाहर बाग़ की ओर देख रही थी।

सहसा मुझे बाग़ में कुछ आहट सुनाई [illegible] लगी। ज़रूर ही परियाँ आ गई होंगी। [illegible] धीरे से उसे और किवाड़े खोलकर बाग़ में पहुँ[illegible] बाग़ के बीच में एक छोटा-सा तालाब है, वहाँ [illegible] रोशनी हो रही थी। मैं भी उसी ओर चल प[illegible]

तालाब के निकट पहुँचकर मैंने देखा कि [illegible] पर एक नाव पड़ी है। ऐसी नाव मैंने [illegible] कभी नहीं देखी थी। यह फूलों की बनी हु[illegible] परन्तु उस पर कोई नहीं था।

थोड़ी देर तक मैं उस नाव को देखती [illegible] फिर मैंने मुड़कर पीछे की ओर देखा तो [illegible] आश्चर्य का ठिकाना न रहा। बहुत-सी छोटी-छोटी परियाँ फूलों पर उड़ रही थीं। उनका सारा शरीर सफ़ेद था, पंख लाल रंग के थे और वे अजीब-अजीब रंग के पतले झिलमिले कपड़े पहने थीं।

मैं उन्हें देख ही रही थी कि वे आकर मेरे चारों ओर खड़ी हो गईं। उनमें सबसे सुन्दर परी बढ़कर मेरे पास आ गई। उसका कपड़ा सोने की भाँति चमक रहा था। शायद वह उनकी रानी थी। उसने अपने साथ की परियों से कहा—"यह लड़की बहुत अच्छी है; क्योंकि यह हममें विश्वास करती है, इसलिए हम इसे अपने साथ घुमायेंगी।"

उसकी बात सुनकर मैं बहुत प्रसन्न हुई। परियों ने मुझे गोद में उठा लिया। उनके साथ कभी इस फूल पर और कभी उस फूल पर उड़ने लगी। उन्होंने मुझे आसमान की सैर कराई। मैं इतनी ख़ुश थी कि मुझे यह भी पता न चला कि कितनी देर हो गई है।

सहसा परियों की रानी ने सब परियों को बुलाया और कहा—"अब सवेरा हो रहा है। अब हमें चलना चाहिए।" मुझे किनारे पर खड़ी करके सब परियाँ फूलों की उस नाव पर आकर बैठ गईं। दो परियाँ नाव खेने लगीं। परियों की रानी ने मुझे नमस्कार किया और नाव आँखों से ओझल होने लगी।

इसी समय माँ की पुकार सुनकर मैं चौंक पड़ी। देखा तो मैं अपने बिस्तर पर पड़ी थी। दौड़कर मैं पद्मिनी के पास पहुँची और उसे सारा क़िस्सा सुनाया। सुनकर उसने कहा—"अरे, तुमने सपना देखा होगा।"

पर जब मैंने उसे विश्वास दिलाया कि नहीं, यह सपना नहीं था तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। उस दिन से वह भी परियों में विश्वास करती है; रोज़ रात को वह उन्हें देखने की आशा लेकर लेटती है और बड़ी देर तक जागती रहती है, पर वे उसे कभी न दिखाई पड़ीं।

मैं भी फिर परियों से न मिल सकी। शायद वे इसलिए मुझसे ग़ुस्सा हो गईं कि मैंने यह सब बात पद्मिनी को बता दी।

पृष्ठ १७६ पर छपे प्रश्नों के उत्तर

१—संसार का सबसे बड़ा रेगिस्तान सहारा [illegible] यह अफ़्रीका के उत्तर में है और इसका क्षेत्रफल [illegible] लाख वर्ग मील है।

२—संसार का सबसे ऊँचा झरना वेनेज़ुला [illegible] यह एक मील की ऊँचाई से नीचे गिरता है।

३—रेडियम सब धातुओं से अधिक क़ीमती है।

४—संसार की सबसे ऊँची झील दक्षिणी [illegible]का की टिटीकाका झील, सबसे नीची [illegible]रिया की बैकाल झील और सबसे बड़ी रूस [illegible]डोगा झील है।

५—संसार में गेहूँ की एक हज़ार से भी अधिक [illegible] होती हैं।

६—अब मनुष्य आसमान में अधिक से अधिक १४ मील की ऊँचाई तक पहुँच सका है।

७—संसार की सबसे ऊँची पर्वत-चोटी का नाम एवरेस्ट है। यह ५½ मील ऊँची है और इस पर अभी तक कोई भी आदमी चढ़कर नहीं पहुँच सका।

८—भारत और लङ्का के बीच के समुद्र की गहराई केवल ५० गज़ है।

९—'संसार की छत' तिब्बत समुद्र से केवल ३ मील ऊँचा है।

१०—जहाँ से गंगाजी निकली हैं वहाँ वे १५ इंच गहरी और ९ गज चौड़ी हैं।
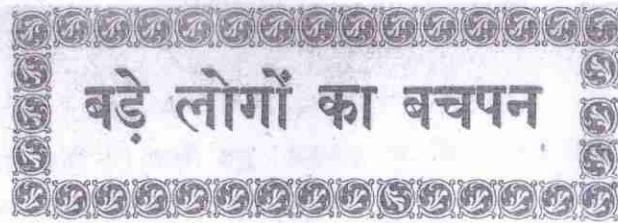
बड़े लोगों का बचपन

श्रीनिवास रामानुजन्

लेखक, श्रीयुत देवेन्द्र शर्मा, एम० एस-सी०

मास्टर साहब पढ़ा रहे थे-'जब किसी संख्या को उसी संख्या से भाग देते हैं तो भजनफल सदा एक होता है।'

'और जब शून्य को शून्य से भाग देते हैं तब ?' एक घुँघराले बाल और काली चमकती हुई आँखोंवाले लड़के ने पूछा। मास्टर साहब भी चकरा गये। क्या कोई भाई अपने मास्टर साहब से पूछकर बतायेगा ?

इस लड़के का नाम श्रीनिवास रामानुजन् था। वह २२ दिसम्बर सन् १८८७ को तञ्जौर ज़िले के एक गाँव में एक निर्धन ब्राह्मण-परिवार में पैदा हुआ था। जब वह तीसरी कक्षा में था तब उसने मास्टर साहब से ऊपरवाला सवाल किया था।

यही नहीं, जब वह चौथी कक्षा में था तो एक दिन उसने बी० ए० के एक विद्यार्थी से उसकी एक गणित की किताब माँगी। उस विद्यार्थी को यह जानकर अचम्भा हुआ कि रामानुजन् ने उस किताब को पूरा पढ़ ही नहीं डाला, वरन् वह उसके हरेक सवाल को बिना किसी की मदद के हल कर लेता है। फिर क्या था, वह विद्यार्थी अक्सर अपनी बहुत-सी कठिनाइयाँ उसी से दूर करा लेता।

खर्च की कमी के कारण रामानुजन् को अपनी पढ़ाई जल्दी ही खतम कर देनी पड़ी। वह एक दफ़्तर में क्लर्क हो गया। परन्तु उसकी गणित की खोज निरन्तर जारी रही। फटी-सी कॉपी में, जो अक्सर उसके साथ [illegible] वह अपने गुरु लिखा करता। उसके [illegible] को जब उसकी प्रतिभा का पता लगा तो [illegible] रामानुजन् के इँग्लेंड जाने का प्रबन्ध [illegible] पर इसमें उसकी माता की आज्ञा मिल[illegible] कठिनाई थी।

परन्तु होनी होकर रहती है। एक दिन [illegible] माँ ने सोकर उठने पर बेटे से कहा—"मैंने [illegible] में तुझे बहुत-से अँगरेज़ों के बीच एक बड़े से [illegible] में बैठा देखा है; और नामगिरि देवी ने [illegible] कहा है कि तेरे काम में रोड़ा न अटका।"

अब सबसे बड़ी कठिनाई दूर हो गई [illegible] रामानुजन् इँग्लेंड को रवाना हो गया। [illegible] में हार्डी नामक एक बड़े गणितज्ञ उसके मित्र [illegible] इस मैत्री की नींव पत्रों द्वारा भारत में ही पड़ [illegible] थी। तीस वर्ष की आयु में ही रामा[illegible] रॉयल सोसाइटी का सभ्य चुन लिया ग[illegible] यह एक बहुत बड़ा सम्मान है, पर इसमें [illegible] सरल चाल-ढाल में कोई फ़र्क़ नहीं पड़ा।

विलायत में रामानुजन् ने अपनी [illegible] भावना नहीं छोड़ी। वह अपना खाना आप ब[illegible] और कपड़े बदलकर चौके में घुसता। धीरे [illegible] उसका स्वास्थ्य खराब हुआ और उसे [illegible] वापस आना पड़ा। यहाँ भी सब उपचार [illegible] [illegible] अप्रैल १९२० को वह इस संसार [illegible] के लिए छोड़ गया।

[illegible] गणितज्ञ लिटिलवुड ने कहा है कि [illegible] संख्या रामानुजन् की परम मित्र थी। [illegible] रामानुजन् बीमार पड़ा था तो [illegible] उसे देखने आया। वह १७२९ नं० [illegible] में बैठकर आया था और बोला—'यह [illegible] विशेष रोचक नहीं, और हो सकता [illegible]।'

'[illegible],' तकिये से सिर ऊँचा करता हुआ [illegible] बोला—'यह बड़ी रोचक है। यह वह सबसे छोटी संख्या है जो दो तरह से दो घनों के जोड़ के बराबर है—

$$१७२९ = १२ \times १२ \times १२ + १ \times १ \times १$$
$$= १० \times १० \times १० + ९ \times ९ \times ९ \text{।'}$$

क्या तुम ऐसी कोई संख्या बताओगे जो दो तरह से दो वर्गों के जोड़ के बराबर हो ? कोशिश करना।

'इसमें कोई सन्देह नहीं कि वह आधुनिक काल का सबसे बड़ा भारतीय गणितज्ञ है,' हार्डी ने कहा था, 'और कुछ बातों में तो मुझे उसकी टक्कर के किसी भी गणितज्ञ का पता नहीं।'

घड़ी

लेखिका, श्रीमती राजकुमारी अग्रवाल

[illegible] है अजब निराली
[illegible] दिन भर बैठी ठाली ;
नहीं मेज़ पर से जाती है
चलती ही पर कहलाती है।
[illegible]-टिक टिक-टिक करती रहती,
[illegible] करो कुछ कहती रहती।
समय बीत अब जो जावेगा।
वह न कभी फिर से आवेगा।
[illegible] कभी यह कुछ खाती है,
[illegible] केवल चाभी पाती है।
[illegible] का यह ध्यान दिलाती,
[illegible] समय पर हमें जगाती।
काम सभी के है यह आती।
प्यार इसी से सब का पाती।
[illegible] भी काम सभी के आओ
[illegible] सब के प्यारे बन जाओ।

मेरा गाँव

लेखक, श्रीयुत ज्ञानेन्द्रनाथ सिनहा

मेरा गाँव मुझे अति प्यारा।
यह मेरे नयनों का तारा।
यहीं हुआ है जन्म हमारा।
सब कुछ जग में यही हमारा ॥१॥

कृषकों को प्यारी फुलवारी।
सुन्दर लगती खेती-बारी।
इसने मुझको बड़ा बनाया।
इसने मुझको गोद खिलाया।
इससे मुझको है अति प्यारा।
गाँव हमारा मुझको प्यारा ॥२॥

गणित-चमत्कार

लेखक, श्रीयुत वंशीधर शर्मा 'अच्युत'

बालकृष्ण अपनी कक्षा का सब से चतुर लड़का था। एक दिन उसने अपने सहपाठियों से कहा—"भई! चलो आज बाज़ार चलकर मिठाई खायँ।"

लड़के—मिठाई तो खायँ, पर तब जब कि पैसे न ख़र्च हों।

बालकृष्ण—तो पैसों की आवश्यकता ही क्या है? अपनी चतुराई से मिठाई न खाई तब फिर क्या?

लड़के—तब तो बड़ी अच्छी बात है। लो, चलो। वे सब उसके साथ हो लिये।

बाज़ार में पहुँचकर वे सब एक अनाज की दूकान पर पहुँचे। बालकृष्ण गेहूँ देखने लगा। बनिये ने उसे गेहूँ देखते हुए देखकर पूछा—"क्यों भैयाजी, क्या गेहूँ लेने हैं?"

बालकृष्ण—हाँ।

बनिया—तो कहिए, कितने दूँ।

बालकृष्ण—इस भाँति दे दीजिए, (उसने यह तुकबन्दी पढ़ी)—

एक गेहूँ पहली दफ़ा, दूने दूजी बार।
दूने से दूने करो इसी भाँति हर बार॥
बयालीसवीं बार में आये सो बस देहु।
रुपये हमसे सेठजी! मुँहमाँगे ले लेहु॥

बनिया—(कुछ विचार कर) जितने रुपये हम माँगेंगे उतने ही रुपये दे दोगे?

बालकृष्ण—हाँ, दे देंगे।

बनिया—अगर नहीं दोगे तो? और भला फिर हम तुम्हारा करें भी क्या? तुम तो हो बच्चे!

बालकृष्ण—अच्छा, विश्वास नहीं है तो लो, ये दस रुपये तुम्हें पहले दिये देता हूँ। यदि मैं पलट जाऊँ तो इन्हें दबा लेना। पर यदि तुम गेहूँ देने से ना करोगे तो—देखना, हम सब [illegible] भरकर मिठाई खिलानी पड़ेगी!

बनिये ने 'अच्छा-अच्छा खिला देंगे' [illegible] हुए रुपए ले लिये और १ के अङ्क को बा[illegible] दुगुना करने लगा। अभी दस-बारह [illegible] गुणा किया था कि झुँझलाकर सोचा—कौन [illegible] पच्ची करे, अधिक से अधिक १००-२०० [illegible] हो जायँगे। मैं पहले ही इतने रुपये [illegible] कि इसे बिना कान-पूँछ हिलाये यहाँ [illegible] नापना पड़े। वह बोला—अच्छा, हम एक [illegible] रुपये को तुम्हारे कहे अनुसार गेहूँ दे सकेंगे।

इनके वाद-विवाद को सुनकर जो [illegible] मनुष्य इकट्ठे हो गये थे, बनिये की बात को सु[illegible] बालकृष्ण का मुँह ताकने लगे। बाल[illegible] कहा—तो भाई साहब, अब हमें मिठाई खिलानी [illegible]

बनिया—क्यों? कैसे खिलानी [illegible] मिठाई? मैंने १ लाख रुपये माँगे हैं!

बालकृष्ण—हाँ, आपने एक लाख रु[illegible] हैं, पर हमारे भी प्रश्न का उत्तर सुनिये—

क्रमशः दो, उन्नीस, नौ, शून्य, दो, ब[illegible]
पचपन, पचपन, दो, इते, गेहूँ करो बस[illegible]

अर्थात्—२,१९,०,२,३२,५५,५५,२, २१९९०२३२५५५५२ गेहूँ के दाने दीजिए [illegible] कि तोल २ गेहूँ बराबर १ रत्ती के माना [illegible] भी ३५ लाख मन से अधिक होगा।

सेठ जी ने पहले तो विश्वास नहीं [illegible] पर जब एक के अङ्क को लगातार ४२ बार से दुगुना किया तो अक़ल ठिकाने आई। मुँह उतर गया। बालकृष्ण के १०) रुपये पड़े और उसे सहपाठियों सहित हलवाई की [illegible] पर ले जाकर चार रुपयों की मिठाई भी खिला[illegible]

सन्ध्या

लेखक, श्रीयुत के० डी० बजाज

[illegible] सूर्यास्त होता है तब पृथ्वी पर कुछ-कुछ [illegible] लगता है। इसे ही हम सन्ध्या [illegible] पुकारते हैं। पुराने समय के लोग सन्ध्या [illegible] मानते थे और मानते चले आ रहे हैं। [illegible] ने भी सन्ध्या के बारे में कुछ न कुछ [illegible]। सन्ध्या बहुत महत्त्व का समय है। [illegible] है कि हम लोग सन्ध्या के समय फूल [illegible] नहीं तोड़ते।

[illegible] समय की बात है कि एक किसान ने [illegible] खेत में गेहूँ बोये। वे ख़ूब पक गये, जिसे [illegible] किसान ने बड़ी-बड़ी आशाओं के पुल [illegible] कर दिये। दूसरे दिन से कुछ मज़-[illegible] गेहूँ काटना शुरू कर दिया। खेत जङ्गल [illegible]। इसलिए वहाँ जङ्गली जानवर आया करते [illegible] वे लोग अपना काम कर रहे थे, तब [illegible] सिंह वहाँ पहुँचा और गेहूँ के पीछे छिप गया। [illegible] पुराने विचारों का आदमी था। इसलिए [illegible] था कि सन्ध्या होने के पहले सब गेहूँ [illegible] उसके घर पहुँच जाय। वह धड़ाके से वहाँ [illegible]। काम देखकर उसने नम्रतापूर्वक कहा—"[illegible] काम ज़रा जल्दी करो।"

मज़दूरों ने कहा—"बाक़ी गेहूँ कल काट देंगे।" किसान ने कहा—"मैं सन्ध्या से जितना [illegible], उतना सिंह से भी नहीं डरता।" यह सुन-[illegible] लोगों ने काम जल्दी-जल्दी समाप्त करना शुरू किया। सिंह किसान के शब्दों को सुनकर सोचने लगा कि सन्ध्या क्या चीज़ है।

संयोग से उस दिन धोबी का गदहा भी घर न आया। अब क्या था, धोबी का पारा आसमान में चढ़ गया और डण्डा ले चला उसे खोजने। रात अँधेरी होने के कारण हाथ को हाथ नहीं सूझता था। जब धोबी खेत में पहुँचा तब सिंह को अपना गदहा समझकर मारे डंडों के उसका कचूमर निकाल लिया। फिर उसे घर लाकर बाँध दिया।

क़रीब चार बजे सुबह धोबी कपड़ों के गट्ठों को सिंह पर लादकर घाट की ओर चला। कपड़ा लादे सिंह आगे-आगे चल रहा था और धोबी पीछे कुछ दूर पर था। रात का समय था। जब किसान जंगल में पहुँचा तो एक दूसरा सिंह भी उसी ओर चला जा रहा था। उसने गदहेवाले सिंह से पूछा—"यह क्या कर रहे हो?"

गदहे ने सिंह से कहा—"जाओ, भागो, नहीं तो तुम्हारा भी यही हाल होगा, पीछे-पीछे सन्ध्या आ रही है।"

सन्ध्या का नाम सुनते ही सिंह ने गरजकर कहा—"बेवक़ूफ़, सन्ध्या का अँधेरा सब को डरपोक बनाता है, पर शेरों को नहीं।" इतना सुनना था कि गदहा बने शेर ने ऐसी छलाँग मारी कि गट्ठे तो धोबी पर गिरे और वह जङ्गल में भाग गया।

———

बिटिया रानी

लेखक, श्रीयुत 'भैया'

बिटिया रानी आँखें खोलो,
रोना छोड़ो, मुँह से बोलो।
लेमन जूस, मिठाई ले लो,
आकर भैया के सँग खेलो।
भीग गये हैं गाल तुम्हारे,
रो-रो लोचन थके बिचारे।
अब मत उनको अधिक थकाओ;
आओ खेलो चुप हो जाओ।

दीदी

लेखक, श्रीयुत भुवनारायण जौहरी

दीदी मेरी प्यारी है।
सब दुनिया से न्यारी है।
दीदी ने पहनी है खादी,
दिखती बिल्कुल सीधी-सादी।
दीदी की जब चले बरात।
बाजा बजता सारी रात।

गर्मी

लेखिका, कुमारी दमयन्तीदेवी जालान

गर्मी आई गर्मी आई!
गर्मी आई प्यास बढ़ाने,
आई फिर वह पैर जलाने;
गर्मी आई धूल उड़ाने;
साथ-साथ में फूल गिराने;
ठंढे जल को गरम बनाने,
जग में हाहाकार मचाने,
गर्मी आई गर्मी आई!

बाबा की मूँछें

लेखिका, कुमारी मुन्नीदेवी चतुर्वेदी

बूढ़े बाबा बैठे रहते;
काम नहीं वे कुछ भी करते।
उनके मुख में दाँत नहीं है;
सिर में उनके बाल नहीं है।
बाबा जब पीते हैं दूध,
मूँछों से भी लेते पोंछ।
मूँछों में जब लगे मलाई
तब मैं कहती 'पानी लाई।'

सपनों की दुनिया

लेखिका, श्री प्रमीला श्रीवास्तव

परियाँ आकर मुझे जगातीं,
सारी रात न सोने देतीं;
सपनों के सागर में हैं वे
मुझे बिठाकर नौका खेतीं।

उस सागर के नीले जल में
रंग-बिरंगे खिले कमल हैं;
आओ, तुम मेरे सँग आओ
हम-तुम तोड़ें, खिले कमल हैं।

सेठ भूरामल और गड़बड़सिंह

लेखिका, श्री गिनियाबाई नैमानी, पड़रौना

[illegible] में भूरामल नाम के एक सेठजी रहते [illegible] बहुत ही मालदार आदमी थे। लेकिन साथ [illegible] कंजूस भी बहुत थे, जिस नगर में सेठजी [illegible] उसी नगर में एक क्षत्रिय रहते थे। उनका [illegible] था। सेठजी ने गड़बड़सिंह को कुछ [illegible] दे रक्खे थे। इसलिए वे गड़बड़सिंह [illegible] धमकाया-डरवाया करते थे। एक दिन [illegible] अपना रुपया वसूल करने के लिए ठाकुर [illegible] दरवाज़े पर धरना देकर बैठ गये और [illegible] साहब से कहने लगे कि जब तक तुम [illegible] रुपया नहीं दोगे तब तक मैं तुम्हारे [illegible] नहीं उठूँगा। यह सुनकर ठाकुर साहब [illegible] आ गया और उन्होंने सेठजी को अपने [illegible] गरदनिया देकर निकलवा दिया।

[illegible] ने बड़बड़ाते हुए घर का रास्ता लिया। [illegible] आदमियों ने गड़बड़सिंह से सेठजी [illegible] की और साथ ही साथ यह भी कहा [illegible], आपको वह भूरामल बहुत-सी गालियाँ [illegible]। रास्ते में यह चिल्ला-चिल्लाकर कह रहा [illegible] गड़बड़ के बाप से सारा रुपया वसूल [illegible]। अगर नहीं वसूल किया तो मेरा नाम [illegible] नहीं।

[illegible] बात को सुनते ही गड़बड़सिंह जल-भुन-[illegible] हो गये। दो-चार आदमियों को साथ [illegible] भूरामल को पकड़ने के लिए दौड़ पड़े।

[illegible] गड़बड़सिंह को आते देख सेठजी सन्न [illegible] और ठाकुर साहब से कहने लगे—"भाई [illegible] अब हम तुम्हारे यहाँ रुपये के लिए कभी [illegible]। जी चाहे देना, जी चाहे न देना। [illegible] मर्ज़ी।"

यह सुनते ही ठाकुर साहब ने सेठजी का हाथ पकड़कर कहा कि सेठजी चलिए, मैं आपके सारे रुपयों का भुगतान अभी किये देता हूँ। मैंने आपके रुपयों का प्रबन्ध कर लिया है। यह सुनकर सेठजी के हृदय में आनन्द की सीमा न रही और खुशी के साथ ठाकुर साहब के साथ चल पड़े।

घर ले जाकर गड़बड़सिंह ने उन्हें बरामदे में बिठा दिया और आप घर के भीतर चले गये। जब बड़ी देर तक गड़बड़सिंह बाहर न निकले तो सेठजी ने उन्हें पुकारा।

सेठजी के पुकारने की आवाज़ सुनकर ठाकुर गड़बड़सिंह तुरन्त ही बाहर निकल आये। उनके हाथ में एक बड़ा छुरा था। वे बोले—सेठजी, घबड़ाइए नहीं, आपकी पाई-पाई अदा करके रहूँगा। बात यह है कि काटने के लिए जो मैंने यह छुरा निकाला तो देखा इसमें ज़ंग लग गई है। इसी लिए इसे तेज़ करने लगा।

सेठजी छुरा देखते ही भाग खड़े हुए। ठाकुर गड़बड़सिंह उन्हें रोकने के लिए उनके पीछे दौड़े। बेचारे सेठजी बड़ी मुश्किल से अपने घर पहुँचे। भीतर पहुँचते ही उन्होंने दरवाज़ा बन्द कर लिया। ठाकुर गड़बड़सिंह अपने घर लौट आये। सारी घटना अपने मित्रों को सुनाकर वे हँसने लगे। बात यह थी कि जब वे सेठ के पास गये तो उसकी चापलूसी पर प्रसन्न होकर उन्होंने उसका रुपया देने का निश्चय किया। रुपया वे लकड़ी के बक्स में रक्खे थे जिसकी चाभी खो गई थी। इसलिए लकड़ी का तख्ता काटने के लिए वे छुरे को तेज़ कर रहे थे।

परन्तु सेठजी ने फिर गड़बड़सिंह की ओर रुपया वसूल करने के लिए जाने का कभी मुँह नहीं किया।

कठफोड़वा चिड़िया की चतुरत्ता

अगर किसी कठफोड़वा चिड़िया का पीछा बाज़ करने लग जाता है तो जो पहले सूराख मिलता है उसी में वह घुस जाती है। यदि कोई छेद न मिले तो वह किसी पेड़ के तने को अपने तेज़ चंगुलों से पकड़कर उससे चिपट जाती है और उसी तने के चारों ओर उससे चिपटी हुई चक्कर लगाने लगती है। इस तरह उड़ता हुआ बाज़ ऊपर से इसको देख नहीं पाता। इस चालाकी से वह बहुधा अपनी जान बचा लेती है।

छिपकली का फुर्तीलापन

छछूँदर जिस तेज़ी से अपना बिल खोदती है उसका अनुमान तुम शायद ही लगा सको। यदि तुमने किसी छछूँदर को बिल खोदते नहीं देखा तो तुमको यह सुनकर आश्चर्य होगा कि वह सिर्फ़ दस ही सेकेंड में अपना बिल खोदकर तुम्हारी नज़रों से ओझल हो सकती है। यह देखा गया है कि ३ मिनट में १ फ़ीट के हिसाब से वह बिल या सुरंग खोद लेती है। एक बार एक छछूँदर ने २५ मिनट में ६८ फ़ीट लम्बी सुरंग खोद डाली थी और दूसरी ने सिर्फ़ एक ही रात में १०० गज़ लम्बी सुरंग खोद डाली थी।

जिराफ़ के जीभ का न होना

यह तो सभी जानते हैं कि प्रायः सभी चौपायों के जीभ होती है, पर जिराफ़ के—जो डील-डौल में काफ़ी लम्बा और ऊँचा होता है नहीं होती।

मकड़ी खानेवाली मक्खी

उत्तरी कैरोलिया के पश्चिम में जो ... उस पर एक विशेष जाति की मक्खी पाई ... प्रायः यह देखा जाता है कि मकड़ा अपने ... में मक्खी को फँसाकर उसे खा जाता है। ... होने पर यह मक्खी कीड़े के शक्ल की ... इस अवस्था में यह पहाड़ों की दरार में ... फूलवाले पौदों की छाया में अपना जाल ... है जिसमें मकड़े इत्यादि फँस जाते हैं। ... होने पर जब यह अपना स्वरूप धारण ... तो शिकार करना छोड़ देती है और ... घास-पत्त पर अपना जीवन-निर्वाह करती है।

—वल्लभदास बिन्नानी

पृथ्वी की उम्र

आजकल के वैज्ञानिकों का कहना ... हमारी पृथ्वी की उम्र डेढ़ और तीन अरब ... के बीच है। परन्तु पृथ्वी पर आदमी ... पैदा हुए अभी दो लाख साल ही हुए हैं।

तूफ़ानी समुद्र

तूफ़ान आने पर समुद्र की लहरें ... २० गज़ अर्थात पँचमंज़िले मकान की ... ऊँचाई के बराबर ऊँची उठ जाती हैं। ... से अधिक ७५ फ़ीट तक ऊँची लहरें देखी ...
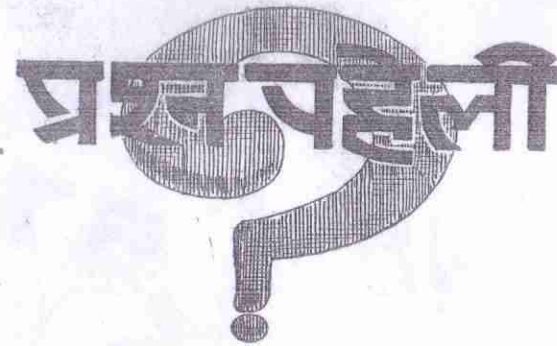
तीन अक्षर का मेरा नाम,
अन्त समय पर आता काम।
आदि कटे तो साथ में पावे,
अन्त कटे बीमारी लावे॥

(कफ़न)

—अशोक शर्मा

× × ×

आदि कटे तो बनूँ झुण्ड में,
मध्य कटे मैं बाल!
उड़ता, फिरता अरे!
गगन में हूँ सागर का लाल॥

(बादल)

—त्रिलोकचन्द

× × ×

चार अक्षरों के मिलने से,
एक बड़ा शहर मैं बन जाता।
पहला और तीजा लुप्त किये,
मर्द एक मैं कहलाता।
पहला और चौथा मिलने से,
कार एक मैं हो जाता॥

(कानपुर)

—बनवारीलाल

× × ×

मध्य कटे से मृत्यु हो,
आदि कटे से मजबूत।
अन्त काट उल्टा पढ़ो,
हो जाता कंजूस॥

(मसूर)

× × ×

मध्य कटे तो लेना भाइ,
अन्त कटे लिख लो तुम।
कुछ भी नहीं कहेंगे हम॥

(लेखनी)

× × ×

एक अश्व की छः टाँगें।
पीठ में पूँछ दो टापें॥

(मच्छर)

—रामकृष्ण वार्ष्णेय

× × ×

तीन अक्षर का मेरा नाम, रहने में आता हूँ काम।
आदि कटे तो कान बनूँ, सबके सुनने में आऊँ॥
मध्य कटे से मन हो जाऊँ, दौड़-दौड़ मिनटों में आऊँ॥

(मकान)

—श्रीनिवास लोहिया

× × ×

श्रीनगर से चलता चोर, कानपुर आते ही मचता शोर।
हाथरस में पेशी होती, नूनगढ़ में फाँसी होती॥

(जूँ)

—दुर्गादत्त मोदी

× × ×

एक मनुष्य कुछ कमल के फूल लेकर देवताओं के मन्दिरों में चढ़ाने के लिए गया। जब वह शिवजी के मन्दिर में गया तो जितने फूल लेकर वह चला था ईश्वर की कृपा से दुगुने हो गये। उनमें से उसने १६ फूल शिवजी को चढ़ा दिये और शेष फूलों को लेकर रामचन्द्रजी के मन्दिर में गया तो वहाँ भी ईश्वर की कृपा से बचे फूल दुगुने हो गये। उसमें से उसने १६ फूल रामजी को चढ़ा दिये और बचे फूलों को लेकर गोपालजी के मन्दिर में गया, तो वहाँ भी बचे-खुचे फूल ईश्वर की कृपा से दूने हो गये। उनमें से उसने १६ फूल चढ़ा दिये। इस प्रकार अब उसके पास कुछ न बचा। तो बतलाओ वह कितने फूल लेकर चला था।

(१४ फूल)

—वल्लभदास बिन्नानी

×

"ए राम, ज़रा सराय का रास्ता तो बताना।"

"आपने कैसे जाना कि मेरा नाम राम है?"

"महज़ एक अन्दाज़ था।"

"इसी प्रकार मेहरबानी करके सराय का भी अन्दाज़ लगा लीजए।"

—ओम्प्रकाश खेतान

× × × ×

मास्टर—क्यों जी, सन्तरी का पुल्लिंग क्या होता है?

लड़का—(कुछ सोचकर) सन्तरी का पुल्लिंग सन्तरा।

× × × ×

पहला—(दूसरे से) ऐ कपटी, कहाँ जा रहा है?

दूसरा—(कुछ चौंककर) अरे, कप (प्याला) टी (चाय) के भी आजकल पैर हो गये हैं क्या?

—कुमारी सुशीला खण्डेलवाल

× × × ×

मियाँ पठान ने एक पैसे की जामन मोल ली जो कि काले रंग की थी। इत्तिफ़ाक़ से एक भौंरा उन पर आ बैठा—पठान ने उसे पकड़ लिया। वह भौं-भौं [illegible] इसको सुन पठान बोला—चाहे भौं-भौं कर चाहे [illegible] काला-काला कभी न छोड़ूँगा, पैसा दिया है।

× × ×

क़ैदी—'मुझे इस अपराध के बदले क्या द[illegible]

जज—फाँसी।

क़ैदी—अरे फाँसी!

जज—हाँ, कल।

क़ैदी—इससे तो मर जाना अच्छा है।

× × ×

मास्टर—रमेश, सन् १५४२ में क्या हुआ?

रमेश—अकबर का जन्म।

मास्टर—ठीक। और सन् १५५६ में?

रमेश—अकबर १४ साल का हो गया।

—[illegible]

× × ×

एक अँगरेज़ एक गाँव में गया। वहाँ [illegible] भूख लगी। पास ही एक गँवार रहता [illegible] [illegible] एक रोटी पर साग परोसकर दिया। साहब [illegible] खा लिया और रोटी वापस देकर बोला— [illegible] प्लेट अपना ले लो।"

× × ×

[illegible] साहब नौकर से—बाग़ में पानी दिया?

नौकर ने कहा "साहब! मेंह बरस रहा था।"

साहब—ऐं! छाता लगाकर पानी दो।

—दिनेशचन्द्र गुप्त

× × ×

[illegible] (अपने पिता से) 'मुझे तीन पैसे दे दीजिए।'

[illegible] "[illegible] पैसे न माँगा करो। अब तुम बड़े हो [illegible]"

[illegible]—अच्छा, तो फिर एक रुपये ही दे दीजिए।

× × ×

[illegible]—तुम बड़े गधे हो।

[illegible] क्या कहा मास्टर साहब? अभी तो आप अपने [illegible] बना रहे थें, अब मुझे बनाने लगे।

× × ×

[illegible] बाबू ने पार्सल तौलकर कहा—"वज़न अधिक [illegible] आने का टिकट और लगाओ।

[illegible] क्या एक रुपये में नहीं जा सकता? क्यों?

[illegible] बाबू—कह तो दिया वज़न भारी है।

[illegible] (चौंककर)—तब तो टिकट लगाने से पार्सल [illegible] हो जायगा।

× × ×

[illegible] कारण है कभी तुम बड़ी वीरता दिखाते हो, [illegible]"

"कारण स्पष्ट है, मेरा बाप मर्द था, मेरी माँ औरत।"

× × × ×

"आज मैंने एक आदमी को देखा जिसकी सूरत तुमसे मिलती-जुलती थी।"

"अरे तो कहीं तुमने उसको वह रुपया तो नहीं दे दिया जो एक वर्ष हुए तुमने मुझसे उधार लिया था।"

× × × ×

बदमाश—(घड़ीसाज़ से) इस घड़ी की मरम्मत कराई क्या लगेगी?

घड़ीसाज़—(घड़ी देखकर) चूँकि इसके बहुत-से कल-पुर्ज़े ख़राब हो गये हैं। इस वास्ते इसकी मरम्मत कराई में घड़ी का आधा दाम बैठ जायगा।

बदमाश—कोई हर्ज नहीं, आप बनाइए। मैंने दो घूँसे में यह घड़ी ख़रीदी थी।

× × × ×

"यह गाय किसकी है?"

"लालाजी की।"

"कौन लालाजी?"

"जिनकी यह गाय है।"

× × × ×

"आलू कैसे लाये?"

"कपड़े में बाँधकर।"

"मैं पूछता हूँ कैसे लिया? कपड़े में बँधा मैं ख़ुद देखता हूँ।"

"हाँ, हाँ, तौलकर लिया।"

—वल्लभदास बिन्नानी, मिर्ज़ापुर

नहीं छपेंगी

नीचे लिखी रचनायें स्थानाभाव के कारण 'बाल-सखा' में नहीं प्रकाशित हो सकेंगी। प्रेषकगण क्षमा [illegible]

कहानियाँ—सर्वश्री जगदीशनारायण मेहरोत्रा, विद्यानन्द शास्त्री, गोविन्द मनोहर सेठ, गुरु[illegible] 'दयाल,' ललनकुमार जायसवाल, भूपेन्द्रनाथ ब्रह्म, मोहनलाल गुप्त, टी० सीताराम, ब्रजभूषण सिंह तौमर, [illegible] लाल जैन, कुमारी ललिता और शकुन्तला मिश्र की।

कवितायें—सर्वश्री जमनादास दम्माणी, शक्तिधर, मुन्नीदेवी चतुर्वेदी, गणेशप्रसाद, सुरेशकुमा[illegible] महेन्द्र, रसरंग, रतनचन्द सावनसुखा, शकुन्तला मिश्र, श्रवणकुमार सक्सेना, गोविन्दनारायण शर्मा खा[illegible] कुमार काँकरिया और रमाकान्त श्रीवास्तव की।

स्फुट—सर्वश्री गणेशप्रसाद, बाफणा भँवरलाल जैन, वासुदेव गुप्त, त्रिलोकचन्द, भभूतमलजी [illegible] बालकृष्ण पांडे की।

पेनग्विन

दक्षिणी ध्रुव के आस-पास पेनग्विन नाम की एक चिड़िया पाई जाती है। यह बड़ी ही विचित्र होती है। वहाँ के लोग इसे पालते भी हैं। यह ज़मीन पर रहती है पर है, यह पानी का पक्षी। इसका क़द दो फ़ीट से लेकर चार फ़ीट तक होता है। तौल में यह बीस सेर तक होता है। इसकी दो जातियाँ होती हैं–इम्परर और अडेली। इम्परर बहुत शानदार होता है। पेनग्विन पक्षी होने पर भी मनुष्यों की भाँति एक दल में रहते हैं और एक दूसरे को देखने के लिए सैकड़ों मील की यात्रा करते हैं। ये कुत्तों को बहुत पसन्द करते हैं। अडेली जात का पेनग्विन लड़ाका होता है। ज़बानी लड़ाई में इससे पार पाना कठिन है। यह बहुत फ़ुर्तीला होता है और बड़ी तेज़ी से अपनी दुम हिलाता हुआ घूमता रहता है।

ये लोग आदमी को भी शायद अपनी ही जाति का समझते हैं, इसलिए जब तक इनके बहुत पास न पहुँच जाय, इनके परों को न छू दें, तब तक ये नहीं डरते। बर्फ़ पर पेनग्विन बहुत तेज़ चलता है, पर जहाँ ज़रा-सा भी गड्ढा मिलता है उसके हाथ-पैर फूल जाते हैं और वह फिर बिना उड़े उसको लाँघ कर पार नहीं कर सकता। जब कोई सङ्कट का समय आता है तब ये लोग इकट्ठे होकर अपने बच्चों को बीच में कर लेते हैं। ये अपने बच्चों को बड़े यत्न से पालते हैं। इनको गाना सुनना बहुत पसन्द है। ग्रामोफोन या गाने की आवाज़ सुनकर ये झुण्ड के झुण्ड जाते हैं।

—निरङ्कारनाथ

पक्षियों के घोंसले

जिस प्रकार मनुष्यों को घरों की कता होती है उसी प्रकार पक्षियों को आवश्यकता पड़ती है।

कठफोड़वा अपना घोंसला पेड़ बनाता है। टिटहरी दलदल में घास घोंसला बनाती है। राम चिड़िया नदी कीचड़ या रेत से मछलियों की हड्डियों से बनाती है। काला पक्षी नामक गानेवा अपना घोंसला वृक्षों में घास से कटोरी का बनाता है। कठकबूतर लकड़ी के घोंसला बनाता है। कौआ झाड़ में उँगलियों से तथा लकड़ी के छोटे-छोटे अपना घोंसला बनाता है। अबाबील ना अपने घोंसले तालाब के पास के जल से कीचड़ लाकर बनाता है। भीतर में नरम के लिए छोटे-छोटे पर लगा देते हैं। घोंसले गुम्मज़ के आकार का बनाती है। में नरम बनाने के लिए कपास लगा गौरैया नामक पक्षी अपने घोंसले घरों की छेद में बनाती है।

कहा जाता है कि इन सब पक्षियों से बया नामक पक्षी का घोंसला सुन्द कारीगरी से बना होता है।

—विपिनबिहारी वाजपेयी

चीटी

लेखिका, कुमारी विनोदकुमारी

रानी, चीटी रानी,
तुम हो बड़ी सयानी रानी।
में हो मेहनत करती,
आलस से हो कभी न डरती॥
भी तुमसे डरता है,
सूँघ-सूँघ रस्ता चलता है।
में जो घुस जाओ,
तो उसकी आफ़त बन आओ॥
दाना जुटा रही हो,
सुन्दर बातें बता रही हो।
काम करो जी भर कर,
फिर आराम करो जी भर कर॥

——

घोड़ा

लेखक, श्रीयुत गौतमनारायण अग्रवाल

काला-काला घोड़ा मेरा,
प्यारा मुझको लगता है।
पर जब चढ़ जाता हूँ,
दूर-दूर हो आता हूँ॥
राह में जब अड़ता है,
फ़ौरन कोड़ा पड़ता है।
लगाम नहीं है काठी,
यह तो है बस लकड़ी की लाठी॥

मेरा भैया

लेखिका, कुमारी दमयन्ती देवी, जालान

मेरा भैया, मेरा भैया
मेरा भैया बड़ा दुलारा।
बहनों की आँखों का तारा॥
मिल जुलकर है खेल रचाता।
स्वयं रूठ कर मुझे रुलाता॥
झूठी बगिया सदा बनाता।
है फूलों से उसे सजाता॥
फिर माली बन फूल चुनाता।
चुन-चुन कर डाली सजवाता॥
मेरा भैया, मेरा भैया!

——

स्वप्न

लेखक, श्रीयुत विष्णुकान्त वर्मा

स्वप्न एक कल देखा मैंने,
जिसमें हुआ सबेरा।
बना हुआ था नदी किनारे,
छोटा-सा घर मेरा॥
चिड़िया स्वयं जगाने आई,
माला लाया माली।
उठो प्रभात हुआ देखो अब,
ऊषा छाई लाली॥

पिछले महीने काशी के सुप्रसिद्ध रईस, हिन्दी के अनन्य प्रेमी और देशभक्त बाबू शिवप्रसाद गुप्त का स्वर्गवास हो गया। देश के वे बहुत बड़े नेता थे और बालकों को बहुत अधिक प्यार करते थे। उन्हें शिक्षा से बहुत अधिक प्रेम था। इसी लिए उन्होंने बहुत अधिक रुपया खर्च करके विद्यापीठ क़ायम किया जिसमें बहुत से विद्यार्थी शिक्षा पाते हैं। उनका बनवाया 'भारत माता का मन्दिर' बहुत प्रसिद्ध है। हम भगवान् से प्रार्थना करते हैं कि वह उनकी मृत आत्मा को शान्ति दे।

× × × ×

हमारे पास इधर बहुत दिनों से प्यारे बाल-सखाओं के बहुत-से पत्र आये हैं जिनमें उन्होंने 'बाल-सखा' में एक बड़ी कहानी क्रमशः प्रकाशित करने का अनुरोध किया है। हम अपने प्यारे बाल-सखाओं की इच्छा पूरी करने के लिए अगले अङ्क से एक धारावाहिक कहानी प्रकाशित करने जा रहे हैं। यह कहानी बड़ी ही मजेदार होगी। इसलिए आपके जो मित्र 'बाल-सखा' के ग्राहक न हों उनको भी इस अङ्क से 'बाल-सखा' के ग्राहक हो जाने के लिए कह दीजिए।

× × × ×

इस अङ्क में श्रीयुत वल्लभदास बिन्नानी ने अद्भुत जीव-जन्तुओं की कहानी लिखी है। भविष्य में भी वे इसी प्रकार की मजेदार कहानियाँ आपको सुनायेंगे।

× × × ×

'बाल-सखा' के अप्रेल के अङ्क में श्री देवेन्द्र शर्मा का गाउस के बचपन के सम्बन्ध में एक लेख प्रकाशित हुआ है। उसमें लेखक महोदय को संख्याओं को जोड़ने का सरल उपाय भूल गया था। लेकिन उनके छोटे भाई श्री ध्रुव-नारायण जौहरी ने किसी तरह उस तरीक़े का पता लगा लिया है। उसे उन्होंने सब बाल-सखाओं को [illegible] के लिए हमारे पास छपाने के लिए भेजा है। [illegible] इस प्रकार है—

"जैसे—८१२९३+८१४९१+८१६८९+ [illegible] ८२०८५+ .... +

सरल तरीक़ा यह है कि आप पहले यह गि[illegible] कि संख्यायें कितनी बार लिखी गई हैं। [illegible] लिखी गई हों, उससे पहली, सबसे ऊपर की [illegible] गुणा कर दीजिए। अब, पहली और आखिरी [illegible] का अन्तर निकालिए। उस अन्तर को, जितनी बा[र] लिखी गई हैं, उसके आधे से गुणा कर, पहले [illegible] संख्या में जोड़ दीजिए। यही उन संख्याओं का [illegible]

जैसे :—

८१२९३	प्रत्येक संख्या अपने [illegible] संख्या से १९८ ज्यादा है
८१४९१	
८१६८९	
८१८८७	
८२०८५	
८२२८३	
८२४८१	
८२६७९	
६५५८८८	

इसमें ८ बार संख्यायें लिखी गई हैं। ८१२९३ में ८ का गुणा कीजिए। फिर प[हली और] आखिरी संख्याओं के अन्तर में जितनी बार सं[ख्या] हो उसका गुणा, अर्थात् ८२६७९–८१२९३ में [illegible] गुणा करें। फिर इसे पहले आई हुई संख्या [में] ८१२९३×८ में जोड़ दें। उत्तर आ जायगा। [illegible]

८१२९३×८=६५०३४४ इसमें १३८६×[४] १३८६×४=५५४४ इसलिए जोड़=६५०३४४[+५५४४=] ६५५८८८"

[illegible] कहाँ है ?'—पिता

'[illegible] सवेरे से ही ग़ायब है'।—माता।

[illegible]—(पुस्तकों का ढेर ले आते हुए) देखो माँ! कैसी अच्छी पुस्तकें हैं। श्यामू ने मँगाई हैं। मुझे भी मँगा दो।

[illegible]—आज तक प्रकाशित बच्चों की सभी पुस्तकों [illegible] के साथ सुन्दर चित्र भी दिया गया है। [illegible] ग्यारह आने।

[illegible] भगवान् पर अटल विश्वास रखकर प्रह्लाद ने हँसते-[illegible] अत्याचार सहन कर उन पर विजय प्राप्त की। [illegible] पाँच आने।

[illegible] कहानियाँ—अँगरेज़ी की प्रसिद्ध पुस्तक [illegible] इसे अत्यन्त चाव से पढ़ते हैं। इसकी भाषा [illegible] है। मूल्य २॥≡) दो रुपए ग्यारह आने।

[illegible]—बड़ी ही सरल भाषा में शिक्षाप्रद और [illegible] मूल्य १) एक रुपया

[illegible] कहानियाँ—हँसाने के साथ-साथ शिक्षाप्रद कहानियों [illegible] पुस्तक की अत्यन्त आवश्यकता थी। मूल्य १) [illegible]

[illegible] कहानियाँ—विज्ञान की विचित्र शक्तियों का [illegible] आविष्कार हुआ इस पुस्तक में उन सब बातों का मनो-[illegible] है। मूल्य ॥|-) तेरह आने।

[illegible] का हाल—जापान आज हमारा शत्रु है। किन्तु [illegible] उन्नति किस प्रकार की—यह जानने योग्य है। [illegible] में आपको सब कुछ इसमें मिल जायगा। [illegible] आने।

[र]वीन्द्रनाथ—रवीन्द्रनाथ का जीवन वैसे तो सभी को [illegible] किन्तु यह पुस्तक विशेष कर बालकों के लिए लिखी [illegible] ॥≡) ग्यारह आने।

[illegible] की कहानियाँ—कहानियाँ बहुत ही मज़ेदार हैं। [illegible] इतना ही कहना बहुत है कि इसे शेखचिल्ली ने लिखा [illegible] तेरह आने।

[illegible]—इस पुस्तक में छोटे बच्चों लायक बड़ी ही [illegible] कहानियों का संग्रह किया गया है। इसका आकर्षक [illegible] मालूम होता है। मूल्य ॥) आठ आने।

[illegible] लाल—इस पुस्तक की कहानियाँ इतनी सरल और [illegible] लिखी गई हैं कि बालक उन्हें शुरू से आख़ीर तक [illegible] ही नहीं। मूल्य ॥) आठ आने।

[illegible] की कथा—तरह-तरह के औज़ार, मशीनें, धर्म, [illegible] आदि कैसे बने? यह पुस्तक बच्चों को अवश्य [illegible] मूल्य १) एक रुपया।

[का]लिदास—कालिदास की ये कहावतें बालकों को [illegible] दी जायँ तो वे चतुर होंगे और वे समय-समय पर [illegible] देती रहेंगी। मूल्य ॥) आठ आने

[illegible]—इस पुस्तक को लेकर बालक ख़ुशी के मारे कूदने [लगते हैं औ]र उन्हें पढ़ने का इतना शौक़ हो जाता है कि घर के [illegible] मना किये जाने पर भी वे पुस्तक हाथ से नहीं [illegible] ॥-) नौ आने।

[illegible]—यह पुस्तक छोटी अवस्था के बालक-बालिकाओं के [illegible] पर लिखी गई है। इसमें प्रतिदिन के व्यवहार [illegible] गई हैं। पुस्तक बड़े आकार में तथा रंग-बिरंगे [चित्रों से सुशो]भित है। मूल्य ॥) आठ आने

प्रसिद्ध यात्राओं की कथा—इस पुस्तक में सुप्रसिद्ध बौद्ध यात्री फ़ाहियान से लेकर वर्तमान युग में एवरेस्ट की चोटी पर चढ़ाई करनेवालों तक कितने ही साहसी और वीर यात्रियों की कथा लिखी गई है। पुस्तक की भाषा बहुत सरल और मधुर है। मूल्य ॥|-) तेरह आने।

सिकन्दर—वीरवर सिकन्दर की जीवन-घटनाओं तथा उसके स्वभाव और चरित्र का वर्णन है। सभी बातों का वर्णन बहुत ही रोचक भाषा में किया गया है। मूल्य ॥) आठ आने।

ध्रुवयात्रा—इस पुस्तक को दक्षिणी तथा उत्तरी ध्रुव का एक प्रकार का विस्तृत भूगोल समझिए। पुस्तक प्रश्नोत्तर-रूप में लिखी गई है। इसके पढ़ने से बालकों की ज्ञान-वृद्धि तो होगी ही साथ ही उनका मनोरंजन भी होगा। मूल्य ॥|-) तेरह आने।

पृथ्वी की परिक्रमा—इस पुस्तक में पृथ्वी के भिन्न-भिन्न देशों के मुख्य-मुख्य स्थानों का वर्णन बड़ी ही मनोरंजक भाषा में लिखा गया है। मूल्य ॥) आठ आने।

मनोरंजक कहानियाँ—इसमें बहुत सी मनोरंजक और शिक्षाप्रद कहानियाँ संगृहीत की गई हैं। दो भागों में मूल्य (प्रत्येक भाग का) ।-) पाँच आने।

खेल या तमाशा—यह बच्चों के लिए बड़े मज़े की पुस्तक है। यह सुन्दर चित्रों के साथ गद्य और पद्य दोनों में लिखी गई है। मूल्य ।-) पाँच आने।

बाल-पंचतन्त्र—इसके पाँचों तन्त्रों में बड़ी मनोरंजक कहानियों के द्वारा सरल रीति से नीति की शिक्षा दी गई है। बच्चे इसकी मनोरंजक कहानियाँ बड़े चाव से पढ़ते हैं। मूल्य ॥|-) तेरह आने।

बाल हितोपदेश—यदि बच्चों की बुद्धि बढ़ाना चाहते हो तो उन्हें यह पुस्तक दीजिए। रोचक कहानियों के द्वारा दुःख-जाल से छुटने का उपदेश दिया गया है। मूल्य १) एक रुपया।

मेरे देश की कथा—भारतीय इतिहास के कई मुख्य और गौरवमय अध्याय, जिनका जानना बहुत ज़रूरी है, स्कूलों में नहीं पढ़ाये जाते। हमारे युवक विदेशी चरित्रों को ही अपना आदर्श मान बैठते हैं। इस छोटी सी पुस्तक में उस कमी को दूर करने का प्रयत्न किया गया है। मूल्य ॥|-) तेरह आने।

नवीन पुस्तकें

बाँसुरी—पंडित सोहनलाल द्विवेदी। द्विवेदी जी बालकों की मनोवृत्तियों को भली भाँति पहचानते हैं। इसमें उन्हीं की कविताओं का संग्रह है। कविताओं की विशेषता यह है कि ये बालकों का मनोरंजन करने के साथ-साथ उनकी अच्छी मनोवृत्तियों को उकसाती है। बहुत ही सुन्दर काग़ज़ पर छपी हुई पुस्तक का मूल्य १।) एक रुपया चार आने।

शिशु-भारती—यह भी पं० सोहनलाल द्विवेदी जी की रचना है। बालकों की राष्ट्रीय भावनाओं को जगानेवाला यह कविता-संग्रह आप अपने बच्चों को अवश्य दीजिए। पुस्तक इतनी सुन्दर है कि हाथ में लेते ही बच्चे फड़क उठेंगे। मूल्य १।) एक रुपया चार आने।

जङ्गल की परी

लेखक, श्रीयुत ईश्वरानन्द सारस्वत

एक राजा था। उसके राज्य में सुख-शान्ति का बोलबाला था। राजा प्रजा को प्राण से भी प्यार करता था। पर उसके कोई सन्तान न थी। इसलिए राजा दुःखी रहता था। उसके चेहरे पर प्रसन्नता कभी न आई। एक दिन राजा अपने बाग़ में बैठा कुछ सोच रहा था कि इतने में एकाएक एक साधु आया, और बोला—"हे राजन्! आप इतने दुखित क्यों हैं?" राजा ने कोई उत्तर न देकर टाल दिया। साधु ने फिर पूछा, तब राजा ने मुस्कराते हुए कहा—"तुम मेरी विपत्ति को पूछकर क्या करोगे? मेरे दुःख को ब्रह्मा भी न टाल सके। तुम दूर क्या करोगे। मैंने उसके लिए कितने ही यज्ञ किये, ब्राह्मणों को दान देते-देते मेरे हाथ थक गये, मेरा ख़ज़ाना ख़ाली हो गया, पर मेरी इच्छा अभी तक पूरी नहीं हुई।"

साधु बड़ा चकित हुआ और बोला—"हे राजन्! ऐसा कौन-सा मनोरथ आपका है जो इतने दान-पुण्य के करने पर भी आपको सुलभ नहीं।"

आप मुझे बतलावें। मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि आपका मनोरथ ज़रूर पूरा करूँगा और यदि न करूँ तो आप मुझे प्राण-दण्ड दे सकते हैं।

राजा ने चलते-चलते कहा—"छोटा मनुष्य अपनी शक्ति से बड़ी बात यदि बनावे तो वह मूर्ख है। इसलिए क्यों तुम इस झंझट में पड़ते हो। जिस कार्य को बड़े-बड़े पण्डित एवं ज्योतिषी नहीं कर सके, उसको तुम कैसे करोगे। यह कह कर चला गया।

साधु अपने घर लौट गया, और आराम करने लगा।

उधर रात को राजा जब सोया तो सपने में उसको वही साधु दीखा। साधु ने कहा—"मैं ऋषि हूँ, पुण्य कभी व्यर्थ नहीं जाता। तुम्हारे किये यज्ञ से प्रसन्न हो मैं आया हूँ। जो तुम्हें आवश्यकता हो वह मुझसे कहो।" राजा ने सन्तान के न होने की बात कही। ऋ[illegible] घबड़ा-सा गया और बोला—"इसका उत्त[illegible] तुम्हें दूँगा। ऐसा कह वह साधु कुटी में [illegible] और ध्यान लगाकर राजा की सन्तान [illegible] योग से देखने लगा—कि आज से ८-१० सा[illegible] राजा शिकार खेलने गया था। जङ्गल में उस[illegible] घोड़ा एक सूअर के पीछे छोड़ा। घोड़ा [illegible] दौड़ रहा था। रास्ते में एक हरिणी अपने [illegible] के साथ हरी-हरी दूब खा रही थी।

घोड़े के पैरों में आकर उसका बच्चा म[illegible] राजा ने कोई ध्यान न दिया और सूअर [illegible] महल में आ गया। उसी हरिणी के शाप [illegible] को सन्तान नहीं होती थी। वह हरिणी एक [illegible]

दूसरे दिन वह साधु राजा के पास [illegible] सब हाल कह सुनाया। राजा ने सुनकर कहा [illegible] कोई ऐसा भी उपाय है जिससे मेरे सन्तान [illegible]

साधु—है, मगर मुश्किल।

राजा—चाहे कितना ही मुश्किल [illegible] अवश्य करूँगा, तुम उसे बतलाओ।

साधु बोला—"सुनो! हरिण को [illegible] गाने से बड़ा प्रेम होता है। इसलिए तुम [illegible] वन में जहाँ शिकार खेलने गये थे जा[illegible] १५ दिन तक लगातार गाने-बाजे सहित [illegible] हरिणों के खान-पान का भी सुन्दर प्रबन्ध [illegible] जिस दिन वह हरिणी गाने में मस्त हो [illegible] उसी दिन तुम्हें आकाश-वाणी द्वारा सन्ता[illegible] का आशीर्वाद देगी और स्वयं दुःख भूल[illegible] होकर स्वर्ग में चली जायगी।"

राजा ने वैसा ही किया। पन्द्रहवें दि[illegible] सन्तान होने की आशीर्वाद ले घर लौट आ[illegible]

लेखक, श्रीयुत राधारमण जोशी 'रमण'

[illegible] कुछ प्रश्न दिये जाते हैं। उनके उत्तर निकालिए और २१३ पृष्ठों में दिये गये उत्तरों से अपने [illegible]मिलान कीजिए—

[illegible] दुनिया में सबसे बड़ी चीज़ कौन-सी है?

[illegible] पशुओं में हमेशा कौन खाता रहता है?

[illegible] जीवधारी कब मरता है?

[illegible] ऐसा कौन-सा कीड़ा है जो दूसरे के घर [illegible] पर बना लेता है?

[illegible] यदि एक मनुष्य पृथ्वी की परिक्रमा [illegible] लिए उत्तर दिशा से चले तो वह अपने [illegible] आने के लिए कौन-सी दिशा में लौटेगा?

[illegible] पञ्च तत्त्वों में ऐसा कौन-सा तत्त्व है जो [illegible] रहता है?

[illegible] ऐसा कौन-सा उड़नेवाला जीव है जो अपने [illegible] आधे वज़न के बराबर आहार करता है?

[illegible] प्रश्न पत्ते किसको देते हैं?

९—ऐसा कौन-सा उड़नेवाला जीव है जो पृथ्वी पर का पानी नहीं पीता है?

१०—ऐसा कौन-सा जीव है जो रात को उड़े तो पक्षी और यदि दिन को चले तो पशु बन जाता है?

११—एक मनुष्य और एक औरत है। उस औरत की सास उस मनुष्य की सास की लड़की है। तो बताओ वह मनुष्य और वह औरत कौन है।

१२—क्या वर्षा-ऋतु के अलावा भी पानी बरसता है?

१३—संसार में सच्चा जादू कौन-सा है?

१४—अपराधियों को दण्ड कौन देता है व उनको मुक्त कौन करता है?

१५—ऐसा कौन-सा फूल है जो पानी में रहते हुए भी पानी से ऊपर रहता है?

चिड़िया

लेखिका, श्री प्रमीला श्रीवास्तव

[illegible] में चह चूँ करके चिड़ियाँ
प्रातः हमें जगाती हैं।
[illegible] निकलने से ही पहले
वे नभ में उड़ जाती हैं॥
[illegible] पर घोंसले बना कर
बच्चों के सँग रहती हैं।
[illegible] पत्तियों के सँग करतीं
फूलों के सँग हँसती हैं॥
[illegible] उनको प्यास सताती
नदी तीर जा पीती पानी।
जब है उनको भूख सताती
वन के फल खातीं मनमानी॥
नहीं किसी को दुखं देती हैं
नहीं किसी का कुछ लेती हैं।
सदा ख़ुशी अपने में रह कर
हमको भी ख़ुश कर देती हैं॥
आज़ादी में ख़ुश रहती हैं,
पेड़ों पर, नभ में औ' वन में।
वह हैं कैसे जीवित जिनके
चाह न आज़ादी की मन में॥

बहादुर लड़का

लेखक, श्रीयुत गोवर्धन दास मेहता

किसी समय एक ग़रीब गड़रिया रहता था। वह होशियार शिकारी, अच्छा तीरन्दाज़ और बलशाली आदमी था। जहाँ वह रहता था वहाँ एक भी ऐसा मनुष्य नहीं था जो इतनी जल्दी किसी पहाड़ पर चढ़ सके, इतनी होशियारी से किसी पहाड़ी हिरण का पीछा कर सके, इतनी तेज़ी से दौड़ सके या इतना सीधा निशाना लगा सके, जितना कि वह। वह कठिन परिश्रम करनेवाला पुरुष था और लोग उसका आदर करते थे। संसार में उसका सबसे प्यारा एक दस वर्ष का लड़का था, जिसकी माता उसे जन्म देते ही इस संसार से चल बसी थी।

जहाँ भी वह जाता था, उसका लड़का उसके साथ रहता था। वह बकरियों के झुण्ड की निगरानी करने में उसकी सहायता करता था, शिकार के समय उसके पीछे चलता था, निशाना लगाते हुए उसे ध्यानपूर्वक देखता था और पहाड़ी प्रदेश के अपने घर से नीचे उतर कर पास के नगर में जाते समय उसके साथ जाता था। इस नगर का राजा एक निर्दयी, क्रोधी, कठोर और अन्यायी था।

एक दिन जब वह कुछ आवश्यक चीज़ों को ख़रीदने के लिए शहर आया तो उसने बाज़ार के चौराहे पर एक लम्बी लकड़ी गड़ी हुई देखी, जिसके सिरे पर एक मनुष्य का टोप लटका हुआ था। उस लकड़ी के पास शहर का राजा, नौकरों और सिपाहियों के बीच में अपने घोड़े पर बैठा हुआ था। जो उस रास्ते से गुज़रता था, उसे यह आज्ञा दी जाती थी कि वह उस टोप का सम्मान करने के लिए भूमि पर अपने घुटने टेक दे।

जब वह गड़रिया उधर से निकला तो उसने उसको सलाम न किया और आगे बढ़ गया। यह देखकर राजा ने क्रोध में आकर कहा—"[illegible] को यहाँ लाओ। वह मेरे टोप के सामने [illegible] मरे।" सिपाहियों ने गड़रिया को घसीटकर [illegible] के सामने खड़ा कर दिया। किन्तु, उसने [illegible] मानने से इन्कार कर दिया। उसने कहा [illegible] राजा को तो सलाम कर सकता हूँ, लेकिन [illegible] मनुष्य अथवा उसके टोप के सामने झुकने को [illegible] नहीं हूँ। मैं पूजा के समय केवल परमात्मा के [illegible] घुटने टेकता हूँ और किसी के नहीं। तुम [illegible] प्राणों को ले सकते हो, पर मेरी आत्मा को [illegible]

राजा ने आज्ञा दी—"यह बदमाश मेरी [illegible] को नहीं मानता। इसे मार डालो। यदि [illegible] कहता हूँ कि वह मेरे टोप का सम्मान करे तो [illegible] ऐसा करना पड़ेगा।"

सिपाही गड़रिये का वध करने ही वाले [illegible] राजा के चेहरे पर हँसी दौड़ गई और उस[illegible] सिपाहियों से रुकने को कहा। उसने कहा—"ये [illegible] लोग अपने आपको तीर का निशाना लगाने में [illegible] चतुर समझते हैं। उसके लड़के को पकड़कर [illegible] वाले पेड़ के नीचे खड़ा कर दो। उसके सि[र पर] एक सेब रख दो और उस आदमी से पचास [illegible] की दूरी से निशाना लगाने को कहो। यदि [illegible] असफल हो तो उसको और उसके लड़के को [illegible] मार डालो। यदि वह सफल हो तो दोनों [को] छोड़ दो।"

उसने ऐसी आज्ञा यह समझ कर दी [illegible] यदि गड़रिया इस प्रकार के प्रयत्न में अ[illegible] लड़के को मार डालेगा। यदि उसने इन्कार या निशाना चूक गया तो उसे मौत के घाट [उतार] दिया जायेगा।

गड़रिया अपने कानों पर कठिनाई से विश्वास [illegible] सका, कोई भी इतना निर्दय नहीं हो सकता [illegible] वह किसी आदमी को अपने ही लड़के को मार [illegible] की आज्ञा दे।

गड़रिये ने कहा—"अपराध तो मैंने किया है, [illegible] सज़ा दीजिए और इस लड़के को छोड़ [दीजि]ए। इसने आपकी क्या हानि की है?"

राजा ने उत्तर दिया—"निशाना लगाओ या [illegible] और तुम दोनों मरो।"

गड़रिये ने पेड़ के नीचे खड़े हुए अपने लड़के [को] इस आशा से देखा कि वह भय के कारण अधमरा हो गया होगा, रो रहा होगा अथवा दया [के] लिए प्रार्थना कर रहा होगा। पर वह एकदम [illegible] खड़ा था और अपने पिता के निशाने की बाट [देख] रहा था। पिता का हृदय यह सोचकर गर्व [से भ]र गया कि उसका लड़का डरा नहीं। पर ज्यों ही उसने निशाना लगाने की बात सोची, उसके हाथ रुक गये।

तब उस बहादुर लड़के ने कहा—"पिता! सीधा निशाना लगाओ और हम दोनों को बचाओ। मैं बिलकुल [illegible] खड़ा रहूँगा और तुम मेरे सिर पर रखे हुए सेब को नीचे गिरा दोगे।"

पिता ने उत्तर दिया—"ईश्वर तेरी रक्षा [करे]। तेरी हिम्मत मेरी हिम्मत को भी लौटा लाई है।"

उसने अपने धनुष को नीचे झुकाया, निशाना साधा और तीर को छोड़ दिया। लड़के के सिर पर रखा हुआ सेब दो टुकड़े हो भूमि पर गिर पड़ा और तीर पीछे लगे हुए पेड़ की छाल में घुस गया। लड़का अपने स्थान से तनिक भी नहीं हिला।

राजा ने कहा—"शाबाश! मैं अपने वचन का पालन करूँगा। अब तुम दोनों जा सकते हो।"

शीर्षक प्रश्नों के उत्तर

१—तन्दुरुस्ती।

२—घोड़ा।

३—जब काल आता है।

४—सर्प। चूहा अपना बिल खोद-खोदकर मर [जाता] है और सर्प उस बिल को अपना घर बना [लेता] है।

५—उत्तर दिशा में ही लौटेगा; क्योंकि पृथ्वी [गोल] है।

६—हवा।

७—मक्खी। मक्खी अपने वज़न से आधे [illegible] के बराबर आहार करती है।

८—वसन्त-ऋतु को।

९—पपीहा। पपीहा नदी, समुद्र, तालाब, आदि जलाशयों का पानी नहीं पीता है; क्योंकि [illegible] पृथ्वी पर होते हैं। पपीहा स्वाति नक्षत्र के जल के सिवाय और किसी भी नक्षत्र का जल नहीं पीता है।

१०—चमगादड़।

११—वह मनुष्य उस औरत का ससुर है। मनुष्य का नाम महेश है। उस औरत का नाम रमा है। रमा की सास पुष्पा है। ऊषा महेश की सास तथा पुष्पा की माता है। इसलिए पुष्पा महेश की पत्नी हुई। अर्थात् महेश (मनुष्य) रमा (उस औरत) का ससुर हुआ।

१२—हाँ, वर्षा-ऋतु के अलावा भी पानी बरसता है जिसे मावठ कहते हैं।

१३—सङ्गीत।

१४—क़ानून।

१५—कमल का फूल। पानी के कम होने पर भी कमल का फूल पानी की तरह घटता नहीं है बल्कि वह सदा पानी से ऊपर रहता है।

जाना है। राजकुमार ने आकर अपने मित्र को शर्त सुना दी। तब वह बहुत प्रसन्न हुआ और कहने लगा कि आज अहो-भाग्य है कि मुझे भर पेट भोजन मिल रहा है। वह तुरन्त कोठे में गया और सब घी चट कर गया। अब राजकुमार रानी के पास गया और कहा कि आपकी दूसरी शर्त पूरी हो गई। रानी ने जाकर देखा तो बात सही थी। घी के सब पीपे ख़ाली पड़े थे। अब राजकुमार ने रानी से तीसरी शर्त पूछी। रानी ने कहा कि एक तेल से भरी खौलती कड़ाही में एक घंटा रहना।

रानी मन ही मन बहुत प्रसन्न हुई कि इस बार ये अवश्य चूकेंगे। पर उसका यह ख़याल ग़लत निकला।

इधर राजकुमार अपने दोस्त के पास गया [illegible] शर्त कही। वह बड़ा प्रसन्न हुआ। [illegible] अच्छी बात है। इससे मेरी सर्दी दूर हो जायगी। वह तुरन्त रानी के सामने एक तेल के खौलते [illegible] पड़ा (जिसे रानी ने पहले से तैयार कर रक्खा था) [illegible] लगा उसमें ख़ूब नहाने। वह उसमें इतना प्रफुल्लित [illegible] लाई पड़ा जितना ख़ुश वह कभी नहीं दिखलाई पड़ा [illegible] कहने लगा यह तो कुछ गर्म नहीं है। यह देख [illegible] बड़ा ताज्जुब हुआ एक घंटे की जगह दो घंटे [illegible] रहा। रानी की तीनों शर्तें पूरी हो गईं और [illegible] राजकुमारी का विवाह राजकुमार के साथ हो गया।

मेरा भण्डार

लेखक, श्रीयुत स्वर्णसहोदर

मेरा अलबेला भण्डार।
चीज़ें भरीं हज़ार-हज़ार ॥

[१]

ताक पटौटी, बस्ते, खीसे, पेटी और न जाने,
घर में जगह-जगह हैं अपने कितने खुले ख़ज़ाने।
मुश्किल पाना पारावार,
मेरा अलबेला भण्डार।

[२]

मैया जोड़े सूपा, दौरी, चूल्हा, चक्की, कुँड़िया,
मैं जोड़ूँ चमकीले कङ्कड़, टूटे शीशे, गुड़िया।
अपना यह ही है संसार,
मेरा अलबेला भण्डार।

[३]

बहन सहेजे कङ्घी, चूड़ी, माला, गुरिया, छूटे,
खड़िया, गौराथान, गेंद मैं जोड़ूँ लाई, फूटे।
मेरा अटपट कारोबार,
मेरा अलबेला भण्डार।

[४]

भरी किताबों से रहती है भैया की अलमारी,
इधर सीप, गुल्ली, डण्डों से भरी दुरौंधें सारी।
कोई चीज़ें नहीं बेकार,
मेरा अलबेला भण्डार।

[५]

दादी पेटी में रखती है कठले, ईंगुर, [illegible]
मैं धरता हूँ ढूँढ़-ढूँढ़ रद्दी काग़ज़ की [illegible]
उनमें मिलता मजा अपार,
मेरा अलबेला भण्डार।

[६]

दादा बटुवा भरें सुपारी, लौंग, खैर, सुरती [illegible]
कौड़ी, गोली, पेंसिल से मैं भरूँ लबालब [illegible]
मेरे ये ही हैं आधार,
मेरा अलबेला भण्डार।

[७]

पिता तिजोरी में भर रखते रुपये, चाँदी, सोना,
मैं भरता अपनी चीज़ों से घर का कोना-कोना।
मेरा है उन सब पर प्यार,
मेरा अलबेला भण्डार।

[८]

भरता आसमान तारों से, फूलों से फुलवारी,
दुनिया भर की चीज़ों से, भरती सन्दूक़ हमारी।
रखता रोज़ सँवार-सँवार,
मेरा अलबेला भण्डार।

छुट्टी का घन्टा

जाड़े की ठंडी हवा

लेखिका, श्रीमती प्रेमलता वर्मा

"जाड़े की ठण्डी हवा सुखद
मुझको है बुला रही बाहर।
बाहर खेलूँगा, कूदूँगा
[illegible] धरा हुआ घर के भीतर।"
—यह कह मुन्नू बाहर निकला
तलुवे उसके हो गये लाल
तब ठिठुर उँगलियाँ बोल उठीं—
"क्यों कष्ट दे रहे हो कराल।"
"हम गली जा रहीं।" रो बोलीं
[illegible] सभी उँगलियाँ नवा माथ;
"हम हुए सुन्न।" बोले चुपके
[illegible] बड़े अँगूठे साथ-साथ।
"जाड़े के मारे तो मेरा
हो रहा अभी से बुरा हाल;"
बोले मुन्नू के कान तुरत
जाड़े के कारण हुए लाल।
सर्दी से ठिठुर नाक बोली,—
"क्यों मुझे कर रहे परेशान?
[illegible] फ़ौरन घर में बैठो
[illegible] देने को जा रहे जान।"
हाथों की उँगली मुट्ठी बन
पहुँचीं तब कपड़ों के नीचे
कुछ गरमाकर, कुछ समझाकर
बोलीं वे यों आँखें मींचे—

"हम नहीं साथ में खेलेंगी
मुन्नू जाड़े में जा बाहर;
हमको तो अच्छा लगता है
बस अपने कमरे के भीतर।"
किट-किट कर दाँत सभी बोले—
"मुन्नू, मत जा घर के बाहर।
हम टूट जायँगे आपस में
जाड़े के मारे यों लड़कर।"
पर मुन्नू उनकी सुन न सका,
झट दौड़ आ गया उपवन में;
उसको सर्दी का क्या भय था
उत्साह भरा था जब मन में।
वह लगा खेलने फूलों से
घासों के मोती बिखराये,
छोटी चिड़ियाँ, तितली, भौंरे
थे सभी खेलने सँग आये।
मुन्नू सर्दी को भूल गया
गर्मी उसके तन में आई;
वह लगा खेलने ख़ुश होकर
चिल्लाकर "अब गर्मी आई।"
मुन्नू बोला मैं जान गया—
"जाड़े से डर का नहीं काम;
खेलो, कूदो, गर्मी आये
फिर जाड़े का है कहाँ नाम।"